योगेश्वर प्रभु रामलाल करुणा कृपा लीला

महाप्रभु भगवान सदाशिव जी के चरणों में आत्म निवेदन

तेरे ऊँचे पहाड़ बड़े, मैं चढ़ नहीं सकता प्रभु। मेरे पैरों में छाले पड़े, मैं चल नहीं सकता प्रभु॥ तेरे....
तेरे ऊँचे पहाड़ों पे, है बार्फों के तोदे पड़े। हवा घर में ही ठण्डी लगे, मैं चल नहीं सकता प्रभु॥ तेरे....
यह तो नाव पुरानी है, कि छेदों से छलनी हुई। पानी देता है धक्के कड़े, मैं चल नहीं सकता प्रभु॥ तेरे....
कौन जल भर के लायेगा, व बर्फों में लेटेगा कौन। हम बीच मैदान पड़े, मैं चल नहीं सकता प्रभु॥ तेरे....
मिरले शमशो कमल नयन दो, प्रभुजी मैं देखूंगा कब। हाये तुम से परे जा पड़े, मैं चल नहीं सकता प्रभु॥ तेरे....
'रामलाल' पै कृपा करो, हे शिव शम्भु कैलाश नाथ। पास अपने बुला लो मुझे, मैं चल नहीं सकता प्रभु॥ तेरे....

फोटो

महर्षि काकभुशुंडि द्वारा लिखित भविष्यवाणी

प्रभु श्री रामलाल जी महाराज की वंशावली

श्री प्रभु राम लाल जी महाराज की जन्म कुण्डली व ग्रह स्थिति

विनम्र निवेदन

अनुक्रमणिका

क्रमांक	शीर्षक
A1 से A2	विनम्र निवेदन
B1 से B4	प्रभु श्री राम लाल जी महाराज की वंशावली
C1 से C2	प्रभु श्री राम लाल जी की जन्म कुण्डली व ग्रह स्थिति
D1	महर्षि काकभुशुंडि जी द्वारा लिखित भविष्यवाणी

I. श्री प्रभु करुणा कृपा से अवलम्बित् बाल्यावस्था

1. भूमिका
2. योगेश्वर प्रभु श्री रामलाल जी महाराज के गृहस्थी रूप में दर्शन
3. माता जी का आकाशवाणी को सुनना
4. माता जी को भगवान् का साक्षात्कार
5. रघुनन्दन के मन मेंश्रद्धा और विश्वास का प्रकट होना
6. बालक बलदेव (आयु 13-14 वर्ष) को प्रभू जी का साक्षात्कार
7. शीला शर्मा निवासी 38-आर. माडलटाऊन होश्यारपुर पर प्रभु कृपा
8. ऋषीराम पेन्टर द्वारा प्रभुरामलाल जी के जटाधारी स्वरूप का निर्माण
9. फिरोज़पुर के आर्यसमाज मन्दिर में श्री रघुवीर जी की दशमद्वार समाधि और प्रो. चमन लाल जी का योग पर प्रवचन
10. श्री रघुवीर जी को महाप्रभु भगवान् सदाशिव जी का साक्षात्कार
11. श्री महाप्रभु जी का रघुवीर जी का रूप बना कर पैरेड़ करना
12. 'रघुनन्दन' का सिकन्दराबाद जाने का पक्का इरादा
13. दीक्षा की आज्ञा
14. होशियारपुर आश्रम के नल में श्री गंगा जी का प्रकट होना (ई. सन् 1954)
15. ऋषिराम पेटर के घर से श्री प्रभु रामलाल जी महाराज के जटाधारी स्वरूप को लाकर आश्रम में विराजमान करना (ई. सन् 1954)
16. रघुनन्दन की श्री महाप्रभु भगवान् सदाशिव जी महाराज द्वारा दीक्षा
17. श्री रघुवीर जी की दशमद्वार समाधि की अद्‌भुत लीला
18. शीला के वर की तलाश
19. शीला बहन का शगुन और विवाह
20 'रघुनन्दन' की दोबारा मुक्तसर के कालेज में जाने की तैयारी
21. कँवर हरबंसलाल जी का ध्यान अनुभव
22. श्रीकेवलकृष्ण मरवाहा के माता ज्ञानदेवी का स्वप्न अनुभव
23. श्री रघुवीर जी का मुक्तसर में आगमन
24. सत्संग में आई एक वृद्धा स्त्री पर प्रभु कृपा

25. रघुनन्दन की एम.एल.एन. नेशनल कालेज यमुनानगर में नियुक्ति
26. लुधियाने वाले सरदार जी पर अनोखी प्रभु कृपा (ई. सन् 1956)
27. व्यास पूजा पर माता जी के साथ हुई घटना
28. जगाधरी वाले जनक दुलारी मित्तल की प्रभु दीक्षा की घटना
29. श्री रघुवीर जी का प्रेम जी के साथ विवाह (ई सन्-1956)
30. माता चिन्तपूर्णि की ओर पद यात्रा
31. नेति क्रिया द्वारा कई वर्षों के जुकाम में पूरा लाभ
32. पिता जी की अन्तिम यात्रा पर प्रभु अनुग्रह (ई सन् 1957)
33. अमृतसर में गुरुमाता सुभद्रा जी के दर्शन और आशीर्वाद का लाभ

II.श्री प्रभु करुणा कृपा अवलम्बित ग्रहस्थ-जीवन

34. 'रघुनन्दन' का विवाह संस्कार (ई. सन् 1957)
35. सरदार जी का दिव्य अनुभव
36. बालक धीरेन्द्र का जन्म
37. गौरमिंट कालेज चन्डीगढ़ में सर्विस (अगस्त-1962)
38. मनोरमा के अद्‌भुत प्रभु कृपा रूपी दिव्य अनुभव: (मनोरमा सूद के शब्दों में)
39. राम नवमी उत्सव शिमला की अनोखी प्रभु घटना
40. श्री प्रभु रामलाल जी महाराज के जन्मस्थान के दर्शन
41. चण्डीगढ़ के सैक्टर 15 घर में चोरों द्वारा की गई चोरी की अद्‌भूत घटना (ई सन् 1967)
42. प्रिंसिपल डा० गोवर्धन लाल वक्षी के साथ हुई घटना
43. मनोरमा जी द्वारा प्रभु प्रतिमा का निर्माण (ई सन् 1968)
44. श्री स्वामी जी को प्रभु आज्ञा
45. एक अनजाने सरदार-कारपेंटर पर अनोखी करुणा कृपा
46. योग साधन आश्रम में श्री राम नवमी उत्सव ई. सन् 1969
47. महाप्रभु भगवान सदा शिव जी महाराज का सन्देश
48. 'रघुनन्दन' के श्वास रोग संस्कार का भुगतान (ई सन् 1969)
49. कालेज के मकेनिक सुशील की अनोखी घटना
50. मनोरमा की उच्चारण समाधि
51. श्री चूनी लाल महाजन के साथ हुई दिव्य घटना
52. मनोरमा जी की फिर अस्पताल में उच्चारण समाधि
53. मिलटरी अस्पताल जालंधर केन्ट की अनोखी घटना
54. महाप्रभु भगवान सदा शिव जी की धूनी के प्रशाद की प्राप्ति

III.श्री प्रभु करुणा कृपा अवलम्बित अनुभवी जीवन

55. देहली में हुई उमेश कपूर और मीरा खन्ना की शादी की दिव्य घटना :-
56. प्रधान योगाचारिय श्री चन्द्रमोहन जी महाराज के आगमन पर प्रभु लीला :-
57. सत्संग में श्री प्रभु जी की दिव्य लीला :-
58. सत्संग में हुई दिव्य प्रभुलीला का तत्व :-
59. रात में मनोरमा जी की स्वप्न समाधि :-
60. स्वामी श्री नरसिंह मूर्ति जी महाराज का आगमन:-
61. तीसरे बालक के संस्कार पर प्रभु कृपा :-
62. हिमालय के एक बड़े तेजस्वी महात्मा का संस्कार :-
63. दिव्य समाधि का रहस्य :-
64. डा० मिसिज भारगव द्वारा मनोरमा का इलाज :-
65. गवर्नमैंट होसपिटल सैक्टर-16 की अद्भुत प्रभु लीला :-
66. मनोरमा के ओपरेशन पर अनोखी प्रभु लीला ई सन् 1972 :-
67. श्री प्रभुजी की बेटी का शुभ जन्म :-
68. पूर्व जन्मों के संस्कारों की प्रबलता :-
69. श्री प्रभु जी का अपनी प्यारी बेटी को बीमार होने से बचाना :-
70. श्री प्रभु जी की प्यारी बेटी के प्यारे बोल: ''प्रभु जी मोरे आवो, प्रभु जी जटाधारी''
71. श्री रघुवीर जी द्वारा छोटी बेटी का नामकरण संस्कार :-
72. श्री प्रभु राम लाल जी महाराज द्वारा दीक्षित श्री नरसिंह मूर्ति जी महाराज का 401सेक्टर-22 के घर में पदार्पण :-
73. मेरे मित्र कैलाश जेरथ को प्रभु साक्षात्कार :-
74. योगिनी बेटी के डाक्टर बनने की भविष्यवाणी :-

IV.श्री प्रभु करुणा कृपा अवलम्बित चिन्ता-मुक्त जीवन

75. 401/22 में श्री प्रभु रामलाल महाराज जी के श्री चरणों में हर रविवार को सत्संग करने की आज्ञा
76. #402/22 चण्डीगढ़ के रविवार सत्संग की कुछ दिव्य घटनाएं
77. मिसिज़ शर्मा 425/22 सैक्टर वासी को प्रभु दर्शन
78. सरदारनी जसवन्त कौर #3295 सैक्टर - 23D चण्डीगढ़ से सम्बन्धित प्रभु घटनाएं
79. भक्त मुनीलाल डौकूमेनटेशन सेन्टर सैक्टर-17 चण्डीगढ़ वालों के साथ हुई प्रभु घटना
80. बीबी जसवन्त कौर को प्रशाद न चढ़ाने का आदेश
81. सरदारनी जसवन्त कौर पर अकारण प्रभु कृपा
82. श्री प्रभु जी का मनोरमा जी द्वारा खाना खाना (ई सन् 1977)
83. मनोरमा के मासी जी को भगवान कृष्ण के दर्शन और अधरंग रोग से निजात
84. प्रभु कृपा से एक नये भजन की प्राप्ति
85. श्री प्रभुकृपा द्वारा बीमारी के संस्कार का निपटारा

86. श्री रघुवीर जी का आधी रात को अपनी बेटी अनुपम द्वारा सिगरेट सैक्टर-22 चौंक से मंगवाना
87. पंचकूला में मकान बनाने की आज्ञा
88. श्री प्रभु जी द्वारा अनुपम की शंका का समाधान
89. रेल द्वारा भारत दर्शन यात्रा (21st मई 1987 से 20th जुलाई 1987)
90. भारत दर्शन यात्रा में श्री प्रभु जी की करुणा कृपा लीलाएँ
91. बेटी अनुपम का शगुन संस्कार
92. श्री प्रभु जी की बेटी अनुपम का शुभ विवाह
93. मिस जोंजीत किमजींग का थाईलैंड से भारत आकर पंजाब यूनिवर्सिटी चण्डीगढ़ में हायर स्टडिज करना
94. प्रारब्ध का खेल
95. श्री प्रभु जी के बेटे धीरेन्द्र को आशीर्वाद

V.श्री प्रभु करुणा कृपा अवलम्वित संतुष्ट जीवन

96. श्री रघुवीर जी द्वारा बेटी जोंजीत किमजींग सुपुत्री श्री हींग किमजींग को प्रेम भरा आशीर्वाद
97. थाईलैंड में धीरेन्द्र बेटे के साथ हुई एक अनोखी घटना
98. पंचकूले के 281/17 मकान का उद्घाटन, और धीरेन्द्र बेटे की शादी की रिसैपशन
99. दहली वाले चौधरी साहिब के घर में पुत्ररत्न की प्राप्ति पर अनोखी प्रभु घटना
100. प्रभु कृपा से योगिनी बेटी का डाक्टर बनना
101. श्री प्रभु जी की प्यारी बेटी आराधना का जन्म
102. डाक्टर बेटी योगिनी के पंचकूला क्लीनिक का उद्घाटन
103. श्री प्रभु जी की बेटी योगिनी की शादी
104. श्री प्रभु जी का 'रघुनन्दन' को बन्धन-मुक्त करना
105. श्री प्रभु जी की कृपा द्वारा 'मनोरमा' के संस्कारों का भुगतान

VI.योगेश्वर प्रभु श्री रामलाल जी महाराज की अद्भुत दिव्य-जीवन गाथा

106. प्राक्कथन
107. अद्भुत दिव्य-जीवन गाथा (श्रीमद्भगवद् गीता सहित) अडीशन-2
108. भगवान् का साक्षात्कार कैसे हो ?

ऊँ नमो श्री रामलाल प्रभु जी परब्रह्मणे नमः

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्

विनम्र निवेदन

योगेश्वर प्रभु श्री रामलाल जी महाराज के सान्निध्य के कृपा प्रसाद के रूप में प्राप्त आध्यात्मिक अनुभवों को लिखने की प्रेरणा मिली, केवल इस लिए नहीं कि इन दिव्य घटनाओं तथा प्रबुद्ध चमत्कारों के वर्णन से शरणागत भक्तों को कोई विशेष आह्लाद प्राप्त होगा, अपितु इस लिए भी क्योंकि इन अद्‌भुत दिव्य अनुभवों को जानने से पाठकों के हृदय में आध्यात्मिक उद्‌बोधन हो सकेगा।

आज यह शरीर 86 वर्ष की आयु पार कर चुका है और सपरिवार शारीरिक, मानसिक, भौतिक तथा सामाजिक दृष्टि से सम्पन्न है। रघुनन्दन जो कुछ भी आज है और जो कुछ भी उस ने आज तक की ज़िन्दगी में प्राप्त किया है, यह सब मेरे परमपूज्य श्री सद्‌गुरुदेव महाप्रभु महाराज जी की अनुकम्पा का फल है। ये सारे आश्चर्यजनक दिव्य अनुभव हमारे सूद परिवार के सर्वेसर्वा श्री रघुवीर राज जी की अध्यक्षता में ही हुए। आध्यात्मिक जीवन की अनेकानेक घटनाओं के साथ श्री रघुवीर राज जी का घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। वे अनन्य श्री महाप्रभु चरणानुरागी, दिव्य दृष्टि प्राप्त, साधारण अवस्था में रहने वाले, उच्चकोटि के महापुरुष एवं साधक थे। ई सन 1953–55 में अकसर उन की दशम द्वार की समाधि लग जाती थी जो कि कई कई दिनों तक योग साधन आश्रम मॉडल टॉउन नं० 3, होशियारपुर में लगी रहती थीं। समाधि–काल में श्री प्रभु जी द्वारा प्राप्त दिव्य आदेशों और घटनाओं को आदरणीय प्रोफेसर श्री चमन लाल जी कपूर दिन रात लिखते रहते थे जो हम सब की अमूल्य धरोहर हैं। इन्हे पढ़ कर तथा मनन करने से जन समाज भी प्रभु भक्ति की प्रेरणा प्राप्त कर सकेगा।

अब आप उस शिशु की कल्पना करें जिस की माता उसे जन्म के बाइसवें दिन छोड़ कर परलोक सिधार गईं। विमाता का प्यार माँ के प्यार का स्तुंत्य विकल्प बना जो ऐसा आमतौर पर नहीं होता। यह सब तो श्री प्रभु जी की अपार कृपा के कारण ही सम्भव हो पाया। मेरी विमाता सत्संगमयी, स्नेहमयी और प्रभु भक्तिनी थीं। उन्होंने मेरे बचपन से ही मुझ पर अपने अद्‌भुत दिव्य अनुभवों की अमिट छाप छोड़ी। पूज्य पिता जी भी सतत् भक्तिलीन रहने वाले सरल हृदय के प्राणी थे जिन के अन्त समय का दिव्य अनुभव प्रभु–कृपा का प्रतीक बना। यह तो मात्र दिग्दर्शन है कि मानव–जीवन में श्री प्रभु कृपा रूपी योग क्षेम के आध्यात्मिक चमत्कार कहां कहां और किस हद तक प्रकट हो सकते हैं। यह ई–पुस्तिका ''**योगेश्वर प्रभु रामलाल करुणा कृपा लीला**'' ऐसे ही हमारे आध्यात्मिक अनुभवों का संग्रह है जो Websit : www.divyaleela.com & www.sriramalenze.com पर डाऊनलोड कर सकते हैं।

इस ई–पुस्तिका में अनेकानेक प्रसंग दिए हैं जो 'रघुनन्दन' की आँखों के सामने घटित हुए हैं। दैविक शक्ति और दिव्य तेज कितना प्रबल एवं अकाट्य होता है..........यह ई–पुस्तिका इसी का प्रमाण है–चाहे श्वास की लाइलाज बीमारी हो, या मूत्राशय की पथरी की समस्या हो या अन्य कोई भी दु:खद स्थिति हो! ....मेरे

जीवन-आधार महाप्रभु जी ने स्वयं हाथ दे कर 'रघुनन्दन' की रक्षा की, बीमारिओं, अस्वस्थताओं या कष्टों को अपनी अपार कृपा से दूर किया। फलत: श्री महाप्रभु जी के प्रति मेरी अटूट श्रद्धा एवं विश्वास द्विगुणित होता गया।

8 जून 1957 ई को 'रघुनन्दन' का विवाह देहली निवासी श्री मगनविहारी लाल जी चीफ ईंजीनीयर की सुशिक्षिता एवं सुशीला कन्या मनोरमा जी से हुआ जो नाम से ही नहीं कर्म से भी सच्ची मनोरमा है। वह प्रभु चरण प्राप्त पवित्र आत्मा हैं। उन के अपने भी अनेकों आध्यात्मिक दिव्य अनुभव हैं जिन का वर्णन उन्ही के शब्दों में इस ई-पुस्तिका में उपलब्ध है।

श्री रघुवीर राज जी के मार्ग दर्शन तथा प्रभुकृपा से उन के पुत्र और पुत्रियाँ आदि भी जीवन की सीढ़ीओं पर सफलतापूर्वक चढ़ते रहे हैं, अपनी व्यवसायिक योग्यताओं और प्रभु भक्ति के संस्कारों द्वारा उन्होंने समाज में व अपने घर परिवारों में सम्मानजनक स्थान प्राप्त किया है। उन की शिक्षा और विवाह आदि श्री प्रभु अनुकम्पा से स्वत: होते चले गये। वह सब योगेश्वर प्रभु श्री रामलाल जी महाराज की कृपा से अपने अपने परिवारों में अपने अपने बच्चों के साथ सुखी जीवन बिता रहे हैं।

योगेश्वर प्रभु श्री रामलाल जी महाराज की कृपा केवल सूद परिवार पर ही हो रही है ऐसा नहीं है। इस सत्य को जानने के लिए आप ''**अद्‌भुत दिव्य जीवन गाथा**'' को पढ़ कर देखिए कैसे उन के सभी भक्त उन्हें विभिन्न रूपों में अनुभव करते रहे हैं।

श्री प्रभु चरणों में आए साधारण से साधारण मानव चाहे वह अनजान सरदार बढ़ेई हो, सुशील मकैनिक हो, पेंटर स्वामी हो, बीबी जसवन्त कौर हो, चूनीलाल महाजन हो अथवा उमेश कपूर और मीरा खन्ना का विवाह संस्कार हो, पंचकूला में मकान बनाने की घटना हो व कठोर से कठोर असाध्य रोगों का भी उपचार श्री प्रभु कृपा से हो गया। असंख्य प्रेमी और भक्त ''**जीवन तत्त्व साधनों**'' द्वारा कष्ट मुक्त हुए इन सब का विवरण दे पाना संभव नहीं था फिर भी स्मरण शक्ति और प्रभु अनुग्रह के बल पर बहुत सी घटनाओं का उल्लेख किया है।

यहां यह स्पष्ट किया जाता है कि 'रघुनन्दन' ने श्री प्रभु रामलाल जी महाराज की आपार कृपा को जिस रूप में अनुभव किया उसी को आप के समक्ष रखा जा रहा है। फिर भी आप को अगर इन सच्ची घटनाओं के समझने में कोई कठिनाई हो तो क्षमा करें। श्री प्रभु चरणों में प्रार्थना है कि उन की कृपा आप सब पर बनी रहे।

योगेश्वर आप की कृपा है सब, आप का आशीर्वाद है।
प्रभु आप को अर्पित हो यह सब, आप का प्रसाद है।।

कृपाकांक्षी
रघुनन्दन

Address : Prof. R.L. Sood MSc.(Hons.) PES (Retd.) Thailand Email- Sood@sriramalenze.com

सर्वाधिकार सुरक्षित **प्रथम संस्करण: रामनवमी पर्व मंदिर शिलान्यास दिनांक 04 अप्रैल 2017**
प्रकाशक : योगेश्वर प्रभु श्री रामलाल जन्मस्थान कूचा भाई संत सिंह, अमृतसर (पंजाब)
फोन: 0183-2532058, मोबाईल: +91 9781207326

ऊँ नमो श्री रामलाल प्रभु जी परब्रह्मणे नम:

प्रभु श्री रामलाल जी महाराज की वंशावली

गोत्र	:	मौद्गल्य	सूत्र	:	कात्यायनी
प्रवर मुख्य	:	अंगीरस ऋषि	वंश	:	जोशी (सारस्वत ब्राह्मण)
शाखा	:	माध्यन्दिनी	पूर्वज	:	पं० हरिराम

पांचवी पीढ़ी : पं० चढ़त राम

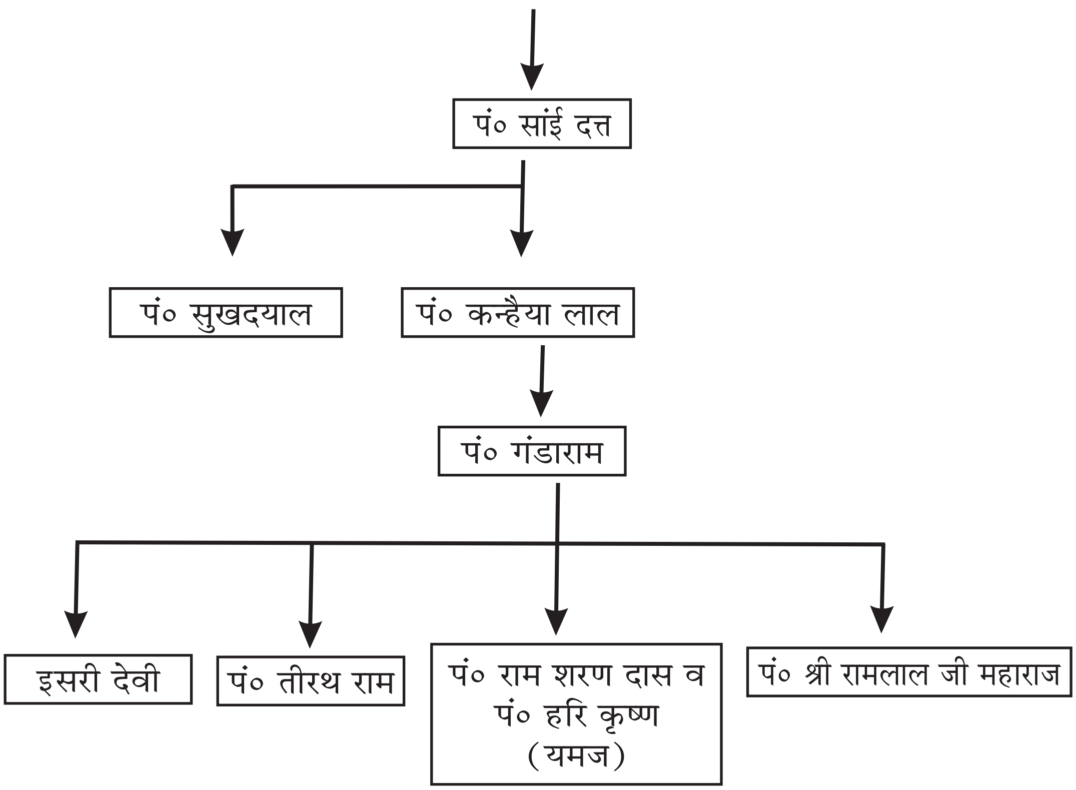

प्राप्त तथ्यों के अनुसार प्रभु जी के पूर्वज पं० हरिराम जी का निवास स्थान जालन्धर जिला के ''त्रिहारा'' नामक ग्राम में था। बाद में सतलुज नदी की बाढ़ के कारण इन्हें जिला लाहौर के ''नौशहरा'' ग्राम में जाकर निवास करना पड़ा। इनकी पांचवी पीढ़ी में पंडित चढ़तराम जी ब्राह्मण कुल तिलक विवेकी तथा वैराग्यशील हुए। आपके हृदय में एक पुत्ररत्न होने पर ऋषिवृति धारण करके एकान्त में जाकर केवल परमेश्वर की आराधना में आयु बिताने का संकल्प था। अत: एक दिन ग्राम से बाहर तालाब में स्नान, संधया-वंदन कर रहे थे तो उसी समय एक सज्जन ने ''पंडित जी को बुलाकर कहा पंडित जी बधाई हो। आपके घर में पुत्र रत्न उत्पन्न हुआ है।'' इतना सुनते ही वह बोले ''भक्त वत्सल भगवान की कृपा हुई है जिन्होंने हमारा संकल्प पूर्ण कर दिया है।'' यह कहकर उसी क्षण श्री चढ़तराम जी किसी अज्ञात दिशा की ओर चले गए। आप ने ऐसी विरक्ति एवं संयम का

परिचय दिया जो प्रत्येक मानव के लिए आत्म-कल्याण का हेतु है। नवजात ''साईंदत्त'' जी का पालन पोषण ''बुग्याना'' नामक ग्राम (जिला लाहौर) में उनके मामा जी ने किया।

साधु संगति इनका एकमात्र धर्म कर्म था और सच्चरित्रता की आप साक्षात प्रतिमा थे। यही कारण था कि एक बार किसी एक महात्मा के अनुष्ठान बताने पर आपने तुरन्त किसी से भी आज्ञा लिए बिना रावी नदी के तट पर जाकर चालीस दिन का अनुष्ठान प्रारम्भ कर दिया। उधर जब सांयकाल आप घर न लौटे तो सभी बहुत चिन्तित हुए प्रत्येक दिशा में लोग इन्हें ढूँढते रहे। अन्त में 38वें दिन किसी व्यक्ति ने आकर पता दिया कि वे तो रावी नदी के तट पर छोटी सी कुटिया बना कर तपस्या कर रहे हैं। उसी समय आपके मामा जी आपको जबरदस्ती उठाकर घर ले जाए। अनुष्ठान में एक दिन की न्यूनता हो जाने पर भी आप अपने उद्देश्य में सफल हो चुके थे। एक बार वर्षा न होने के कारण अटारी में एक सरदार साहब ने वृष्टि यज्ञ करवाया जिसमें आपको भी निमन्त्रित किया गया। आप में स्वाभिमान कूट-कूट कर भरा हुआ था। अपनी इच्छा से भले ही किसी के पास चले जाएं, किन्तु किसी के बाध्य करने पर न जाते थे। उधर यज्ञ प्रारम्भ हुए तीन दिन व्यतीत हो चुके थे। चौथे दिन प्रात: काल आपके मन में विचार आया कि चलो देखें तो सही, क्या हो रहा है? जब यज्ञ मण्डप में पहुँचे तो सभी विद्वानों ने उठ कर आपका सम्मान किया। सभी प्रमुख व्यक्तियों में आनन्द का स्रोत बह चला। यज्ञ मण्डप में रोज की भांति श्री गणेश जी का पूजन हो चुका था परन्तु जब हवन के लिए समिधा जलाने लगे तो आप ने अग्नि द्वारा समिधा जलाने से मना कर दिया और कहा कि - ''यदि हमारे अग्नि स्थापन के मन्त्रों में मन्त्र के उच्चारण पर, अग्नि प्रदीप्त करने की शक्ति नहीं है तो इस यज्ञ से वर्षा नहीं हो सकती।'' अत: आप ने बड़े उच्च स्वर में मन्त्र बोलकर, ''स्वाहा'' कहने के साथ ही सामग्री को समिधा पर छोड़ा तो अग्नि जल पड़ी। तदनन्तर उसी दिन वर्षा भी इतने जोर से हुई कि यज्ञ करने में भी बाधा होने लगी। आपके घर में पं० सुखदयाल तथा पं० कन्हैयालाल नामक दो पुत्र हुए। आप 52 वर्ष की आयु में ही इस संसार से विदा हो गये। तत्पश्चात् आपका परिवार फिर ''नौशहरा'' में आकर रहने लगा।

पं० कन्हैयालाल जी अपने समय के उच्चकोटि के विद्वान थे। आपका व्यवसाय आजीवन वैद्यक रहा। ई० सन् 1848 कार्तिक कृष्ण नवमी चन्द्रवार को आपके यहां पूज्य पंडित गंडाराम जी ने जन्म लिया। पंडित गंडाराम जी के पालन-पोषण एवं यज्ञोपवीत संस्कार आदि कृत्य इकलौता पुत्र होने के कारण बड़े समारोह के साथ सम्पन्न हुए। पंडित गंडाराम जी अपने ताऊ-जात भाइयों के साथ ''नौशहरा'' के निकट 'भंडाना' नामक ग्राम में एक विद्वान के पास पढ़ा करते थे। अध्ययन के अतिरिक्त सभी भाई अपना अधिक समय बाहर तालाब में तैरने में व्यतीत करते थे। परन्तु पं० गंडाराम जी अधिक बलशाली तथा ओजस्वी होने के कारण प्रत्येक कार्य में सर्वप्रथम रहते थे। सहसा उनके मन में विचार आया कि मनुष्य जीवन का ध्येय क्या है उसे क्या करना है? इस

जीवन को किस प्रकार प्रगति पथ पर अग्रसर किया जाना चाहिए। यह कोई साधारण प्रश्न नहीं था जिसे सरलता से हल किया जा सके। अतः आपने उस दिन से अपनी प्रवृति को सब ओर से हटाकर इस जटिल समस्या को सुलझाने में लगा दिया। एक आध मास पर्यन्त इस विषय पर पर्याप्त अन्तर्द्वन्द्व चलता रहा। परन्तु अन्त में यह निर्णय किया कि मुझे इस स्थान पर रहकर उन्नति का कोई भी अवसर हाथ नहीं लग सकता। अतः कहीं अन्यत्र जाकर अवश्य कोई न कोई उपाय ढूँढ निकालना चाहिए।

सौभाग्यवश एक दिन आपके पिता पं० कन्हैयालाल जी ने आपको कोटले का एक रूपया देते हुए कहा 'तुम अमृतसर से एक विवाह पद्धति मोल ले आओ।' यह सुनते ही आप तुरन्त चल पड़े। उस समय आपकी आयु लगभग 21-22 वर्ष थी, आपके मन में कई प्रकार के विचारों का संघर्ष चलता रहा। अन्तिम निर्णय यह रहा कि मुझे अवश्यमेव किसी परम योग्य विद्वान से विद्या ग्रहण करनी चाहिए, क्योंकि बिना विद्या के इस समय किसी भी कार्य में उत्कर्ष प्राप्त करना नितान्त असम्भव है। उस समय अमृतसर (पंजाब) में प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य पं० विष्णुदास जी रहते थे। आप अपने समय के उच्चकोटि के विद्वान थे। आपकी मानसिक सत्ता अत्यन्त प्रबल एवं प्रतिभाशाली थी। आप बड़े सुहृदय व्यक्ति थे। आप के पास दूर-दूर से विद्यार्थी पढ़ने के लिए आया करते थे। पूज्य पंडित गंडाराम जी ने विद्या प्राप्ति के लिए आप से सानुरोध प्रार्थना की जिसे आपने सहर्ष स्वीकार करते हुए उन्हें पढ़ाना आरम्भ कर दिया।

पूज्य पं० गंडाराम जी बड़े मनोयोग से विद्या पढ़ने लगे। आप बड़े प्रेम से अपने ज्योतिषगुरु जी की सेवा-सुश्रूषा करते थे। आपकी बुद्धि की विलक्षणता और सेवा से प्रसन्न हो कर पं० विष्णुदास जी आपको सब से अधिक चाहते थे। वह कई बार सहसा कह उठते थे "हे पुत्र! तुम्हारा जीवन सब प्रकार से सुखी हो और तुम्हारी सन्तान भी तेजस्वी, साधु और विद्वान हो" श्री गुरु जी के आशीर्वाद से आप पूर्ण विद्वान हुए।

आपने ई० सन्-1876 के चैत्र मास में कटड़ा भाई सन्त सिंह "अमृतसर" में एक दुकान किराए पर लेकर ज्योतिष कार्य प्रारम्भ किया उस समय आपके घर एक कन्या और एक पुत्र पं० तीर्थराम थे। यह बात निर्विवाद सिद्ध है कि पं० गंडाराम जी बड़े मनोयोग से विद्या पढ़ चुकने पर और गुरु जी के आशीर्वाद के कारण ज्योतिष शास्त्र के चूड़ान्त मर्मज्ञ एवं सफल विद्वान हो गये थे। यही कारण था कि आपको देश-विदेश में यथेष्ट प्रसिद्धि तथा मान-सम्मान प्राप्त था। भक्ति मार्ग में अधिक प्रवृत्ति थी। जिह्वा पर सरस्वती आसीन थी और मुख ओजस्वी एवं सुन्दर था। उस समय आपके विषय में कई प्रकार की किंवदन्तियाँ प्रचलित हो गईं थीं। कोई कहता कि इन्होंने 'यक्षिणी' सिद्ध कर रखी है और कोई कहता 'भैरवी'। ई०सन् 1877 में आप अमृतसर की पंचायत के नेता (चौधरी) बनाए गए। आप पंचायत के प्रत्येक व्यक्ति की समय अनुसार सेवा के लिए सदा तत्पर रहते थे और सबके सुख-दुख को आजीवन अपना ही सुख-दुख समझते थे। आपके पिता पं० कन्हैयालाल जी ई०सन् 1881 में गोलोक सिधार गए। आप बड़े सरल एवं सच्चरित्र महानुभाव थे। आप दृढ़ता, आस्तिकता, दयालुता,

श्रद्धा, सेवा उदारता एवं भक्ति की सुन्दर जाज्वल्यमान प्रतिमा थे।

ई०सन् 1885 में गंडाराम जी के यहां दो युगल पुत्र उत्पन्न हुए जिनका नाम पंडित राम शरण दास तथा हरिकृष्ण रखा गया। ई०सन् 1888 चैत्र शुक्ला नवमी के दिन योगेश्वर प्रभु श्री राम लाल जी ने अवतार धारण किया। उस समय पंडित गंडाराम जी का यश देश-विदेश में सुचारू रूप से फैल रहा था। पं० गंडाराम जी ने अपने जीवन में कई अनुष्ठान भी किए। नित्य कर्म में आप बढ़े-चढ़े कर्मकाण्डी थे। यही कारण था कि आपकी जिह्वा में एक प्रकार की शक्ति आ गई थी। जिसको जो कुछ कह देते थे उस के साथ वही घट जाता था। कई निः सन्तान घरानों को आपने अपने मन्त्र बल से सन्तानवान् बनाया। कई असाध्य रोगियों को नीरोग बनाया। या यों कहिए कि आपका समस्त जीवन दुखी प्राणियों की सेवा में ही व्यतीत हुआ। अपने परिवार का भी यथा समय उचित पालन-पोषण करके उसे भली-भांति सुसंस्कृत किया। शारीरिक बल एवं सुन्दरता के साथ-साथ धन-धान्य में भी आपका यथेष्ट अधिकार था आत्माभिमान ने आपके अन्तःकरण में विशेष प्रभुत्व जमा रखा था। जो शब्द मुख से निकल गया, उस पर सदा अटल रहे। अन्त में पूज्य पंडित गंडाराम जी अपने सर्व प्रकार से सुखी, आनन्दपूर्ण और भक्तिमय जीवन को भली भांति व्यतीत कर ई०सन् 1907 में मार्गशीष मास में 60 वर्ष की आयु भोग कर इस नश्वर संसार को त्याग कर गोलोक चले गए।

भजन :

यह कौन आए रे : श्री श्याम लाल जी खन्ना

कलियुग में शक्ति वाले, यह नन्द जी के लाले।
यह गउओं के ग्वाले, यह तो राम धनुष वाले।। यह कौन आए रे............................
जब होवे धर्म की हानी, तब आवें अन्तर्यामी।
त्रैलोकी के जो स्वामी, वेदों ने गाए रे।। यह कौन आए रे....................................
यह मर्यादा पुरूषोत्तम, यह भगवान है परमातम।
जगदीश्वर सब के आत्म, भक्तन मन भाए रे।। यह कौन आए रे............................
त्रेता में रावण मारा, द्वापर में कंस संहारा।
अब ब्राह्मण वेश है धारा, कलियुग में आए रे।। यह कौन आए रे............................
प्रभु राम रती को तारा, रामा को पार उतारा।
हरिहरानन्द सर वारा, शिव पद को पाए रे।। यह कौन आए रे..............................1
शरणागत श्याम तुम्हारी, जाए चरणों पे बलहारी।
प्रभु राम लाल अवतारी, गुण तोरे गाए रे। यह कौन आए रे..................................

योग योगेश्वर प्रभु श्री रामलाल जी महाराज

श्री प्रभु राम लाल जी महाराज की जन्म कुण्डली व ग्रह स्थिति

सर्व कला सम्पूर्ण योगेश्वर श्री रामलाल प्रभु पंजाब प्रांत के अमृतसर नगर कूचा भाई सन्त सिंह में चैत्र शुक्ल नवमी विक्रमी सम्वत् 1945 तद्नुसार 22 मार्च सन् 1888 ई० बृहस्पतिवार समय: 6 घड़ी 56 पल तद्नुसार 8 बज कर 56 मिनट 24 सैकेंड पर पुर्नवसु नक्षत्र में अवतरित हुए।

ग्रह स्पष्ट

ग्रह	राशी	अंश	दिशा	नक्षत्र
लग्न	वृषभ	06:24:58		03 कृतिका
सूर्य	मीन	11:08:10		26 उत्तरा भाद्रपद
चन्द्र	मिथुन	26:05:40		07 पुनर्वसु
मंगल	तुला	07:21:29	वक्री	15 स्वाति
बुध	कुंभ	15:34:18	मार्गी	24 शतभिषा
गुरू	वृश्चिक	15:30:40	मार्गी	17 अनुराधा
शुक्र	कुंभ	12:11.31	मार्गी	24 शतभिषा
शनि	कर्क	08:46:36	वक्री	08 पुष्य
राहु	कर्क	16:06:19	वक्री	08 पुष्य
केतु	मकर	16:06:19	वक्री	22 श्रवण

जन्म समय पर ग्रहों की स्थिति

लग्न – वृषभ राशि
सूर्य – मीन राशि
चन्द्र–मिथुन राशि

कूजा (मंगल) – तुला राशि
बुध – कुम्भ राशि
जीवा (बृह) – वृश्चिक राशि

शुक्र – कुम्भ राशि
शनि – कर्कट (कर्क) राशि
राहु – कर्कट (कर्क) राशि
केतु – मकर राशि

लग्न कुंडली

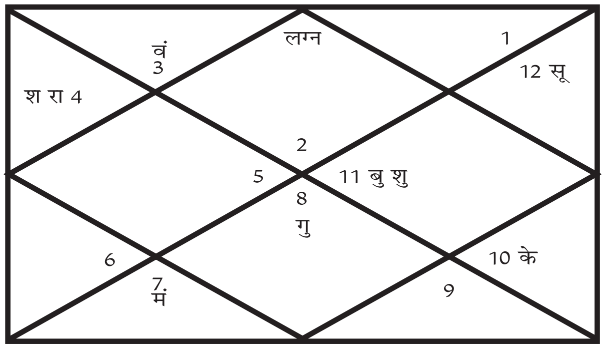

नवमांश

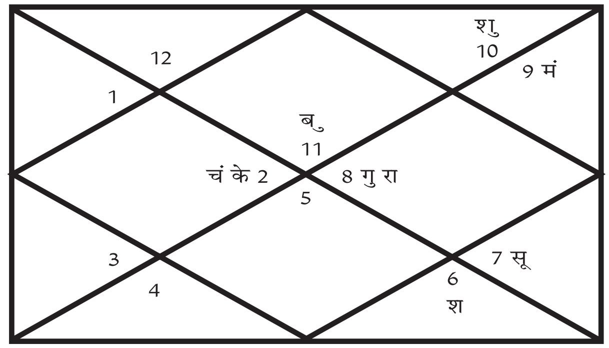

चन्द्र कुंडली

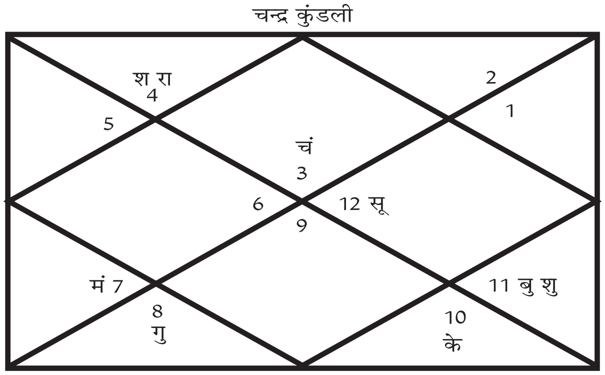

भाव चलित

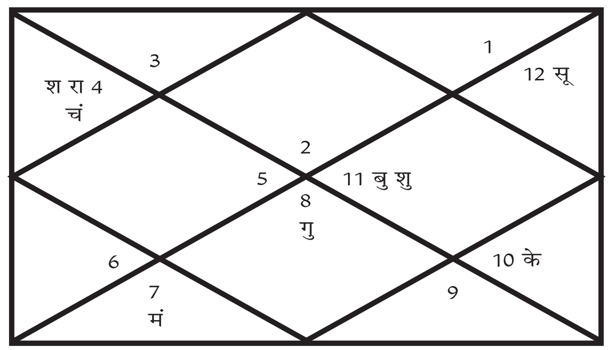

इस जन्म कुण्डली से कुछ ज्योतिषीय तथ्य जो स्पष्टत: दृष्टिगोचर होते हैं, इस प्रकार कहे जा सकते हैं:- जन्म कुण्डली वृषभ लगन की है जो शुक्र की राशि है। अत: जातक का ललाट उन्नत, नैन नक्श प्रभावशाली तथा गरिमाशील व्यक्तित्व होगा। बृहस्पति की सातवीं दृष्टि लग्न पर पड़ने से व्यक्तित्व में आध्यात्मिकता का पुट आ जाएगा। प्रथम तथा पंचम भाव के स्वामी शुक्र तथा बुध का केन्द्र स्थान में होना तथा नवम् भाव के स्वामी शनि का नवम भाव अर्थात अपने ही भाव को देखना (नवम भाव को ज्योतिषशास्त्र में धर्म स्थान कहा गया है) और पुन: जीवा (बृहस्पति) की लग्न पर सातवीं तथा शनि पर नवम दृष्टि जातक का योगेश्वर (योगियों का भी ईश्वर) होना सिद्ध करती है। प्रथम भाव के स्वामी तथा पांचवें भाव के स्वामी का दशम भाव में स्थित होना योग मार्ग के उच्च्तम सोपान पर आरूढ़ होने की सफलता का जयघोष कर रहा है। छटे भाव में मंगल की स्थिति जातक के इस दृढ़ निश्चय को प्रकट करती है कि मार्ग की पथ-बाधाओं, विघ्न अवरोधों की परवाह किए बिना अपने ध्येय को प्राप्त करने में सफल मनोरथ होगा। 'मंगल' जातक के इस अदम्य साहस को उत्तरोत्तर बलशाली बना रहा है। 'मंगल' की धर्म स्थान (नवमं भाव) पर चौथी दृष्टि गुरू परम्परा से ज्ञानार्जन और उसका उत्तरोत्तर उन्नयन कहती है। आध्यात्मिक ऊर्जा का स्त्रोत केतु ग्रह धर्म स्थान नवम को और भी ऊर्जा प्रदान करता है जिससे जातक में योगाध्यात्म की सिद्ध-हस्तता सिद्ध होती है। शनि वीतरागात्मिकता और राहु गहन समाधि की ओर इंगित करते हैं। सूर्य से शनि तथा शनि से बृहस्पति और गुरू से सूर्य परस्पर त्रिकोण स्थान पर होना जातक को आध्यात्मक/योग की बुलन्दियों तक पहुंचा देगा। श्री राम लाल प्रभु के स्पर्श मात्र से शक्ति पात हो जाता था और व्यक्ति तत्क्षण तुरीय अवस्था में पहुंच जाता था।

महर्षि काकभुशुंडि जी द्वारा लिखित भविष्यवाणी

'काक-नाड़ी' नामक संहिता में महर्षि श्री काकभुशुंडि जी कहते हैं कि अंड पिंड ब्रह्माण्डों को गर्भ में धारण करने वाली हे देवि! एक महापुरुष का जातक फल मैं कह रहा हूँ। वृषभ लग्न है, द्वितीय भाव में चंद्र है, कर्काकट में शनि राहु हैं, तुला में कुज है, वृश्चिक में बृहस्पति है। मीन में रवि है। मकर में केतु है, कुंभ में बुध वा शुक्र है। इस प्रकार की ग्रह स्थिति में जन्म है। जगत की रक्षा के लिये अवतार लेने वाले महापुरुष हैं। जन्मभूमि पंजाब है। वह नगर भी किसी समय प्रसिद्ध राजधानी के रूप से प्रकट होगा, उसका इतिहास भी महान् है। उसका नाम अमृतसर होगा। पूर्व पश्चिम बीथी है, उत्तराभिमुख सिंहद्वार का गृह है। पंचम गर्भ में जन्म है।

जीवों को लोक परलोक का ऐश्वर्य देने में समर्थ महाप्रभु हैं। अष्ट सिद्धियों के स्वामी हैं। सभी प्रकार की सिद्धि शक्तियों के अधिपति हैं। सांसारिक जीवों के प्रारब्ध को अपने ऊपर लेकर तथा भुगत कर उनको भी अपनी पदवी दे देने में समर्थ महापुरुष हैं। आपका नाम श्री रामलाल है। पैतृक सम्पत्ति अधिक नहीं। समस्त विश्व को ऐश्वर्य देने में समर्थ प्रभु को पैतृक वैभव से क्या प्रयोजन है?

पंद्रह वर्ष की आयु होने पर विवाह होगा। पत्नी के बालकौर व सुभद्रा यह दोनों नाम हैं। माता पिता के विशेष अनुरोध से ही यह विवाह होगा। फिर भी छिलके के साथ रह कर इमली की भांति निर्लेप ही रहेंगे (कमलपत्रमिवांभसः)। इस प्रकार थोड़ा समय व्यतीत करके अन्य देशों की ओर प्रस्थान करेंगे। उस अल्प काल में भी संतानोत्पति की ओर ध्यान न होगा।

पिता जी का नाम श्री गंडाराम है। आपकी बीस वर्ष की आयु के भीतर पिता जी का स्वर्गवास है। तीस वर्ष की आयु के भीतर माता जी का स्वर्गारोहण होगा। माता जी का नाम श्रीमती भागवंती जी है। पिता जी के देहावसान के पश्चात, गृह त्याग कर तथा दूरस्थ देशों में जाकर, आपको ज्ञान ज्योति अभेद स्वरूप के दर्शन होंगे।

ईश्वर कृपा अधिक रहेगी। बड़े-बड़े अनुभवी सिद्धों को भी होने वाले संदेहों को निवृत्त करने की असाधारण योग्यता को प्राप्त होंगे। ऐसी महान् योग्यता बीस वर्ष की आयु के भीतर ही प्राप्त होगी। ऐसी महान् योग्यता के साथ अनेक स्थानों में भ्रमण करेंगे। इतने में तीस वर्ष आयु होने पर माता जी का स्वर्गारोहण होगा। माता जी के देहावसान के समय सभी सिद्धियां प्रकट होंगी। ज्ञानोपदेश करते हुए अनेक स्थानों में पदार्पण करेंगे।

अन्य जीवों को ज्ञानोपदेश द्वारा कृतार्थ करने वाले गुरूओं के भी गुरू होकर उनकी योग्यता अनुसार गुरू शक्ति प्रदान करते रहेंगे। सृष्टि स्थिति आदिक महाशक्ति सम्पन्न हैं। मुँह माँगा वरदान देने में भी पूर्ण समर्थ हैं। ये महापुरूष जगत के आधारभूत महाशक्ति के अवतार हैं। इनका चरित्र अपार है।

सदा सर्वदा निर्विकल्प में स्थित रहते हुए, इक्यावन वर्ष की आयु में भौतिक शरीर त्याग कर, द्वितीय तन धारण कर, मेरू गिरि के स्वर्ण शिखर में रह कर इससे भी अधिक उन्नति प्राप्त कर, फिर दूसरा शरीर धारण कर कल्पांत तक यह इसी स्थिति में विराजेंगे। ऐसी उत्तम स्थिति इन महापुरूष में नित्य रूप में रहेगी।

श्री प्रभु करुणा कृपा से अवलम्बित् बाल्यावस्था

भूमिकाः- श्री प्रभु कृपा से 'रघुनन्दन' नाम रूप वाले इस शरीर का जन्म भारत के पंजाब प्रान्त के नगर होशियारपुर निवासी एक धनाढ्य भक्त परिवार में 22 मग्धर विक्रम्मी सम्बत् 1986 तदानुसार सात दिसम्बर ई सन् 1929 में हुआ। पिता जी का नाम श्री गुज्जरमल सूद और माता जी का नाम श्रीमती भागवन्ती था। इस शरीर के जन्म के बाईसवें दिन माता जी गोलोक सुधार गईं तो दो साल तक इस शरीर का पालन पोशन घर के रसोइएं पं रामलाल की धर्म पत्नी तथा आगरा नगर (यू.पी.) की धायया द्वारा सम्पन हुआ। इस के बाद पिता जी को दूसरी शादी करवानी पड़ी। मुझे बाल्यवस्था का सारा लाडप्यार दूसरी माता लाजवन्ती जी द्वारा मिला। वह बड़ी उदार चित्त और प्रभू भक्त थीं। वह धर्मशाला वाले विख्यात महन्त लक्ष्मीधर महाराज जी से दीक्षत थीं। साधु महात्माओं की सेवा और परहित चिन्तन की उन में बड़ी लगन थी। माता जी आनन्दमेईं माँ, हरिहरबाबा तथा अन्य सन्त सम्मेलनों में मुझे भी अपने साथ ले जाती थीं। वह मुझे रात को उपनिषदों की कथायें और भगवान् श्रीकृष्ण की दिव्य लीलायें सुनाकर सुलाया करती थीं। पिता जी श्री सनातन धर्म सभा होशियारपुर के सभापती थे और ऊना वाले डेरा लुदरूबाबा के योगी गुरू श्री आत्मानन्द जी महाराज के शिष्य थे। वह होशियारपुर में हरवर्ष रामलीला उत्सव और वृन्दावन के प्रसिद्ध रासधारियों द्वारा भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं के नाटक भी करवाया करते थे। घर में भी समय समय पर महात्माओं के सद्उपदेश व कथा-कीर्तन सत्संग होते ही रहते थे। श्रीप्रभु की अपार कृपा से बाल्यकाल से ही मुझे अपने माता पिता, सन्त समाज तथा शिक्षा के केन्द्र श्री सनातन धर्म हाई स्कूल होशियारपुर से प्रभु भक्ति के संस्कार मिले।

ई. सन् 1947 में भारत के विभाजन के बाद, पंजाब यूनिवर्सिटी लाहौर के सभी टीचिंग विभाग होशियारपुर के गोरमिंट कालेज में काम करने लगे तो मुझे वहां भौतिक विज्ञान की एम.एस.सी. (औरनज) में एडमिशन मिला। मेरे मित्र श्री कशमिरी लाल जैन के साथी श्री केवल कृष्ण मरवाहा गोरमिंट कालेज में एम.ए ईगलिश के छात्र, योग साधन आश्रम 3 मोडल टाऊन होशियारपुर में प्रोफैसर श्री चमन लाल कपूर जी से योग के साधनों द्वारा अपनी 'कब्ज' के रोग का उपचार करवाना चाहते थे। इस कारण से उन्हों ने मुझे भी हर रोज अपने साथ आश्रम चलने को कहा- तो उन के दुःख निवारण के लिए 'रघुनन्दन' हर रोज उनके साथ आश्रम चला जाता था। वह वहाँ एक घंटा योग साधना करते और यह शरीर उन की प्रतीक्षा में आश्रम बैठा रहता। कुछ दिनों के उपरान्त प्रो. कपूर जी ने मुझे भी योग के साधन करने को कहा। मेरे इन्कार करने पर उन्हों ने मुझे हर रविवार आश्रम के सत्संग में आने का निमंत्रण दिया। उनका यह निमंत्रण प्रभु कृपा से स्वीकार कर माता जी को भी साथ

लेकर हर रविवार आश्रम के सत्संग में जाना आरम्भ हो गया।

योगेश्वर प्रभु श्री रामलाल जी महाराज के गृहस्थी रूप में दर्शन :-

जब माता जी पहली बार मेरे साथ योग साधन आश्रम के रविवार सत्संग में गए तो उन्हों ने घर आकर बताया कि बेटे! आज आश्रम के सत्संग में उन्हों ने एक चौंकी के ऊपर बहुत दिव्य तेज से युक्त सफेद पगड़ी व कुरता-धोती धारण किये एक महापुरूष के दर्शन किये हैं वह कौन थे ? 'रघुनन्दन' ने जबाव दिया कि माता जी आश्रम में न तो ऐसे किसी महापुरूष की फोटो लगी देखी है और न ही वहाँ पर ऐसे कोई महापुरूष चौंकी पर विराजमान थे इस लिए उनके बारे में मुझे कोई जानकारी नहीं है। जब अगले दिन केवल कृष्ण के सामने प्रो. कपूर जी को माता जी का यह अनुभव सुनाया तो उन्हों ने माता जी के पढ़ने के लिए एक पुस्तक मुझे दी। जब घर जाकर रघुनन्दन ने वह पुस्तक माता जी को दी तो उन्होंने श्री प्रभु जी का गृहस्थी रूप में सफेद पगड़ी व धोती कुरता पहने चौकी पर विराजमान होने वाली फोटो को देख कर मुझे बताया कि कल आश्रम के सत्संग में बैठे उन्हें इन के ही दिव्य दर्शन हुये थे। इस घटना के बाद आदरणीय प्रो. कपूर जी के कहने पर माता जी अपने घर के मन्दिर में भगवान् श्री कृष्ण जी की आरती पूजन के बाद ध्यान में बैठने लग गए।

माता जी का आकाशवाणी को सुनना :-

माता जी ने जब से प्रभु श्री रामलाल जी महाराज के दिव्य गृहस्थी रूप के दर्शन किए तब से उन के मन में श्री प्रभु जी के बारे में जानने की इच्छा पैदा हो गई। एक दिन अपने घर के मंदिर में भगवान् श्रीकृष्ण जी की आरती पूजा के बाद जब माता जी ध्यान में बैठीं, तो उनके सामने एक पुस्तक खुली जिस के सुनहरी अक्षर दिव्य तेज से चमक रहे थे। फिर माता जी ने बताया कि जब वह उस पुस्तक में लिखे सुनहरी अक्षरों को पढ़ न सकीं तो आकाशवाणी हुई कि ''यह प्रभु वही हैं जिन्हों ने द्वापर में श्रीकृष्ण रूप धारण किया, यह वही हैं जो त्रेता में राम रूप में प्रकट हुए, यह वही हैं जिन्हों ने भक्त प्रहलाद के लिए नरसिंह रूप धारण किया, यह वही हैं जो वामन रूप में प्रकट हुए आदि आदि'' इस आकाश वाणी को सुन कर माता जी का हृदय गद्‌गद हो गया और जब यह घटना उन्हों ने मुझे सुनाई तो उन की आंखों से प्रेम के आँसू बह रहे थे। कैसी है यह श्री प्रभु जी की करूणा कृपा लीला।

माता जी को भगवान् का साक्षात्कार :-

इस घटना के कुछ समय पश्चात् हमारे मौसा राय साहिब राम रखा मल ने अपने घर के आगे वाली खुली जगह पर रात का कथा सत्संग रखवाया। उन का घर नई आबादी (गीता नगर) में हमारे घर के पास ही था। मौसी जी ने अपनी बहन को भी इस कथा सत्संग में आने का बुलावा भेजा। माता जी को इस सत्संग में भगवान् श्रीकृष्ण जी की सुद्रशन चक्र वाली मूर्ति के सामन बैठने का स्थान मिला। उस समय वहाँ भजन बोले जा रहे थे।

माता जी वहाँ ध्यानस्थ हो गई और उन्हें ऐसा अनुभव हुआ कि भगवान् श्रीकृष्ण अपने एक हाथ में सुदर्शन चक्र लिए हुए, शीशे के फरेम से बाहिर निकल कर माता जी के पास आ गए और अपने दूसरे हाथ को उन के सिर पर रख कर आशीर्वाद देकर वापिस चले गए। फिर वह श्री प्रभु रामलाल जी महाराज का जटाधारी रूप बना कर माता जी के पास आए आर्शीवाद दिया और वापिस चले गए। इस के बाद वह फिर कृष्ण रूप में बदल कर एक हाथ में सुदर्शन चक्र लिए आए और माता जी को दूसरे हाथ से आर्शीवाद दिया। ऐसी लीला बारबार चलती ही रही। लोग चले गए, सत्संग समाप्त हो गया, मगर माता जी को इस का कुछ भी पता नहीं चला। माता जी को अभी तक अकेली बैठी देख मौसी जी ने उनको गहरी नींद में जान-खूब हिलाया। जब माता जी को सुध आई तो वह वहाँ का प्रसाद लेकर अपने घर उसी ध्यान की मस्ती में चली आईं और घर के बड़े दरवाज़े को बन्द किए बिना, ऊपर जा कर सो गईं। उन का वह सत्संग वाला अनुभव सारी रात जारी रहा। वह जब सुबह उठीं तो उन्होंने चाटी में हर रोज की तरह दहीं बलोया, माखन निकाला और घर में आये लोगों में लस्सी को बाँटा। घर का सारा काम किया और उनका यह कार्य आठ दिन ऐसे ही चलता रहा। आठ दिन के बाद माता जी ने मुझे अपना यह सारा अनुभव बताया और कहा कि इन आठ दिनों में उन के हृदय में भगवान श्रीकृष्ण जी विराजमान रहे और उनके रोम रोम से मंत्र का जाप चलता रहा। उन्होंने आगे बताया कि घर का सारा काम हर रोज़ की तरह होता रहा पर उनको इस का कोई पता नहीं कि मक्खन कौन निकाल रहा था और घर का सारा कार्य कौन निपटा रहा था। कैसी है यह आलोकिक कृपा !

रघुनन्दन के मन मेंश्रद्धा और विश्वास का प्रकट होना :-

श्री प्रभु जी ने अपनी अपार करूणा कृपा से माता जी को जो दिव्य अनुभव प्रदान किए उनको जान कर रघुनन्दन के मन में श्रीप्रभु रामलाल जी महाराज के प्रति श्रद्धा और विश्वास रूपी फूल खिल उठे और श्रीप्रभु जी को श्री सद्गुरू रूप में प्राप्त करने के लिए मन बेचैन हो गया। मुझे याद है कि दसवीं कलास की परीक्षा पास करने के बाद पिता जी ने जब मुझे पं. शिवदत्त जी द्वारा जनेऊ संस्कार करवाने के लिए कहा था तव मेरे पूछने पर पिता जी ने बताया था कि जनेऊ संस्कार वाले दिन नवग्रह पूजा के बाद पंडित जी तुम्हें मंत्र दे कर जनेऊ पहना कर तुम्हारे अध्यात्मिक गुरु बन जाएंगे। इस पर 'रघुनन्दन' ने पिता जी से विनम्र निवेदन किया था, कि आप मेरा जनेऊ संस्कार उत्सव भले ही घर में कर लें पर वह पंडित जी मेरे गुरू नहीं होंगे और न ही 'रघुनन्दन' उनसे नाम लेगा क्योकि मेरे सद्गुरू केवल भगवान् हैं। तब घर में मेरा जनेऊ संस्कार नहीं हुआ था। अब माता जी की घटनायें सुनने के बाद ऐसा लगा कि 'रघुनन्दन' को संसार में जन्म देने के बाद, इतनी छोटी आयु से उस का पालन पोषण, प्रभु भक्ति के संस्कार, प्रभु को सत्गुरूरूप में प्राप्त करने की तीव्र ईच्छा के पीछे मेरे श्री प्रभु जी की

ही करूणा कृपा लीला हो रही थी। सन् 1953 में एम एस सी (औनरज) का परिणाम घोषित होने के बाद, 'रघुनन्दन' की विद्या की पढ़ाई समाप्त हो गई। फिर छ: मास तक पिता जी की रोजन फैक्टरी का काम सम्भाला उसके बाद, आपने माता पिता जी की अनुमति से 'रघुनन्दन' ने गोरमिंट कालेज मुक्तसर में 4 जनवरी, 1954 से भौतिक विज्ञान के प्रोफैसर के रूप में कार्य आरम्भ कर दिया। यह अस्थाई नौकरी थी इस लिए कालेज की ग्रीष्मकाल के अवकाश के साथ ही मेरी भी छुट्टी हो गई। 'रघुनन्दन' होशियारपुर आ गया। वहाँ पर रविवार के सत्संग के बाद प्रो. कपूर जी ने बालक बलदेव पर हुई प्रभु कृपा की घटना मुझे इस प्रकार बताई:

बालक बलदेव (आयु 13-14 वर्ष) को प्रभू जी का साक्षात्कार :-

योग साधन आश्रम के 'रामनवमी' उत्सव कार्यक्रम' के निमन्त्रण पत्रों को पास के गांव 'हरदोखानपुर' में भक्तों को देने के लिए प्रो. कपूर जी ने बलदेव को अपना साईकल देकर भेजा। जब वह निमन्त्रण पत्रों को वहां देकर लौट रहा था तो उसके रास्ते में एक चौड़ा पहाड़ी नाला (चो) पड़ता था। उसके पानी का बहाव इतना तेज था कि अच्छे अच्छे तैराक भी इस पानी में डूब जाते। यह पानी पहाड़ पर वर्षा होने के कारण एक दम इस चो में आजाता और वहां वर्षा बन्द होंने पर रुक जाता था। बलदेव को इस बात का पता नहीं था क्योंकि वह अपने माता पिता के साथ पाकिस्तान से आया हुआ था। जैसे ही बालक बलदेव ने साईकल पानी में चलाई तो वह साईकल समेत पानी में बहने लगा। उसी क्षण प्रभु श्री रामलाल जी महाराज अपने बालक भक्त को बचाने वहाँ स्थूल रूप में प्रकट हो गए और गिरते को थाम लिया। श्री प्रभु जी ने अपने एक हाथ से बलदेव को पकड़ा और दूसरे हाथ से साइकिल को उठा कर पानी से बाहर कर दिया और आशीर्वाद देकर बलदेव को आश्रम भेज दिया।

नंगे पैरों धाय के गिरते को ले थाम। ऐसे सद्गुरु राम को कोटि कोटि प्राणाम।।

श्री रघुवीर जी की दशम द्वार की उच्चारण समाधि के दिव्य अनुभव

शीला शर्मा निवासी 38-आर. माडलटाऊन होश्यारपुर पर प्रभु कृपा :-

ई.सन् 1953-54 में श्री रघुवीर राज जी भारतीय सेना की शाखा EME सिकन्दराबाद में तैनात थे। भारत के सन् 1947 में विभाजन के बाद उन के माता पिता अपने बच्चों के साथ चौंक सराजां होशियारपुर पुर में रहने लगे। उनके पिता जी माडलटाऊन में दुकान करते थे। उन दिनों शीला शर्मा सपुत्री एडवोकेट जे.एम. शर्मा अपनी माता जी के साथ योग साधन आश्रम में हर रविवार के सत्संग में लगातार आतीं थी। वह बी.ए. की छात्रा थीं। उसने एक बिमार अवारा कुत्ते की बड़ी सेवा की थी। एक दिन आश्रम में श्री रघुवीर जी की दशम द्वार की उच्चारण समाधि लगी हुई थी। उनकी समाधि में श्री प्रभु रामलाल जी महाराज ने शीला शर्मा की इस निष्काम सेवा से प्रसन्न होकर उसे वर मांगने को कहा। शीला ने श्री प्रभु जी से अपने लिए एक भाई मांगा जिससे वह खेल सके।

श्री प्रभु जी ने कहा कि ''अगर तुम्हें छोटे बच्चे के रूप में भाई मिले तो जब तब वह तुम्हारे साथ खेलने के लिए बड़ा होगा तब तक तो तुम्हारी शादी हो जाएगी। इस कारण अगर तुम चाहो तो हम रघुवीर को तुम्हारा भाई बना देते हैं।'' इस पर शीला ने श्री प्रभु जी का धन्यवाद करके वहाँ उसी समय अपने हाथ के अँगूठे के मास को ब्लेड से काट कर, उस के खून से श्री रघुवीर जी को भाई के रूप में तिलक किया। समाधि के खुलने पर प्रभु आज्ञानुसार श्री रघुवीर जी सीधे शीला शर्मा के साथ उन के घर 38-आर माड़लटाउन चले गए। शीला के माँ बाप ने हृदय से उनका स्वागत कर, जलपान करवा कर अपने घर में श्री रघुवीर जी के रहने का प्रबन्ध कर दिया। सारे पड़ोस में बेटे के घर आने पर मिठाई बांटी। इस के बाद श्री रघुवीर जी शीला बहन की शादी तक कभी भी अपने चौंक सराजां वाले घर पर नही गए। वह इसी घर से सिकन्दराबाद को जाते और वहां से इसी घर में वापिस आते। घर के सब सदस्य तथा उन के सब रिश्तेदार व मित्र श्री रघुवीर जी को बहुत प्यार करते थे। शीला अपने भाई के साथ खूब खेलती, भाई को घोड़ा बनाती और कभी कभी बन्दगोभी के फूल को दोनों भाई बहन अपने दाँतो से काट काट कर इकट्ठे खाते। कभी हंसते तो कभी झगड़ते। ये भाई बहन का एक अनोखा ही प्यार था।

ऋषीराम पेन्टर द्वारा प्रभुरामलाल जी के जटाधारी स्वरूप का निर्माण :-

ऋषी राम पेन्टर भारत का ई सन् 1947 में विभाजन होने से पहले योग साधन आश्रम ग्वाल मण्डी लाहौर में योग साधना करने जाते थे। उन्हों ने वहां पर श्री रामलाल जी महाराज के गृहस्थी रूप में दर्शन भी किये थे। पाकिस्तान बनने के बाद वह लाहौर से अमृतसर आ गए। वहाँ उन की मुलाकात स्वामी श्री मुल्खराज जी से हुई। जब स्वामी मुलखराज जी को पता चला कि वह लाहौर आश्रम में साधना करते थे तो उन्हों ने उसे श्री प्रभु रामलाल जी महाराज का एक स्वरूप बनाने के लिए कहा। ऋषि राम ने जबाव दिया कि आप उस की समाधि लगवा दीजिए ताकि प्रभु जी उसे स्वरूप बनाते हुए दृष्टीगोचर होते रहें। स्वामी जी को उस की यह शर्त मंजूर नहीं थी। इस कारण स्वरूप नहीं बन सका।

कुछ समय पश्चात् ऋषि राम को उस के पाकिस्तान वाले मकान के बदले होशियारपुर कमेटी बज़ार की गली में एक मकान मिला। वह अमृतसर से होशियारपुर आकर उस मकान में रहने लगा। एक दिन उसकी टाँग ट्रक के नीचे आ गई। जब दवाई से आराम नहीं आया तो वह प्रो. कपूर जी से साधन सीखने लगा। कुछ देर बाद उस की टाँग की दर्द बन्द हो गई। जब उसने लाहौर आश्रम में श्री प्रभु जी के दर्शन करने का बताया तो प्रो. कपूर जी ने होशियारपुर आश्रम के लिए उसे श्री प्रभु जी का एक स्वरूप निर्माण करने को कहा। ऋषि राम ने जवाब दिया कि स्वामी श्री मुल्खराज जी ने भी प्रभु जी के चित्र को बनाने को कहा था तो उन को मैंने अपनी शर्त बता दी थी कि इस चित्र को तब बनाऊँगा जब श्री प्रभु जी मुझे समाधि में दृष्टिगोचर होते रहें, अन्यथा नहीं। प्रो. कपूर जी

ने कहा कि वह तुम्हारी शर्त पूरी नहीं कर सकते। सिंकदराबाद से जब श्री रधुवीर जी आश्रम आएगें तो तुम्हारी बात करा देंगे। ई. सन् 1954 जून में श्री रघुवीर जी के आश्रम आने पर उस पेंटर को बुलाकर बातचीत हुई। ऋषि राम पेन्टर ने कहा कि वह प्रभु श्री रामलाल जी का जटाधारी स्वरूप एक शर्त पर बनाने को तैयार है कि अगर जटाधारी प्रभु उसके सामने विराजमान रहें ताकि उनके स्वरूप को जैसा और जितना बनाना हो उस का वह भाग ऋषि राम को दिखाई देता रहे। श्री रघुवीर जी ने उसको कहा कि तुम बिना शर्त के प्रभु श्री रामलाल जी महाराज के स्वरूप को बनाना आरम्भ करो और चिंता छोड़ दो। मगर ऋषि राम पेंटर ने अपनी शर्त पर ही काम करना स्वीकार किया। इस पर श्री रघुवीर जी ने कहा कि जैसा तुम चाहते हो वैसा ही हो जाएगा। अब तुम श्री प्रभुजी का स्वरूप बनाना आरम्भ करो और, पूरा होने पर आश्रम में बता देना।

फिरोज़पुर के आर्यसमाज मन्दिर में श्री रघुवीर जी की दशमद्वार समाधि और प्रो. चमन लाल जी का योग पर प्रवचन :- फिरोज़पुर के कँवर हरवंसलाल जी ने प्रो. कपूर जी का आर्यसमाज मंदिर में योग पर प्रवचन रखवाया। उसके लिए प्रो. कपूर जी होशियारपुर से श्री रघुवीर जी व 'रघुनन्दन' तथा कुछ अन्य आश्रम में योग साधन करने वालों के साथ वहां योग के साधनों की प्रदर्शनी करने के लिए गए। कँवर हरवंसलाल जी के पिता जी काफी समय से अधरंग के रोग से पीड़ित थे। आर्यसमाज मंदिर में श्री रघुवीर जी समाधिस्थ हो गए और वहाँ की प्रदर्शनी में कंवर हरवंसलाल जी के पिता जी के अधरंग रोग को श्री प्रभु जी ने अपनी कृपा से श्री रघुवीर जी की दशम द्वार की समाधि में उस रोग का भुगतान करवा कर कंवर साहिब के पिता जी को सदा के लिए रोग मुक्त कर दिया। प्रो. कपूर जी ने वहां नेती धोती क्रियाओं को करके दिखाआ और साधकों द्वारा योग के आसनों की प्रदर्शनी भी हुई। बाद में कँवर हरबंस लाल जी ने प्रो. चमन लाल जी द्वारा श्री प्रभु चरणों में दीक्षा ग्रहण की और श्री रघुवीर जी अपनी छुट्यिां समाप्त होने पर वहाँ से वापिस सिकन्दरा बाद चले गए। यह कैसी करुणा कृपा लीला श्री प्रभु जी ने वहां आर्य समाज में की।

श्री रघुवीर जी को महाप्रभु भगवान् सदाशिव जी का साक्षात्कार :-

श्री रघुवीर जी के सिकन्दराबाद में पहुँचने के पाँच दिन बाद उन का यूनिट कहीं प्रैक्टिस के लिए दूसरे स्थान पर जा रहा था। श्री रघुवीर जी भी अपनी फौज के इस यूनिट के साथ कंही दूर परेड पर जा रहे थे। मगर वह फौज के साथ जाते हुए अपना रास्ता भटक गए तो वहाँ पर उन्हें महाप्रभु भगवान् सदाशिव जी महाराज के साक्षात् दर्शन हुए और भगवान सदाशिव जी महाराज ने अपना आशीर्वाद दे कर कहा कि हम ही आप को यहां लाए हैं। फिर भगवान सदा शिव जी महाराज ने उनको कुछ समय अपने पास रखकर, समझा कर अपने आशीर्वाद सहित उनके गन्तव्य स्थान पर पहुँचा दिया।

श्री महाप्रभु जी का रघुवीर जी का रूप बना कर पैरेड़ करना :- एक दिन श्री रघुवीर जी सिकन्दराबाद के अपने कमरे में समाधि में लीन थे। उनके कमरे के साथी उनको ध्यानावस्था में देख स्वयं परेड करने चले गए। परेड समाप्त होने पर जब उनके साथी वापिस कमरे में आए तो उन्होंने रधुवीर जी को उसी प्रकार समाधि में लीन पाया। वह सब साथी उनको कमरें में समाधि में लीन देख और उनके साथ परेड में भी शामिल जान बड़े हैरान हुए। थोड़ी देर के बाद जब श्री रघुवीर जी समाधि से उठे तो उन्होंने श्री रघुवीर जी से पूछा कि क्या आप ने परेड नहीं की ? तो रघुवीर जी ने जबाब दिया कि वह तो अभी आप सब के सामने समाधि से उठे हैं तो उन्होंने कहा कि हमने तो आप को परेड पर देखा है। इस पर श्री रघुवीर जी ने कहा कि मुझे क्या मालूम परेड में आपने किस को देखा मैं तो यहाँ समाधि में ही था। इस पर श्री रघुवीर जी के साथी हाज़री के रजिस्टर को चैक करने चले गए तो वहां उन की हाज़री लगी हुई थी। यह सब जान कर वह सब बड़े हैरान हुये। तब श्री रघुवीर जी ने श्री महाप्रभु जी की दिव्य लीला को जाना कि कैसे वह अपनी करूणा कृपा से उनका रूप धारण कर, हाज़री के रजिस्टर पर उन के हस्ताक्षर कर, उस दिन की परेड में स्वयम् शामिल हुए।

'रघुनन्दन' का सिकन्दराबाद जाने का पक्का इरादा :-

श्री प्रभु जी की करूणा कृपा से प्राप्त माता जी ने जो अपने आलोकिक ध्यान अनुभव मुझे सुनाये व आदरणीय प्रो. चमन लाल जी द्वारा आश्रम की दिव्य घटनायें सुन कर और श्री रघुवीर जी की दशम द्वार की समाधि व सिकन्दराबाद के दिव्य अनुभवों को जान कर प्रभु प्राप्ति की तीव्र लग्न 'रघुनन्दन' के मन में हिलोरें लेने लगीं। तो श्री रघुवीर जी के दर्शन करने के लिए 'रघुनन्दन' ने सिकन्दराबाद जाने का पक्का ईरादा कर लिया। इस के लिए जब माता जी से वहाँ जाने की आज्ञा मांगी तो वह 'रघुनन्दन' का पक्का ईरादा और पूरी तैयारी देख सोच में पड़ गईं और उन्होंने आश्रम में जाकर प्रो. कपूर जी को सारी बात बता दी। प्रो. कपूर जी शीघ्रता से माता जी के साथ नई आबादी घर में आए और श्री रघुवीर जी को मिलने की मेरे मन में पूरी तड़प देख कर उन्हों ने कहा कि यह भी हो सकता है कि श्री रघुवीर जी आप को किसी कारण वहां न मिलें इस लिए आप यहाँ रुक कर उन का इन्तजार कर लें तो शायद श्री प्रभु जी आप के पक्के संकल्प को देख कर उन को शीघ्र ही यहां आश्रम में ले आने की कृपा कर दें। इस पर 'रघुनन्दन' ने प्रो. कपूर जी की आज्ञा को मान कर अपने मन को बड़ी मुश्किल से समझाया और श्री रघुवीर जी के आश्रम में आने की बाट देखने लगा। दूसरे ही दिन शाम को श्री रघुवीर जी 38-आर माडल टाऊन में आ गए और वहाँ से सीधे आश्रम गए और मुझे वहां बुला भेजा।

दीक्षा की आज्ञा :-

जब 'रघुनन्दन' आश्रम पहुँचा तो मंदिर के साथ वाले कमरे में श्री रघुवीर जी की उच्चारण समाधि लगी

हुई थी और आदरनीय प्रो. कपूर उन द्वारा उच्चारित शब्दों को अपने कागज़ों पर लिख रहे थे। मंदिर में श्री प्रभु जी को प्रणाम् करने के बाद, जब 'रघुनन्दन' ने साथ वाले कमरे में समाधिस्थ श्री रघुवीर जी को पहली बार देखा तो मेरा सिर अपने आप उन के चरणों में झुक गया, सारे शरीर के रौगंटे खड़े हो गए और आखों से लगातार आंसूओं की धारा बहने लगी। तब वहाँ पर एक और प्रो० के अपने पी.एच.डी. करने के वारे में प्रश्न पूछने के बाद, मेरे मन में भी कुछ पूछने के विचार उठे। अन्तर्यामी श्री प्रभु जीने पूछा कि "कहो बेटा! क्या पूछना चाहते हो?" 'रघुनन्दन' ने हाथ जोड़ कर निवेदन किया कि 'प्रभु जी मेरे गुरू कौन है'? इस प्रश्न पर प्रभु श्री रामलाल जी महाराज और महाप्रभु भगवान् सदाशिव जी महाराज की कुछ समय तक इस सम्बंध में बातें हुईं। उस के बाद श्री प्रभु रामलाल जी महाराज ने कहा कि बेटा !"तुम्हारे गुरू महाप्रभु भगवान् सदा शिव स्वयम् हैं। तब 'रघुनन्दन' ने महाप्रभु भगवान् सदाशिव जी को प्रणाम् कर प्रार्थना की "हे महाप्रभु भगवान् सदाशिव जी महाराज मेरा सर्वस्व (तन,मन,धन) आप के श्री चरणों में समर्पित है इसे स्वीकार करें और इस बालक को अपनी शरण प्रदान कर दीक्षा दीजिए।" श्री महाप्रभु जी ने आज्ञा प्रदान की "कि तुम्हारी दीक्षा हमारे द्वारा इस इतवार 29-8-1954 को होगी। शेष विस्तार में हम चमन लाल को लिखवा देंगें। वह तुम्हारी दीक्षाकाल के बाद तुम्हें बता देगा।"

श्री रघुवीर जी की उच्चारण समाधि काफी देर तक चली और प्रो. कपूर जी सब कुछ नोट करते रहे। उनकी समाधि की उत्थान अवस्था के बाद, श्री रघुवीर जी जब घर (38-आर माडल टाऊन) चलने लगे तो उन्हों ने मुझे भी प्यार से अपने साथ बुला लिया। वहाँ जाकर वहन शीला, उस के पिता जी एडवोकेट जगदीश मित्र शर्मा व उस की माता जी से परिचय हुया। फिर हम सब ने मिल कर रात का भोजन किया। इस के बाद शीला ने अपने भाई श्री रघुवीर जी को प्रभु कृपा से कैसे प्राप्त किया वह सारी घटना कह सुनाई। इस पर वहन शीला की माता जी ने कहा कि हमारी बेटी शीला एक भाई के लिए रोती रहती थी अब तो श्री प्रभु जी ने इस को रघुवीर और रघुनन्दन दो भाई दे दिये हैं। 'रघुनन्दन' श्री रघुवीर जी के साथ उन के कमरे में ही रहा। फिर सुबह उठ कर, आश्रम में प्रकट श्री गंगा जल में स्नान किया।

होशियारपुर आश्रम के नल में श्री गंगा जी का प्रकट होना (ई. सन् 1954) :-

श्री रघुवीर जी की उच्चारण समाधि में श्री प्रभु जी ने एक दिन के लिए श्री गंगा जी की धारा को आश्रम के नल में लाने की तारीख प्रो. कपूर जी को लिखवाई हुई थी। इस लिये उन्होंने सब को उसके बारे में पहले से ही सूचित किया हुआ था। उस दिन वहाँ पर कई लोगों ने शीशे की खाली साफ बोतलों में हैन्डपम्प द्वारा आया श्री गंगा जी का जल भरा और उन बोतलों के जल को टेस्ट करने के लिए सालों तक रखा। उस पानी में न तो कोई जाला पड़ा और न ही वह खराब हुआ। 'रघुनन्दन' ने भी वहाँ कई भक्तों के साथ गंगा जी के जल में स्नान किया।

ऋषिराम पेटर के घर से श्री प्रभु रामलाल जी महाराज के जटाधारी स्वरूप को लाकर आश्रम में विराजमान करना :- (ई. सन् 1954)

श्री रघुवीर जी के इस बार सिकन्दराबाद से आने से पहले, पेंटर ऋषिराम ने श्री प्रभु राम लाल जी महाराज का जटाधारी स्वरूप तैयार करके, आश्रम में सूचना दे दी थी। इस लिये श्री रघुवीर जी 'रघुनन्दन' को अपने साथ ले कर पेंटर ऋषिराम के घर, रिक्षा में, उस स्वरूप को लेने के लिए गये। श्रीप्रभु जी का जटाधारी स्वरूप तैयार था मगर ऋषि राम रो रहा था। श्री रघुवीर जी द्वारा रोने का कारण पूछने पर उस ने बताया कि उसने तो शर्त द्वारा यह चाहा था कि श्री प्रभु जी मेरे सामने बैठे रहेंगे और वह सारे समय उन के दर्शन करता रहेगा। मगर हुआ यह कि उसने श्रीप्रभु जी के शरीर के जो अंग जैसे आँख, नाक, कान, वाल, मुंह आदि पेंट करने थे तो उसे केवल उस अंग का वह भाग ही दिखाई देता था। ऋषिराम ने आगे कहा कि उसे अब तक श्रीप्रभु जी के पूरे स्वरूप के दर्शन नहीं हुए। श्री रघुवीर जी ने जबाव दिया कि तुम्हारी शर्त ही यही थी। तुम्हें तो पहले ही कहा था कि शर्त मत रखो और काम आरम्भ करो। मगर तुम ने तो केवल अपनी इस शर्त पर ही काम करना स्वीकार किया था। इस लिए श्री प्रभु जी ने जैसा तुमने चाहा वैसा ही किया। इस के बाद श्री प्रभु जी के स्वरूप को ले कर हम दोनों रिक्शा में आश्रम चले आए और श्री प्रभु जी को वहाँ आकर विराजमान कर दिया। आज भी वही स्वरूप होशियारपुर के योग साधन आश्रम में उसी स्थान पर विराजमान है।

रघुनन्दन की श्री महाप्रभु भगवान् सदाशिव जी महाराज द्वारा दीक्षाः-

श्री रघुवीर जी से आज्ञा ले, रात को 'रघुनन्दन' नई आबादी वाले घर में माता जी के पास गया और उन को अपनी दीक्षा के बारे में सब कुछ बता दिया जो कल सुबह रविवार को आश्रम में होने वाली थी। माता जी से बात कर 'रघुनन्दन' सोने के लिए चला गया। मगर यह मन श्री रघुवीर जी, माता जी और शीला शर्मा पर हुई श्री प्रभु जी की अपार करूणा कृपा लीला को बारमबार याद करके भाव विभोर हो रहा था और सोच रहा था कि जिन की मुझे खोज थी वह मिल गए हैं। पूर्व जन्मों के संस्कारों के कारण 'रघुनन्दन' के मन में जो बचपन से ही श्रीप्रभु जी को गुरू रूप में प्राप्त करने की प्रवल लालसा थी वह कल सुबह गुरू दीक्षा द्वारा पूरी हो जाएगी। श्री प्रभु जी की अपने ऊपर हुई इस अपार करूणा कृपा को याद करके 'रघुनन्दन' का मन अधीर हो उठा और आंखों से पानी की झड़ी लग गई। ऐसे में नीद कहाँ आनी थी, सुबह हो गई तो आश्रम जाने के लिए तैयार हो गया। माता जी से आशीर्वाद व आज्ञा लेकर प्रस्थान किया।

मुझे आश्रम पहुँच कर पता चला कि मेरे 38–आर माडल टाऊन घर से जाने के बाद श्री रघुवीर जी आश्रम में आकर समाधिस्थ हो गए। उन की उच्चारण समाधि में श्री महाप्रभु भगवान् सदाशिव महाराज जी प्रो. कपूर जी को सारी रात कुछ लिखवाते रहे। 'रघुनन्दन' ने साधारण पुष्प प्रभु चरणों में भेंट कर प्रणाम् किया और दीक्षा के लिये प्रार्थना की। श्री महाप्रभु जी ने कहा कि बेटे! ''तुम्हारे आश्रम आने से पहले तुम्हारी दीक्षा की पूरी तैयारी कर ली गई थी और दीक्षा के बाद वह सब चमन लाल तुम्हें लिखवा देगा। हम तुम्हारी दीक्षा की आरती में स्वयम् रहेंगे। इस के बाद मंदिर में श्री प्रभु जी की आरती हुई और श्री रघुवीर जी की उच्चारण समाधि में श्री प्रभु रामलाल जी महाराज ने मुझे अपनी कृपा से अपना प्यार भरा आशीर्वाद और लाहौर से अपना प्रिंट करवाया स्वरूप प्रदान किया ।

आप न आते तो कैसे, आप को पाता प्रभु! आप न लेते शरण में, तो भटक जाता प्रभु।

आप ने चरणी लगाया, मेहरबानी आप की ।आप ने अपना बनाया, मेहरवानी आपकी।।

श्री रघुवीर जी की दशमद्वार समाधि की अद्भुत लीला :–

श्री रघुवीर जी अपनी उच्चारण समाधि के बाद रघुनन्दन को अपने साथ ले कर 38–आर घर में आ गये और हम दोनों वहीं रहने लगे। दो तीन दिन वहाँ रहने के बाद रघुनन्दन को 102° बुखार हो गया। श्री रघुवीर जी मुझे डाक्टर के पास उपचार के लिये ले गये। डाक्टर ने जाँच करके दवाई दे दी। 'रघुनन्दन' के मन में विचार आया कि इस डाक्टर को पैसे देने का कोई संस्कार होगा जिसके लिये श्री रघुवीर जी मुझे इस के पास लाए हैं। अब वह पूरा हो गया इस लिए वह सारी दवाई श्री रघुवीर जी के सामने नाली में 'रघुनन्दन' ने वहा दी। घर आकर श्री रघुवीर जी ने बड़े प्यार से मुस्कराते हुऐ मुझे अपना साबुन देते हुये कहा कि ''सूद साहब! गुसलखाने में जाकर अच्छी तरह से स्नान कर लों।'' वहाँ स्नान करने के बाद मेरा बुखार जाता रहा। अगले दिन हम दोनों आश्रम गए। वहां श्री रघुवीर जी की फिर दशमद्वार की उच्चारण समाधि लग गई। वह कई दिन समाधि में पड़े रहें। खाना पीना बिल्कुल बन्द रहा। उनके द्वारा उच्चारित शब्दों को रात दिन आदरनीय प्रो. कपूर जी लिखते जाते थे। फिर एक दिन श्री रघुवीर जी की नब्ज भी बन्द हो गई। तो उसी समय डाक्टर को बुलाया गया। डाक्टर ने खून का दवाव मापा तो बिल्कुल ठीक निकला। लेकिन उनकी हृदय गति बड़ी धीमी थी इस कारण डाक्टर ने इन्जैक्शन लाने के लिये कहा। इस पर श्री प्रभु जी ने प्रो. चमन लाल जी को कहा कि ''रघुवीर की दशमद्वार की समाधि है और यह दस दिन के वाद खुलेगी। डाक्टर की दवाई व इन्जैक्शन इन को मत देना।'' श्री प्रभु आज्ञा अनुसार श्री रघुवीर जी को कोई दवाई व इन्जैक्शन नहीं दिए गये। दसवें दिन श्री रघुवीर जी की भ्रसरिका खूब चली तो प्रो. कपूर जी ने प्रभू आज्ञानुसार श्री रघुवीर जी के सिर की नाडियों को जैसे दबाया तो श्री रघुवीर जी बिल्कुल ठीक उठ कर बैठ गए। फिर हम दोनों 38–आर घर चले गए। वहाँ जाकर भोजन किया। वाद में वहन

शीला अपने भाई रघुवीर के साथ बच्चों की तरह खेलने लगी और उन का अलोकिक प्यार देख शीला के माता पिता आनन्दित हो गए। श्री रघुवीर जी के प्रति शीला के माता पिता का प्रेम, भगवान श्री कृष्ण और बाबा नन्द यशोधा के प्रेम की याद दिलाता था। घर के इस आनन्दमय वातावरण में 'रघुनन्दन' अपने सब सम्बन्धों को भूल गया और वहां कैसे इतने दिन व्यतीत हो गए इस का कुछ पता ही नहीं चला। कई दिनों के बाद नई अबादी वाले माता जी ने, रविवार के आश्रम सत्संग के बाद, श्री रघुवीर जी को कहा कि आप एक दिन के लिए 'रघुनन्दन' को घर अवश्य भेज दीजिए क्योंकि मुक्तसर से आकर वह हमारे पास आया ही नही। उसी दिन रात के खाने के बाद श्री रघुवीर जी ने मुझे नई आबादी माता जी के पास जाने की आज्ञा दी। उनके पास से जाने को मन तो नहीं करता था पर आज्ञा आधीन रात को जाना पड़ा। 38-आर घर से निकल कर, चो के साथ साथ वाली सड़क से 'रघुनन्दन' नई आवादी की सड़क पर लगी लाईटें की ओर अपने कदम बढ़ाता चला गया। सारी रात भर चलता रहा और सुबह होशियारपुर से 15/20 मील की दूरी पर गांव भुन्गा पहुंच गया। तब सुबह हो गई तो वहाँ से ट्रक के द्वारा माडल टाऊन 38-आर घर में आया तो माता जी ने कहा कि रघुवीर भी तुम्हारे साथ घर से चला गया था और अभी अभी अपने कमरे में गया है। इस में प्रभु की क्या लीला थी वह तो वही जाने। अगले रविवार के सत्संग में नई आबादी वाले माता जी ने जब श्री रघुवीर जी से पूछा कि आप ने 'रघुनन्दन' को हमारे पास क्यूँ नहीं भेजा। तो उन्हों ने माता जी से कहा कि ''माता जी, मैं ने तो 'रघुनन्दन' को रात के खाने के बाद आपके पास भेज दिया था।'' इस पर 38-आर वाले माता जी ने उस दिन की सारी कहानी उनको सुना दी। माता जी ने श्री प्रभु जी की इच्छा जान, फिर दोवारा ऐसा आग्रह कभी नहीं किया।

शीला के वर की तलाशः-

श्री रघुवीर जी की छुट्टी समाप्त होने वाली थी। शीला की माता जी को उस की शादी की बड़ी फिकर हो रही थी। एक दिन शीला की माता जी ने श्री रघुवीर जी को कहा कि ''बेटे! अब तुम्हारी बहन शीला बड़ी हो गई है और इसने अपनी पढ़ाई भी पूरी कर ली है इस लिए किसी अच्छे लड़के की तलाश करनी आरम्भ कर दो।'' श्री रघुवीर जी ने जबाव दिया माता जी आप चिंता मत करो, लड़का स्वयम् ही घर आ जाएगा। इस के बाद श्री रघुवीर जी ने मुझे कहा- ''सूद साहब मैं सिकंदराबाद से शीला की शादी में नहीं आ सकूंगा। मुझे अब छुट्टी नहीं मिलेगी। मेरे स्थान पर भाई का सारा फर्ज आपको करना होगा।'' रघुनन्दन ने कहा ''जैसी आप की इच्छा वैसा ही करूँगा।'' श्री रघुवीर जी अगले दिन सिकन्दराबाद चले गए।

शीला बहन का शगुन और विवाह :-

श्री रघुवीर जी के सिंकदराबाद को जाने के कुछ दिन बाद, जालंधर से एडवोकेट शर्मा जी से अपने इन्कम टैक्स के कागज़ लेने दो व्यक्ति 38-आर घर में आए। शर्मा जी उन से बातचीत कर रहे थे, तो माता जी ने

उन के लिए चाय बना कर मुझे बुला कर कहा कि ''बेटे ! यह चाय और मिठाई शीला से कहो उनको दे आए''। उधर बातचीत में शर्मा जी अपनी बेटी के लिए किसी अच्छे खानदानी शर्मा परिवार के लड़के के बारे में उन से पूछ रहे थे। इतने में शीला वहां चाय ले कर आ गई। शर्मा जी ने कहा यह हमारी बेटी है इसने अभी बी.ए. पास किया है। शर्मा जी के सायल ने कहा कि मेरे साथ आया मेरा मित्र जनक राज जालंधर के खानदानी हकीम तेजराम शर्मा जी का पुत्र है अभी बी.ए. के बाद एल.एल.बी. पास किया है। इस पर माता जी ने जनक राज से पूछा कहो बेटा तुम्हारी क्या मर्जी है। जनक राज ने जबाव दिया कि मुझे लड़की पसंद है आप मेरे घर वालों से बात कर लें। 'रघुनन्दन' ने शीला को सारी बात बता दी और कहा कि वहन चाय के वरतन उठाने के बहाने आप उस लड़के को अच्छी तरह देख आओ। माता जी के कहने पर शीला और जनक राज ने आपस में बातचीत भी की। इस के बाद वह दोनों मित्र अपनी कार में जालंधर चले गए। पिता जी ने उस के घर वालों से बात कर, पत्री मिला, रिशता पक्का करके शगून दे दिया। उसके बाद जल्दी ही एक मास में विवाह का महूर्त निकल आया। श्री रघुबीर जी को फोन पर सारी बात बता कर शर्मा जी ने बेटी को शादी पर आने के लिए कहा। श्री रघुवीर जी ने छुट्टी के लिए अपने ओफिसर को लिखा मगर जब उस ओफिसर ने मना कर दिया तो श्री रघुवीर जी ने शादी पर न आ सकने के लिए अपनी मजबूरी बता कर माता जी से कहा कि सूद साहब मेरी जगह भाई का सारा फर्ज निभाये गें आप चिंता न करना। जल्दी ही शीला का विवाह होशियारपुर में हुआ। बारात जालंधर से आई तो भाई का सारा फर्ज प्रभु आज्ञा अनुसार 'रघुनन्दन' ने अदा किया और शादी के बाद शीला बहन के जालंधर ससुराल घर में एक रात रह कर उस का फेरा 38-आर घर में ड़लवा कर 'रघुनन्दन' नई आबादी बाले घर चला गया।

'रघुनन्दन' की दोबारा मुक्तसर के कालेज में जाने की तैयारी :-

'रघुनन्दन' को गोरमिंट कालेज मुक्तसर से दोबारा अस्थाई रूप पर काम करने का पत्र मिला। तो प्रो. कपूर जी ने मुझे अपने शिष्य कंवर हरबंसलाल इन्सपैक्टर (सी.आइ.डी) के फिरोज़पुर घर का पता दिया और रात को उनके घर पर रुक कर फिर बस से मुक्तसर जाने का सुझाव दिया। अगले दिन अपने माता पिता जी की आज्ञा लेकर 'रघुनन्दन' ने फिरोज़पुर की गाड़ी पकड़ ली। फिरोजपुर स्टेशन से रिक्शा करके 'रघुनन्दन' कँबर हरबंसलाल जी के घर आ गया।

कँवर हरबंसलाल जी का ध्यान अनुभव :-

अपने घर में रात की आरती करके कंवर जी श्री प्रभु रामलाल जी महाराज के ध्यान में बैठ गए। जब ध्यान से उठे तो उन्हों ने मुझ से कहा कि आज उनकी इच्छा श्री प्रभु जी का निराकार रूप देखने की थी इस लिये आज ध्यान में श्री प्रभु जी ने अपना निराकार रूप दिखाया है- जैसे अनन्त सूर्य प्रकट हो जाएं तो उन की जितनी रोशनी हो, ऐसा तेज सारे विश्व में व्याप्त था। यहां पर एक सूर्य की रोशनी में आँखे नही खुलती और यह प्रकाश आँखो

को खाता है लेकिन वह तेज आँखों को सुहावना लगता था और आँखों को खुला रखने में आनन्द मिलता था। अगले दिन सुबह अल्पाहार लेकर 'रघुनन्दन' ने वहाँ से मुक्तसर की बस पकड़ ली।

श्री केवलकृष्ण मरवाहा के माता ज्ञानदेवी का स्वप्न अनुभव :-

मुक्तसर के बस अड्डे से 'रघुनन्दन' सीधा श्री केवलकृष्ण मरवाहा के घर में गया और वहाँ उनके सारे परिवार को मिल कर और सामान को वहां छोड़ कर फिर कालेज चला गया। कालेज के बाद, वहाँ पर 'रघुनन्दन' ने श्री रामजीदास बी.ए. के मकान में एक कमरा किराये पर ले कर और श्री केवलकृष्ण की माता जी को बता कर, सामान को उस कमरे में रख दिया। उस कमरे में श्री प्रभु जी महाराज के स्वरूप को विराजमान कर आरती की, फिर खाना खा कर वहाँ सो गया। अगले दिन माता श्रीमती ज्ञानदेवी जी उस कमरे में आईं और जैसे ही उन्हों ने श्री प्रभु जी के स्वरूप को देखा तो नतमस्तक हो प्रणाम करके, उन के नाम और जन्मस्थान के बारे में पूछा। मेरा जवाब सुनकर वह बड़ी हैरान हुई और अपने साथ हुई इस घटना को सुनाया।

माता जी ने बताया कि एक वर्ष पूर्व उन्हें इन के ऐसे ही जटाधारी स्वरूप के स्वपन में दर्शन हुए थे और प्रणाम करने पर इन्हों ने आशीर्वाद दिया और पूछा कि बेटी उदास क्यों हो। ज्ञानदेवी ने प्रार्थना करी कि महाराज घर में छः सदस्य हैं- तीन लड़के, एक लड़की, एक इन बच्चों के 75 वर्ष के बूढ़े दादा जी । इस समय बड़ा बेटा होशियारपुर में एम.ए. कर रहा है। दादा जी नकशानवीस हैं। वह लोगों के घर व दुकान आदि के नकशे बनाते हैं उस से घर का खर्च बड़ी मुश्किल से चलता है। इस पर श्री प्रभु जी ने कहा कि "तुम्हारे बड़े बेटे की जल्द ही अकाऊंटस ओफिसर की नौकरी लग जाएगी और दोनों छोटे बेटे स्कूल में अध्यापक लग जाएगे। अब चिंता छोड़ दो।" यह कह कर महाराज आलोप हो गये। उनके कहने के अनुसार जल्द ही केवल कृष्ण अकाऊंटस ओफिसर लग गया और उससे छोटे दोनों भाई यहाँ स्कूल में अध्यापक बन गए हैं। यह सब इनकी करूणा कृपा से हुआ है।

श्री रघुवीर जी का मुक्तसर में आगमन :-

ई. सन् 1955 में श्री रघुवीर जी दो दिन के लिए मुक्तसर आए उन्हों ने कालेज के छात्रों को समय पर नेति तथा अन्य योग के साधन करते देखा और हर रोज शाम के समय कालेज के सब छात्रों को अपने अपने टियुटोरियल युनिटों में आकर कालेज को नगर से जारही धूलभरी सड़क पर सब को समाज सेवा करते देखातो बड़े प्रसन्न हुए। श्री रामजी दास मालिक मकान ने प्रार्थना करके अपने घर में सत्संग का आयोजन कर अगले दिन अपने पड़ोसिओं और सम्बंधियों को निमंत्रण दिया। इस सत्संग के बाद प्रो० कपूर जी का पत्र पढ़ कर श्री रघुवीर जी होशियारपुर चले गए।

सत्संग में आई एक वृद्धा स्त्री पर प्रभु कृपा :-

श्रीरामजी दास के घर बड़ी धूम धाम से सत्संग व कीर्तन हुआ जिसमें काफी लोगों ने भाग लिया। इस सत्संग में एक वृद्धा स्त्री का ध्यान लग गया और वह कई घंटे समाधि में रही। जब वह माता समाधि से उठी तो लोगों के पूछने पर उस ने बताया कि आज उसे भगवान श्रीकृष्ण जी के और उनकी दिव्य लीलायों के दर्शन यहाँ पहली बार हुए है। कैसी है यह श्री प्रभु जी की अपार करूणा कृपा!

रघुनन्दन की पंजाब विश्वविद्यालय के भौतिक विज्ञान विभाग में नियुक्ति :- गत वर्ष की तरह इस वर्ष भी छात्रों की छुट्टियां आरम्भ होते ही 'रघुनन्दन' को भी कालेज सर्विस से छुट्टी हो गई तो होशियारपुर आना हो गया। रविवार सत्संग से पहले प्रो० कपूर जी ने मुझे बताया कि पंजाब यूनिवर्सिटी भौतिक विज्ञान के डा. आनन्द आप को याद कर रहे थे सो आप ने उन से मिल लेना। सत्संग के बाद 'रघुनन्दन' 38R वाले माता जो के साथ उन के घर चला गया और पिता जी से कुशल समाचार जानने के बाद श्री रघुवीर जी और शीला बहन का प्रोग्राम पूछा। फिर हम सब ने मिलकर खाना खाया और बातचीत की तो समय का पता ही नही चला। अंधेरा होने पर 'रघुनन्दन' उन से आज्ञा ले कर नई आबादी वाले घर में आ गया।

अगले दिन डा० आनन्द से कालेज में मिला तो उन्होंने टैक्नीकल असिसटेंट कम लैक्चरर के नये पद को भौतिक विज्ञान विभाग, पंजाब यूनिवर्सिटी में आरम्भ करने का विचार बताया और मुझ से पूछा कि क्या आप इस पद पर काम करने को तैयार हो? मेरे हाँ कहने पर वह बहुत खुश हुए। उन्होंने कहा कि कल ही इस नये पद की मंजूरी के लिए लिख दूँगा। तीन माह के भीतर इस नये पद की मंजूरी भी हो गई और मेरी नियुक्ति भी। कालेज में जुलाई के दाखिले के बाद 'रघुनन्दन' ने पी.यू. फिज़िक्स विभाग गोरमिंट कालेज, होशियारपुर में काम करना आरम्भ कर दिया। श्री प्रभु जी की अपार करुणा कृपा से रविवार का सत्संग और घर में माता पिता जी की सेवा का अवसर भी प्राप्त हो गया। श्री रघुवीर जी की बदली जालंधर केंट में हो गई अब उन से मिलना भी आसान हो गया।

रघुनन्दन की एम एल एन नेशनल कालेज यमुनानगर में नियुक्ति :

'रघुनन्दन' ने P.U. में लगभग एक वर्ष तक इस पोस्ट पर काम किया। यह पोस्ट थी तो लेक्चरर ग्रेड की, पर काम था नये सामान को मंगवाना, चेक करना, खराब सामान को ठीक करवाना, रिसर्च में निर्देश देना इत्यादि। मुझे पढ़ाने का अवसर ही नहीं मिला इस कारण मन प्रसन्न नही था। ई-सन् 1956 July में 'रघुनन्दन' ने यह नौकरी छोड़ कर मुकन्दलाल नेशनल कालेज यमुनानगर में प्रोफेसर की पोस्ट पर काम करना आरम्भ कर दिया। वहां कालेज के छात्र शाम के समय, योग के साधन हर रोज़ कालेज में करते। श्री रघुवीर जी का कालेज के स्टाफ और छात्रों के लिए कालेज के हाल में योग पर प्रवचन हुआ और जो छात्र हर रोज़ शाम को वहां योग

साधना करते थे उन का श्री रघुवीर जी तथा प्रिंसिपल रिहान के साथ ग्रुप फोटो भी हुआ। उस के बाद श्री रघुवीर जी होशियारपुर चले गए।

लुधियाने वाले सरदार जी पर अनोखी प्रभु कृपा (ई. सन् 1956) :-

वर्ष ई सन् 1956 में 'रघुनन्दन' का होशियारपुर आश्रम में व्यास पूजा मनाने का प्रोग्राम बना क्यों कि श्री रघुवीर जी भी जालंधर से होशियारपुर व्यास पूजा पर आ रहे थे। इसलिए 'रघुनन्दन' ने श्री रघुवीर जी की यमुनानगर (कालेज वाली) ग्रुप फोटो, उन को दिखाने के लिए अपने साथ रख ली और अम्बाला केन्ट की गाड़ी पकड़ ली। अम्बाला से जालंधर जाने वाली फरंटियर मेल गाड़ी में सरदार जी के साथ वाली सीट मिली। सरदार जी से बात करने पर पता चला कि वह व्यास पूजा के लिये अपने गुरु जी के पास लुधियाना जा रहे हैं और झांसी के चार भजन गाने वालों को भी वे अपने साथ ले कर वहाँ जा रहे हैं। जब सरदार जी को पता चला कि 'रघुनन्दन' यमुनानगर के कालेज में प्रोफेसर है और लिफाफे में वहाँ के प्रिंसीपल और योग साधना करने वाले छात्रों की फोटो है तो उन्हों ने वह ग्रुप फोटो वाला लिफाफा मांगा। जैसे ही सरदार जी ने वहाँ उस फोटो को देखा तो उन के नेत्रों से गंगा बह निकली। काफी समय तक उन की यह दशा बनी रही और आंखों से नीर चलता रहा। फिर उन्होंने मुझे बुला कर पूछा कि प्रिंसीपल के वाई ओर कौन बैठे हैं? मेरे बताने पर सरदार जी ने कहा कि वह हिन्दु परिवार से हैं और अपने माता पिता के सब से बड़े पुत्र हैं इस कारण उन्हें सरदार बना दिया गया। उन्हें उन की माता जी द्वारा भगवान श्री कृष्ण के प्यार के संस्कार बचपन से मिले हैं। इस कारण उन के रोम रोम में भगवान श्री कृष्ण जी का वास है। इस पर 'रघुनन्दन' ने कहा कि यह तो बड़े सौभाग्य की बात है पर आप रो क्यों रहे हो? सरदार जी ने जवाब दिया कि जब से उन्होंने इस ग्रुप फोटो को देखा है तब से उन के राम रोम में विराजमान भगवान कृष्ण जी के स्थान पर (श्री रघुवीर जी की फोटो पर अपनी अंगुली लगाते हुए) यह विराजमान हो गए हैं। इस लिए भगवान कृष्ण को न पा कर यह आंखों से आंसू अपने आप बह रहे हैं। इतने में लुधियाना स्टेशन का आऊटर सिगनल गुजरा तो सरदार जी ने वह ग्रुप फोटो लिफाफे में बन्द करके मुझ दे दी। अपने अन्य साथियों को गाड़ी से नीचे उतरने के लिए तैयार रहने को कहा। फिर उन्होंने मुझे भी वहाँ रुक कर होशियारपुर जाने को कहा। इस पर 'रघुनन्दन' ने उन से क्षमा मांग कर कहा कि फिर कभी अगर श्री प्रभु जी ने चाहा तो आप के दर्शन करूँगा। तो सरदार जी ने कहा कि लुधियाना में सेड़ल साईकल वर्कस, मिलरगंज में हमारी दुकान है अगर हो सके तो मुझे वहाँ याद कर लेना। इस के बाद वह सब लुधियाना के प्लेटफार्म पर गाड़ी से उतर गए।

व्यास पूजा पर माता जी के साथ हुई घटना :-

- अगले दिन आश्रम के व्यास पूजा सत्संग में भाग लेने 'रघुनन्दन' अपने नई आबादी वाले माता जी के

साथ पैदल जा रहा था तो बाजार में गरूने (फालसे जैसा पहाड़ी मीठा फल काले जामुनी रंग का) बिक रहे थे। श्री प्रभु चरणों में अर्पण करने के लिए वह खरीद लिए और माता जी को दे दिए। जब हम आश्रम पहुंचे तो श्री प्रभुजी को प्रणाम् कर जब श्री रघुवीर जी से मिले तो उन्होंने माता जी से वह गरूनो वाला लिफाफा माँगा। अभी सत्संग आरम्भ नही हुआ था। आदरणीय प्रो० कपूर जी साथ वाले कमरे में तैयार हो रहे थे। माता जी ने श्री रघुवीर जी से कहा कि यह गरूने श्री प्रभु जी के लिए हैं। फिर क्या था! इस पर श्री रघुवीर जी और माता जी में छीना झपटी होने लगी। माता जी वह गरूने वाला लिफाफा छोड़ नहीं रहीं थी और श्री रघुवीर जी उन का सेवन करने के लिये छीन रहे थे। यह प्रो० कपूर जी, मिसिज कपूर तथा अन्य वहां आश्रम में आए सब भक्तों ने देखा। उन गरूनों का जामनी मीठा रस निकल निकल कर माता जी के बालों पर पड़ता रहा। बड़ी मुश्किल से उन गरूनों में से कुछ रस निकल जाने पर जब माता जी से वह लिफाफा श्री रघुवीर जी ने छीन लिया तो उन गरूनों का प्यार से श्री रघुवीर जी ने ऐसा भोग लगाया जैसे भीलनी के वेरों का भगवान राम ने। कैसी है यह करुणा कृपा लीला, माता जी के काफी बाल जिन पर यह रस गिरा था सारी ऊमर के लिए जामनी रंग के ही रहे। बाद में माता जी कई बार इस घटना को याद करके प्रेम विभोर हो जाती थीं।

होशियारपुर आश्रम में व्यास पूजा सत्संग की समाप्ति होने के बाद श्री रघुवीर जी को 'रघुनन्दन' ने यमुनानगर कालेज की ग्रुप फोटो दिखा कर और लुधियाना वाले सरदार जी की घटना सुना कर यमुनानगर की बस पकड़ ली। कुछ दिनों के बाद प्रो० कपूर जी का मुझे पत्र मिला जिस में उन्होंने माता जनक दुलारी मित्तल की श्री प्रभु जी द्वारा दी गई दीक्षा की घटना का समाचार और उन का जगाधरी वाले घर का पता लिखा हुआ था। प्रो० कपूर जी ने यह भी सूचना दी थी कि हर रविवार शाम को उन के घर सत्संग होता है अगर हो सके तो आप सत्संग में जाने की कोशिश करना।

जगाधरी वाले माता जनक दुलारी मित्तल जी की प्रभु दीक्षा की घटना :-

जगाधरी वाले मित्तल जी का बेटा 'घई इन्जीनियरिंग कालेज' होशियारपुर का छात्र था वह अपने अन्य होस्टल के छात्रों के साथ योग साधन आश्रम में साधना करने जाता था। वह रविवार के सत्संग में भी कभी कभी जाया करता था। एक दिन होस्टल के खाने से उसे अन्य छात्रों के साथ 'फूडप्वाइजनिग' हो गई। अस्पताल में सब बच्चों का ईलाज चल रहा था। इस कारण उस की माता जनक दुलारी जगाधारी से होशियारपुर आईं। जब उन को योग साधन के रविवार सत्संग का पता चला तो वह अपने बेटे के साथ रविवार सत्संग में गईं। आश्रम में जनक दुलारी की भ्रसरिका चली और वह समाधिस्थ हो गई। उन्हें श्री प्रभु रामलाल जी महाराज के ध्यान में दर्शन हुए और श्री प्रभु जी ने जब ध्यान में उन्हें बतलाया कि बेटी हम स्वयम् ही तुम्हें साधु के रूप में तुम्हारे घर में दीक्षा देकर आए थे और फिर जनक दुलारी की प्रार्थना पर श्री प्रभु जी ने वह अपना साधु वाला रूप और उन का दीक्षा

काल भी सारा ध्यान में दिखा दिया। तब माता जनक दुलारी मित्तल 10-12 दिन आश्रम में ही रहीं और उन का हर रोज ध्यान चलता रहा। उन्होंने अपने ध्यान में भगवान श्री कृष्ण और उन की गोपियों व ग्वालों के साथ हुई दिव्य लीलाओं को देखा। कैसी है यह श्री प्रभु जी की अपार करुणा कृपा लीला।

श्री रघुवीर जी का प्रेम जी के साथ विवाह (ई सन्-1956):-

यमुना नगर कालेज में मुझे श्री रघुवीर जी के विवाह का कार्ड मिला। उन का विवाह एक भक्त परिवार की सुकन्या प्रेम जी के साथ अम्बाला केन्ट में होना निश्चित हुआ था। विवाह में शामिल होने के लिए 'रघुनन्दन' ने कालेज से छुट्टी ले ली और ठीक समय पर लड़की वालों के स्थान पर जा कर बारात का इन्तजार करने लगा। बारात को सुन्दर भवन में ठहराया गया, वहाँ पर जलपान का पूरा प्रबन्ध था। शाम को मिलनी और जय माला उत्स्व के बाद बारात के भोजन करने और वेदी पर पंडित जी द्वारा विवाह की रस्में और फेरे आदि सम्पन्न हुए। श्री रघुवीर जी ने 'रघुनन्दन' को सारा समय अपने साथ रखा यह उन की अपनी कृपा थी। अगले दिन सुबह बस द्वारा बारात वधु को लेकर होशियारपुर सराज़ा चौंक वाले घर को चली गई। सराजा चौंक वाले घर पर बारात के स्वागत के लिये परिवार की महिलाए, आश्रम के भक्त और पड़ोसी तथा मित्र इन्तजार कर रहे थे। बारात के आने पर वहां स्वागत समारोह हुआ। नई आबादी वाले माता जी ने जब श्री रघुवीर जी को प्रेम जी के साथ शगुन डाल कर बधाई दी तो श्री रघुवीर जी ने माता जी से कहा कि माता जी अब 'रघुनन्दन' के विवाह की भी तैयारी आरम्भ कर दो। माता जी ने कहा कि फिर आप उस के लिए लड़की देखनी शुरु कर दो तो रघुवीर जी ने जवाब दिया माता जी आप लड़की देखने जाने ही वाले हो। कुछ दिनों के बाद मुझे यमुना नगर में पिता जी का पत्र मिला कि बेटे, तुम्हारी माता जी तुम्हारे पास यमुनानगर आ रही हैं तुम उन के साथ देहली जा कर लड़की देख आओ। 'रघुनन्दन' ने इस पत्र का जवाब तार द्वारा दिया कि पिता जी देहली 'रघुनन्दन' नही जायेगा आप छोटे भाई बलदेव को इस काम के लिए माता जी के साथ भेज दें। माता जी मनोरमा को देखने छोटे भाई बलदेव के साथ देहली गए और जैसी श्री प्रभु जी की इच्छा थी वैसा ही हुआ। थोड़े दिनों बाद होशियारपुर में शगुन की रस्म भी हो गई। श्री रघुवीर जी उस में आए हुए थे। वहां श्री रघुवीर जी और माता जी की बातचीत को सुन कर पता चला कि यह सब प्रभु इच्छा से ही हो रहा है।

माता चिन्तपूर्णि की ओर पद यात्रा :-

श्री रघुवीर जी के विवाह के बाद आदरणीय प्रो० कपूर जी ने आश्रम के जो भक्त माता चिंतपूर्णी की पग यात्रा पर उन के साथ जाने को तैयार हुए उन सब को साथ लेकर होशियारपुर से भरवाईं की ओर यात्रा आरम्भ कर दी। रास्ते में भक्त भजन बोलते जाते और जब चलते चलते थक जाते तो कुछ देर आराम करते तो वहाँ आदरणीय

प्रो० कपूर जी द्वारा प्रभु जीवन पर चर्चा होती। रास्ते में बालिका सत्या की भ्रसरिका लगातार चलती रहती। जब भक्त संगत गगरेट पहुँची तो महिलाओं ने वहाँ खाना तैयार किया। सब्जी में एक ने पहले से नमक डाल रखा था, गलती से दूसरी ने भी उस में नमक डाल दिया। खाना तैयार होने पर श्री प्रभु जी की आरती कर, भोग लगवा कर पहले प्रसाद प्रो० कपूर जी को परोसा गया। उन्होंने बड़े प्यार से प्रसाद ग्रहण किया। उसके बाद जब प्रसाद संगत को परोसा तो नमक अधिक होने से सब को सेवन में कठिनाई हो गई तो सब ने अपनी अपनी सब्जी में गर्म जल मिला कर प्रसाद को ग्रहण किया। जब बाद में प्रो० कपूर जी से नमक के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि उन को नमक का पता ही नही चला। आदरणीय प्रो० कपूर जी का मन खाने में नहीं था उन का मन था श्री प्रभु चरणों में इस कारण उन को सब्जी में नमक का पता ही नही चला। संगत ने रात को गगरेट में आराम किया फिर सुबह की आरती करके नाशते के बाद आगे की यात्रा आरम्भ कर दी।

शाम को भरवाँई स्थान की धर्मशाला में पहुंच कर संगत ने थोड़ा आराम किया। महिलाओं ने खाना बनाया और जैसे ही श्री प्रभु जी के स्वरूप की आरती करने की तैयारी होने लगी तो श्रीमती प्रेम जी (श्री रघुवीर जी की धर्मपत्नी) का ध्यान लग गया। उन की आवेश समाधि में माता चिंतपूर्णी ने कहा कि "आज मेरा सौभाग्य है कि इन के माध्यम से मुझे श्री प्रभु जी के बच्चों के साथ श्री प्रभु जी की आरती करने का अवसर मिल रहा है। कल जब आप मेरे स्थान पर आओगे तो मैं भी आप सब को आशीर्वाद देने स्वयम् अपने भवन में रहूँगी" फिर प्रेम जी ने प्रभु आरती उतारी और बाद में आंखें बन्द चरणामृत दिया। सब ने खाना खाया उस के बाद प्रेम जी का ध्यान खुला। रात को वहाँ धर्मशाला में रहने के बाद अगले दिन सुबह श्री प्रभु जी की आरती कर माता चिंतपूर्णी के भवन में जाकर माता को प्रणाम कर, आशीर्वाद लेकर, लंगर का सेवन कर, वापसी में वहां से बस लेकर होशियारपुर लौट आए। होशियारपुर बस अड्डे से सब प्रो० कपूर जी को प्रणाम कर अपने अपने घरों को चल दिए। 'रघुनन्दन' भी माता जी के साथ रिक्शा में नईआबादी आ गया और अगले दिन घर से यमुना नगर चला गया।

नेति क्रिया द्वारा कई वर्षों के जुकाम में पूरा लाभ :-

एक दिन यमुनानगर के मालिक मकान सरदार जी ने 'रघुनन्दन' से पूछा कि आप गुसलखाने में स्नान के लिए इतना समय क्यों लगाते हैं इस के जवाब में उन्हें 'रघुनन्दन' ने बताया कि मुझे वहाँ नेतिक्रिया आदि साधन भी करने होते हैं इस लिए समय कुछ अधिक लग जाता है। उन्होंने फिर नेतिक्रिया और उस के करने से होने वाले लाभ को जानना चाहा। उन्हें बतलाने पर कि इस से जुकाम कैसा भी हो प्रतिदिन करने से ठीक हो जाता है। यह सुन कर उन्होंने उसी दिन से Rubber Catheter को नेति के रूप में करना आरम्भ कर दिया एक माह के अन्दर उन के दो साल के जुकाम में पूरा लाभ हो गया। वह ठेकेदार थे और अपने अम्बाला के काम पर हर रोज सुबह

यमुनानगर से रेलगाड़ी द्वारा अम्बाला जाते और शाम को वहाँ से वापिस आते थे। यमुनानगर और अम्बाला केन्ट स्टेशनों के बीच वाले स्टेशन पर यह यात्री गाड़ी 20-25 मिन्ट के लिए मेल ट्रेन को रास्ता देने के लिए रुकती थीं। सरदार जी के जुकाम को जब पूरा आराम आ गया तो उन्होंने 10/12 cathetere हर रोज अम्बाला से खरीद कर अपनी बोगी के अन्दर के मुसाफरों को नेति करने के लाभ बता कर, नीचे पलेटफार्म पर लगे हैंडपम्प के पानी से उन को नेति करवाकर वह catheter उन को फरी में दे देते ताकि वह हर रोज़ सुबह अपने घर में नेति क्रिया करके जुकाम आदि से पूरा लाभ ले सकें। यह है श्री प्रभु चरणों की निष्काम सेवा। इस सेवा को उन्होंने अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया और मेरे वहां रहते उन्होंने कभी भी इस सेवा में नागा नहीं डाला।

पिता जी की अन्तिम यात्रा पर प्रभु अनुग्रह (ई सन् 1957) :-

यमुना नगर कालेज की ई सन् 1956 दिसम्बर की छुट्टियों में जब 'रघुनन्दन' होशियारपुर आया तो पता चला कि पिता जी अक्तूबर से बीमार चल रहे थे। उन के चलने पर सांस फूलता और कभी-कभी बाईं वाजू में दर्द होता। तब रघुनन्दन ने कालेज की छुट्टियों के बाद जनवरी फरवरी में अधिक मेहनत द्वारा छात्रों का सारा कोर्स पूरे रिवीजन के साथ समाप्त करवा दिया और प्रिंसिपल साहिब को जब पिता जी की बीमारी का बताया तो उन्होंने मुझे कालेज की छुट्टियों में घर जा कर पिता जी की सेवा करने की आज्ञा दी। होशियारपुर घर आकर 'रघुनन्दन' ने पिता जी की बीमारी की पूरी जानकारी डाक्टर से ली और उन की दवाई, परहेज और डाक्टर के अनुसार खाने की समयसूची बनाकर सारा कन्ट्रोल अपने हाथों में ले लिया। इस से उन्हें आराम आना आरम्भ हो गया। एक दिन 'रघुनन्दन' को किसी जरूरी काम के लिए बाहर जाना पड़ा तो अपने बड़े भाई को समझा कर उन के आश्वासन पर बाहर से जब लौट कर रघुनन्दन घर आया तो पिता जी की हालत पहले से भी अधिक खराब लगी। डाक्टर को बुलाया। उसने दवाई बदल दी और एक मरहम दिल के ऊपर मालिश करने के लिए दी। रसोइये ने मुझे बाद में बताया कि आप के जाने के बाद पिता जी ने हलवा पूरी बनवाकर खाया था क्योंकि उन्हें खाने का बहुत शौक था। अब दवाई से कोई फर्क नहीं पड़ा और उन की हालत बिगड़ती ही गई।

एक रात पिता जी को अचोताई लगी हुई थी वह कभी बैठते और कभी उठते। 'रघुनन्दन' के पूछने पर कि पिता जी आप को क्या हो रहा है? उन्होंने बताया कि दो सिंगों वाले यमदूत उन्हें दिखाई दे रहे हैं। उस समय वह बड़े परेशान थे। ऐसे में रघुनन्दन ने ब्रह्ममुहूर्त का समय जान पिता जी से उन का एक सब से प्यारा भजन सुनाने का आग्रह किया। पिता जी यह मेरा पहला और शायद आखरी प्यार भरा अनुरोध जान इसे ठुकरा न सके और जैसे ही उन्होंने अपना सब से प्यारा भजन "इतना तो करना स्वामी जब प्राण तन से निकलें" बोला उन की आंखों ने प्रभु प्रेम में आंसुओं की झड़ी लगा दी। अन्त मति सो गति। अन्तकाल में प्रभु की याद का विशेष महत्त्व है और

भगवत्प्राप्ति में ही जीव का कल्याण है।

श्री रघुवीर जी जालन्धर से होशियारपुर सुबह पहली रेलगाड़ी से आये और अपने घर आकर उन्होंने अपने बड़े बेटे टिटू को हमारे घर भेजा। टिटू ने घर आकर मुझे कहा कि डैडी जी अभी जालंधर से आए हैं और उन्होंने आप को बुलाया है।'रघुनन्दन' उसी समय उस के साथ चल पड़ा। घर जाकर जब श्री रघुवीर जी को प्रणाम किया तो उन्होंने पिता जी का हाल पूछा तो 'रघुनन्दन' ने कहा कि पिता जी को रात में बड़ी बेचैनी रही। यह जान कर वह तैयार हुए और मेरे साथ घर में आये। उस समय पिता जी नीचे वाले कमरे में लेटे हुए थे और पं० विष्णुदत्त उन को श्री गीता जी का पाठ सुना रहे थे। श्री रघुवीर जी वहाँ आसन पर दस मिनट बैठे और फिर मेरे साथ घर के ऊपर प्रभु मंदिर में चले आये। वहाँ पर श्री रघुवीर जी समाधिस्थ हो गए और उन की उच्चारण समाधि में उन्होंने दो यमदूतों को उस मकान में देख कर उन से पूछा कि ''जिस स्थान पर श्री प्रभु जी विराजमान हैं वहां तुम कैसे आए? तुम्हारी यह गलती क्षमा नहीं होगी। अब तुम इस की सज़ा पाओगे।'' यह कह कर उन्होंने अपने हाथ में श्री प्रभु जी के चरणामृत को लेकर और दो बार छिड़क कर उन दोनों को भस्म कर दिया। फिर श्री रघुवीर जी समाधिस्थ अवस्था में ब्रह्मलोक आदि कई स्थानों पर गये। इस के बाद उन की उथान अवस्था होने पर उन्होंने श्री प्रभु चरणों से दो गेंदे के फूल और एक फूलों की माला मुझे दी और कहा कि ''सूद साहब ! आप और माता जी एक एक पुष्प का सेवन करें और इस माला को कूट कर, उस में जल मिला कर, फिर कपड़े से निचोड़ कर, उस जल को पिता जी को अभी प्यास लगने पर पिला देना और माता जी से कह देना कि वह घर में आज शाम के 6 बजे का सत्संग रख लें''।'रघुनन्दन' ने तो पुष्प प्रशाद उसी समय खा लिया और माता जी को दूसरा पुष्प प्रसाद खिला दिया। माता जी को शाम के 6 बजे घर में सत्संग रखने के बारे में बता दिया। माता जी ने श्री रघुवीर जी से कहा कि आज शाम के 6 बजे सत्संग में लोग कैसे आ सकेंगे। तो उन्होंने कहा माता जी आप चिन्ता न करें। घर में उस समय बहुत लोग इकट्ठे हो जाएंगे। जैसे ही माला को कुंडी में डाल कर 'रघुनन्दन' ने कूटना आरम्भ किया तो नीचे से बड़े भाई ने कहा कि पिता जी पानी माँग रहे हैं। उन को 'रघुनन्दन' ने जवाब दिया कि आप ने पिता जी को नीचे के नल का पानी मत देना। अभी उन के लिए दवाई वाला जल ला रहा हूँ वह देना है। जब 'रघुनन्दन' पुष्प प्रशाद को कूट कर जल मिला कर कपड़े में डाल कर छान रहा था तो पिता जी ने भाई द्वारकादास को फिर कहा कि मुझे जल्दी से नीचे वाले नल का पानी पिला दो मेरे प्राण निकले जा रहे हैं। इस पर भाई जी ने एक गिलास में नल का पानी भर कर पिता जी के हाथ में जैसे ही पकड़ाया तो रघुनन्दन ने जल्दी से गलास में पुष्प प्रशाद वाले जल को लेकर और जल्दी से दो तीन कदम में पहली मंजिल की सारी सीढ़ीयां उतर कर अपना गिलास भाई जी के नल के पानी वाले गिलास से बदल दिया, यह कह कर, कि पिता जी भाई जी वाले पानी में मक्खी है। भाई जी

का दिया हुआ जल अभी पिता जी ने पिया नहीं था। वह पुष्प प्रसाद वाला जल पी कर पिता जी सिद्ध आसन लगा कर बैठ गए और सब के सामने कहने लगे कि तीन विमान आ रहे हैं एक में भगवान श्री कृष्ण, दूसरे में भगवान राम और तीसरा खाली है। 'रघुनन्दन' ने सोचा कि रात में तो पिता जी को दो यमदूत दिखाई दे रहे थे अब श्री प्रभु कृपा से इन को श्री प्रभु जी के श्री कृष्ण और श्री राम रूपों के दर्शन हो रहे हैं तो अब पिता जी ठीक हो गए हैं। इस लिए कमरे में जो भूमि पर सफ बिछा रखी थी जब उस को हटाने का 'रघुनन्दन' ने प्रयत्न किया तो मेरे साथ खड़े श्री रघुवीर जी ने मुझे मना कर दिया और कहा कि उन की जालन्धर जाने वाली गाड़ी का समय हो रहा है सो उन्हें स्टेशन छोड़ आओ। 'रघुनन्दन' श्री रघुवीर जी को साईकिल के पीछे बिठा कर रेलवे स्टेशन ले गया और 5-45 PM वाली गाड़ी में बिठा कर जब घर पहुंचा तो देखा कि घर के अन्दर और बाहर सड़क पर व दरवाजों व खिड़कियों पर लोगों की भीड़ लगी हुई थी। घर के अन्दर से रोने की चीखो पुकार आ रहीं थी जिसे सुन कर मुझे बड़ा अनोखा अनुभव हुआ और नीचे सेहन में बड़े भाई मेरे गले लग कर रो रो कर कह रहे थे कि पिता जी चल बसे। तो 'रघुनन्दन' ने उन से कहा कि भाई वहां सब ने ही एक न एक दिन जाना है तो इस में रोने व चिल्लाने की क्या बात है। श्री प्रभु कृपा रुपी प्रसाद से मेरा मन बिल्कुल शान्त था और मुझे कोई रोना नही आया।

उधर माता जी भी बिल्कुल शान्त थीं और रिश्तेदारों के पूरी कोशिश करने पर भी वह रो नहीं रही थीं। यह सब पुष्प प्रशाद का ही करिश्मा था वरना मेरा या माता जी का न रोना हमारे अपने बस की बात नहीं थी। मुझे बाद में पता चला कि अंतिम समय जब पिता जी को सफ पर लिटाया तो उन का सिर माता जी की गोद में था और वह राम राम कहते चुप हो गए और उन के प्राण उन की आंखों द्वारा निकल गए। कैसी है यह श्री प्रभु जी की अपार करुणा कृपा लीला!

श्री रघुवीर जी का पिता जी के अंतिम समय प्रभु कृपा से घर पधार कर वहाँ उन को लेने आए दो यमदूतों को भस्म करना, माता जी को और मुझे पुष्प प्रशाद देकर शान्त रखना। पिता जी को पुष्प माला रूपी कृपा प्रशाद से दिव्य विमानों द्वारा अपना दिव्य लोक प्रदान करना यह श्री प्रभु जी की अपार करुणा कृपा है जिस के लिए यह सूद परिवार सदा उन करुणा सागर का ऋणी रहेगा।

अमृतसर में गुरुमाता सुभद्रा जी के दर्शन और आशीर्वाद का लाभ :-

पिता जी के देहावसान के बाद माता जी ने मुझे अपने भतीजे श्री निरनजन सूद के पास अमृतसर भेजा। वह नमक मंडी अमृतसर के मशहूर वैद्य थे। जब उन्हें पिता जी के परलोक सिधारने पर हुई श्री प्रभु रामलाल जी महाराज की कृपा लीला सुनाई तो उन्होंने गुरुमाता सुभद्रा जी के वहाँ साथ वाली गली में रहने का पता बताया। यह सुन कर 'रघुनन्दन' गुरुमाता जी के दर्शन करने उन के घर चला गया। घर में ताला लगा हुआ था। जब साथ के

घर वालों से पूछा तो उन्होंने मुझे अपने घर में बिठा कर माता जी को बहन द्रोपदी देवी जी के सत्संग में जाकर सूचना दे दी। माता जी उसी समय उन के साथ वापिस अपने घर आ गईं और घर के अन्दर श्री प्रभु जी के गृहस्थी स्वरूप के पास बैठ गईं।

जैसे ही उन लोगों ने गुरुमाता जी के अपने घर आने की सूचना दी तो 'रघुनन्दन' उसी समय अपनी गुरुमाता जी के दर्शन करने उन के चरणों में पहुंच गया। जैसे ही गुरु माँ को प्रणाम किया और उन्होंने अपना प्यार भरा आशीर्वाद रूपी हाथ 'रघुनन्दन' के सिर पर रखा तो आंखों से प्रेम के आंसू बहने लगे। गला रूक गया। मुंह से कोई भी शब्द निकल नहीं पाया। पता नही यह शरीर उन चरणों में कितनी देर पड़ा रहा और गुरु माँ द्वारा श्री प्रभु जी ने अपनी कितनी करुणा कृपा वरसाई। श्री प्रभु जी और गुरु माँ में कौन प्रियतम और कौन प्रेमी। दोनों ही प्रेमी और दोनों ही प्रियतम। जैस ही गुरु माँ ने अपना प्यार भरा हाथ 'रघुनन्दन' के सिर पर फेरा तो मन में भाव उठा कि यह वह हाथ है जिस द्वारा सारी सृष्टि के स्वामी श्री प्रभु जी महाराज की चरण सेवा हुई। जिन जिन बच्चों को प्रभु शरण मिली और वह श्री प्रभु जी के पास रहे उन सब की सेवा भी इन्हीं हाथों द्वारा हुई। यह वही हाथ हैं जो श्री कृष्ण अवतार में श्री राधा जी के थे और इन्हीं हाथों ने भगवान राम की सीता बन कर उन के चरणों की सेवा की। आज मेरा सौभाग्य है कि वही हाथ श्री राधा जी, सीता जी और अब माँ सुभद्रा का मेरे सिर पर फेरा जा रहा है। माँ का हृदय जैसे अपने बच्चे को देखकर प्यार से उछल पड़ता है क्योंकि माँ अपना रिश्ता जानती है। उसी प्रकार का प्यार भरा हाथ जब सिर पर हो और माँ के प्यार भरे आँसू छलक रहे हो तो उस समय बच्चे का मन कैसे अधीर नही होगा। और आंखों से प्रेम के आंसू कैसे नही बहेंगे। उसी हालत में उठकर जब 'रघुनन्दन' वैद्य जी के क्लीनिक में आया तो देखा कि वैद्य जी वहाँ मेरा इंतजार कर रहे थे। उन के साथ घर जा कर खाना खाया और होशियारपुर की गाड़ी पकड़ ली। गुरु माँ के त्याग का क्या कहना। श्री प्रभु जी ने ई सन् 1938 में हिमालय को जाने से पहले ''योग साधन आश्रम ट्रस्ट'' के द्वारा गुरु माँ को जो 20/25 रूपये हर माह गुजारा भत्ता देने की आज्ञा प्रदान की थी वह आज तक अपना निर्वाह उसी राशी में कर रही हैं। उन्होंने कभी भी किसी से भी एक पैसा तक नही लिया और न ही उन के मन में किसी से मांम पाने की इच्छा थी। माँ आश्रमों के समारोह में साधारण भक्तों की तरह पंक्ति में बैठ कर प्रभु प्रसाद ग्रहण करती थीं। वह कभी भी किसी को अपना सम्बन्ध बताती ही नही थीं। गुरू माँ आप को कोटी कोटी प्रणाम्।

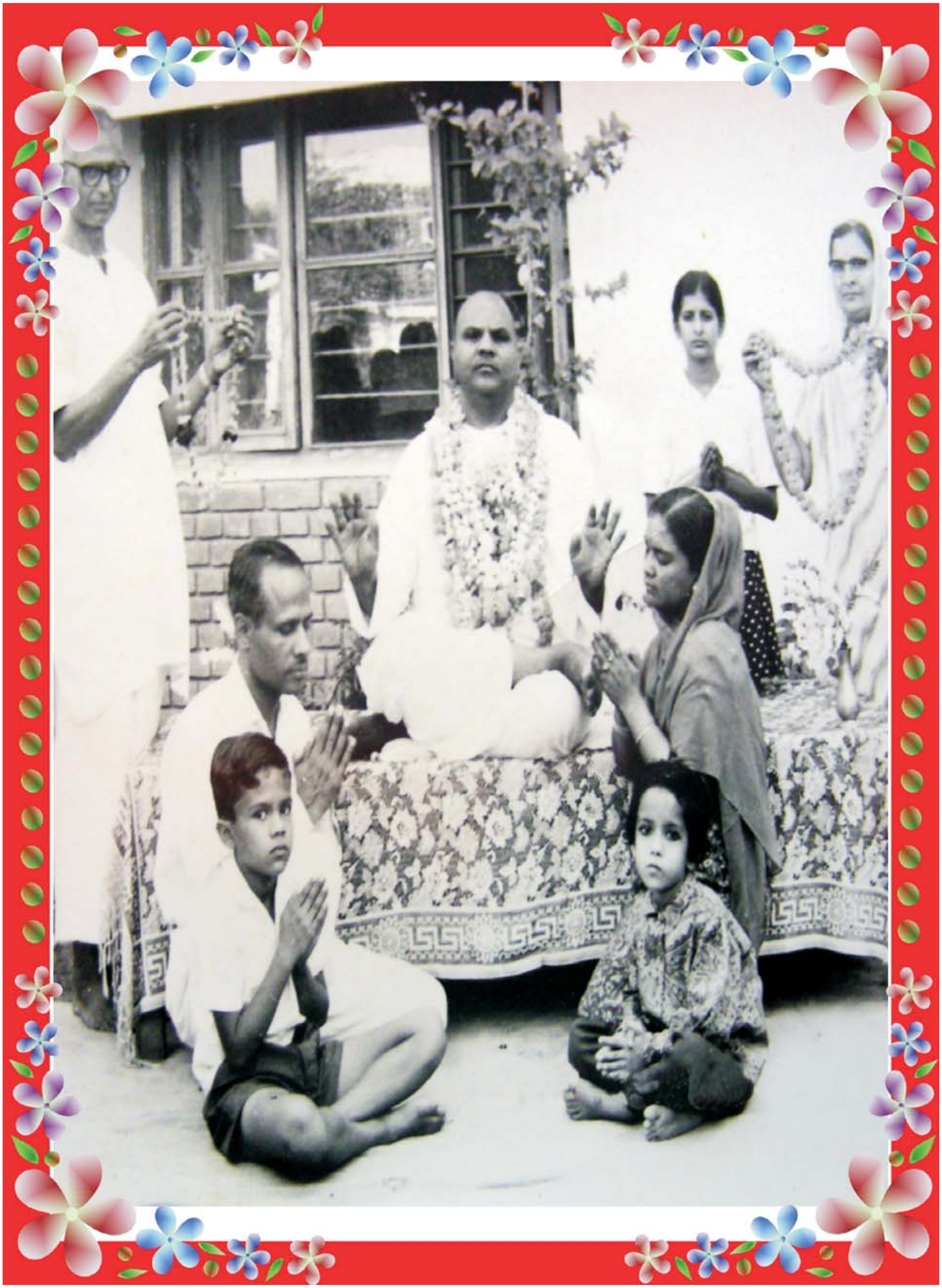

योगीराज श्री चन्द्रमोहन जी महाराज समाधिस्थ मनोरमा जी अपने परिवार व शर्मा परिवार के साथ चण्डीगढ़ में

श्री प्रभु करुणा कृपा अवलम्बित ग्रहस्थ-जीवन

'रघुनन्दन' का विवाह संस्कार (ई. सन् 1957)

ई सन् 1956 में पिता जी ने अपने पुत्र रघुनन्दन की मंगनी नई देहली निवासी श्री मगन बिहारी लाल जी चीफ इन्जीनियर की सुपुत्री मनोरमा जी के साथ कर दी थी। जब पिता जी गोलोक सिधार गये तो माता जी ने अन्य सम्बन्धियों से विचार करके 8 जून 1957 को 'रघुनन्दन' का विवाह मनोरमा जी के साथ लुधियाना में करने का निर्णय लिया।

यमुनानगर कालेज से पाँच दिन की विवाह पर छुट्टी लेकर 5 जून को रघुनन्दन सीधा जालंधर छावनी गया और श्री रघुवीर जी को सर्वप्रथम माता जी की ओर से 8 जून के लुधियाना में होने वाले विवाह का निमंत्रण दिया। उन्होंने सहर्ष जालंधर केंट से विवाह वाली बस में बैठ कर लुधियाना साथ जाने का विचार प्रकट किया और कहा कि उस दिन वह अवश्य चलेंगे।

7 जून की पूजा के बाद घर में कुछ विवाह की रस्में हुईं फिर घोड़ी पर बैठकर भगवान श्री कृष्ण जी के मन्दिर में जा कर रात को वहां रहना था। वहाँ मन्दिर में मेरी बाईं किडनी में दर्द आरम्भ हुआ तो मुझे याद आया कि श्री रघुवीर जी ने मुझे बहुत देर पहले कहा था कि आप ने विवाह में केवल दूध या दूध सोडा ही लेना है। उस समय यह बात समझ में नहीं आई थी मगर मन्दिर में जब वैद्य जीजा जी ने दवाई दी तो उन्होंने मुझे सिर्फ दूध या दूध सोडा लेने के लिए ही कहा। तब श्री रघुवीर जी वाली बात समझ में आई। अगले दिन बस मन्दिर से बारातियों के साथ, जालंधर केन्ट से श्री रघुवीर जी को लेती हुई, लुधियाना वाले होटल को चली। इस होटल में लड़की पक्ष के लोग बारात का स्वागत करने के लिए इंतजार कर रहे थे। वहां सब प्यार से मिले और बारातियों को कमरों में ठहरा कर उन सब को जलपान के लिए होटल के डायनिंग हाल में बुलावा भेजा। इतनी देर में लुधियाना के प्रोफेसर, गौरमिंट कालेज के प्रिंसिपल डा० सरना व मिलर गंज के सेडल साईकल वर्कस वाले सरदार जी का होटल में आगमन हुआ। उन सब के वहां आने का धन्यवाद किया और सब को चाय आदि होटल के डायनिंग हाल में सर्व की गई। श्री रघुवीर जी मेरे साथ ही रहे। श्री रघुवीर जी को 'रघुनन्दन' ने बताया कि यह सरदार जी वही हैं जो होशियारपुर व्यास पूजा पर जाते मुझे अम्बाले गाड़ी में मिले थे। इतने में सरदार जी वहां आए और कहने लगे कि उन्हें शादी का कार्ड मिला तो वह यहां हाज़िर हो गये। आज उन का निर्जला एकादशी का व्रत है

इस कारण वह लड़की वालों के घर बारात के साथ जाने तथा रात के वहां खाना खाने के लिए क्षमा चाहते हैं। श्री रघुवीर जी ने सरदार जी से कहा कि ''रात के समारोह पर तो आप हमारे साथ चल ही सकते हैं वहाँ लड़की वालों के घर में आप ने खाना मत खाना।'' सरदार जी ने जवाब दिया हाँ यह ठीक है वह रात को समारोह के समय यहां होटल में अवश्य आ जाएंगे। उस समय मेरे बड़ी तेज दर्द हो रही थी। मगर इस को प्रभु इच्छा जान इस संस्कार के भुगतान में परेशानी कम थी।

सरदार जी का दिव्य अनुभवः- जब रात को बैंड बाजे के साथ घोड़ी पर सवार दूल्हे की बारात लड़की पक्ष के घर की ओर मिलनी व जयमाला आदि समारोह के लिए होटल से चलने लगी तो सरदार जी भी आ गए और घोड़ी के पीछे-पीछे चलने लगे। श्री रघुवीर जी मेरे साथ साथ चल रहे थे। वहाँ स्वागत घर पहुंच कर पहले मिलनी और फिर जयमाला हुई। इस के बाद बारात को भोजन के लिए एक बड़े हाल में बिठा कर हाथ धुलवाने के बाद खाना परोसा गया। श्री रघुवीर जी मेरे साथ बैठे थे और सरदार जी हमारे बिल्कुल सामने थे। जब खाना परोसा गया तो सब से पहले सरदार जी ने खाना आरम्भ किया। 'रघुनन्दन' ने तो वहां कुछ खाना नही था इस कारण वहां चल रही श्री प्रभु जी की कृपा लीला को देख रहा था। श्री रघुवीर जी सरदार जी को देख कर मुस्करा रहे थे और सरदार जी बड़े प्रेम से खाना खा रहे थे। जब सब लोग खाना, मिठाई और फल आदि खा चुके तो सब के साथ हाथ आदि धोने सरदार जी भी बाहर लगे हाथ धोने के बर्तन आदि की ओर गए। जब वहां से सरदार जी लौट रहे थे तो रघुनन्दन ने नम्रतापूर्वक उन से पूछा कि उन्हें शायद अपने व्रत का याद नही रहा जो उन्होंने अंजाने में यहाँ खाना खा लिया इस पर सरदार जी ने हंस कर कहा कि आज जब वह घोड़ी के पीछे पीछे चल रहे थे तो उन्हें ऐसा लग रहा था कि उन के रूप में भगवान कृष्ण ही चल रहे थे। अब अगर आप कहते हैं कि वहां पर खाना भी खाया गया था तो यह लीला भी उसी की है उन्हें इस का कोई ज्ञान नहीं। सरदार जी का नाम आज तक 'रघुनन्दन' नहीं जानता पर उन पर हुई श्री प्रभु जी की अपार करुणा कृपा को याद करके आज भी मेरा मन आनन्द से भर जाता है।

रात को फेरों के समय मुझे बड़ा तेज दर्द होता रहा। श्री रघुवीर जी मेरे पीछे बैठे रहे ताकि कोई मुझे तंग न करे। जब उन को 'रघुनन्दन' ने तेज दर्द का बताया तो वह शांत रहे और मुझे कहा ''सूद साहब! श्री प्रभु जी के बच्चे घबराते नहीं।'' फेरों के बाद मुझे दर्द के साथ पेशाब में खून भी आया। जब लड़की पक्ष वालों को पता चला तो वह एक डाक्टर को बुला कर लाए। डाक्टर ने मुझे एक इन्जैक्शन दिया और लड़की पक्ष वालों को कह गया कि इन के गुर्दे में पत्थरी है अगर फिर पेशाब में खून आए तो इन्हें होस्पिटल ले जाना। विदाई के बाद होटल में ही लड़की का फेरा हुआ। फेरे के बाद जब 'रघुनन्दन' होटल के पाखाना में पेशाब करने गया तो एक ईन्च लम्बाई और काफी मोटी पत्थरी अपने आप निकल गई और दर्द भी बन्द हो गई। होशियारपुर अथवा यमुनानगर में रहकर

फिर मुझे कोई दर्द नही हुआ। कैसे हैं कृपालु प्रभु।

होशियारपुर आने पर हमारा उतारा राय साहिब रखा राम मौसा जी के घर हुआ। अगले दिन जब अपने घर जा कर श्री प्रभु जी को मन्दिर में प्रणाम किया तो वहाँ मन्दिर में प्रेम जी की उच्चारण समाधि में श्री प्रभु रामलाल जी महाराज ने अपनी कृपा से प्रकट होकर अपना आशीर्वाद दिया। फिर विवाह की रस्मों के बाद हम दोनों यमुनानगर चले गए और वहां कालेज में पार्टी के बाद काम आरम्भ हो गया।

बालक धीरेन्द्र का जन्म :-

श्री प्रभु जी ने अपनी अपार कृपा से अपने इस सूद परिवार में अपने बालक धीरेन्द्र रूपी चिराग को 8th May, 1961 में प्रज्जवलित किया। उन्हीं दिनों आदरनीय प्रो० कपूर जी का मुझे यमुनानगर कालेज में पत्र मिला जिस में उन्होंने लिखा था कि आज श्री प्रभु जी ने रघुवीर जी की समाधि में आप के लिए आज्ञा प्रदान की है कि आप गोरमिंट कालेज सर्विस के लिए पंजाब पब्लिक सर्विस कमिशन में अपना फारम भर कर भेज दें। उस समय यमुनानगर के एम. एल. नैशनल कालेज में 'रघुनन्दन' को भौतिक विज्ञान विभाग की हैडशिप मिली हुई थी और गरेड भी अच्छा था। वहाँ मुझे उस कालेज में सर्विस करते छः वर्ष हो चुके थे।

श्री प्रभु आज्ञा को सर्वप्रिय जान उन की आज्ञा अनुसार पंजाब पब्लिक सर्विस कमिशन में भौतिक विज्ञान की "Lecturership in Govt. Colleges of Punjab" के लिए फौरम भर कर भेज दिया। ई सन् 1962 के आरम्भ में मेरी यह साक्षात्कार पटियाला में हुई। मुझे इस इन्टरविऊ में सब से पहले और सब Candidates के बाद दो बार बुलाया गया जबकि बाकी सब को उन्होंने केवल एक बार ही बुलाया था। मुझे ऐसा लगा कि मेरा मार्जीनल केस होगा जिस के लिए इन्हें मुझे दोबारा बुलाना पड़ा। इस के बाद यमुनानगर कालेज में काम चलता रहा।

गौरमिंट कालेज चन्डीगढ़ में सर्विस (अगस्त-1962):-

ई सन् 1962 अगस्त में 'रघुनन्दन' को पंजाब गोरमिंट के गोरमिंट कालेज चण्डीगढ़ में फिजिक्स लेक्चरर की पोस्ट की नियुक्ति करने का पत्र यमुना नगर में मिला। यमुनानगर कालेज की नौकरी छोड़ जब गौरमिंट कालेज चण्डीगढ़ के प्रिंसिपल डा० के. एस. थापर से मिला तो उन्होंने मुझ से पूछा कि आप को यह पंजाब की राजधानी का कालेज किस की सिफारिश से मिला है। 'रघुनन्दन' ने कहा कि मेरी तो कोई सिफारिश ही नहीं थी। तब प्रिंसिपल ने कहा कि वह कल पटियाला जा रहे हैं तो वहां पी. एस. सी. के ओफिस से पता करेंगे कि आप को चण्डीगढ़ का कालेज पहली बार की नियुक्ति में कैसे मिला है। उन्होंने वहाँ से आकर मुझे अपने ओफिस में बुला कर बहुत बहुत बधाई दी और बताया कि आप सारे पंजाब के कालेजों की चयन सूँची में अब्बल

दर्जे़ पर थे इस लिए पंजाब गौरमिंट द्वारा आप की चण्डीगढ़ राजधानी के कालेज में नियुक्ति हुई है। तब मुझे श्री प्रभु जी की अपार करुणा कृपा लीला का भान हुआ और दो बार इन्टरव्यूँ में बुलाने का रहस्य जाना। वहाँ हमें कालेज के पास सैक्टर-15A में मकान No. 376 किराये पर मिल गया और हम उस में रहने लगे। लगभग तीन वर्ष बाद श्री प्रभु जी ने अपने इस परिवार में एक और सुन्दर फूल खिलाया जिस बेटी का नाम 'अनुपम' रखा गया।

मनोरमा के अद्भुत प्रभु कृपा रूपी दिव्य अनुभव :- (मनोरमा सूद के शब्दों में)

देहली के एक सम्पन्न व सुशिक्षित आर्यसमाजी सूद परिवार में मेरा जन्म हुआ। वहाँ कालेज में अच्छी विद्या प्राप्त करने के बाद मेरा विवाह, होशियारपुर के एक धनाढ्य भक्त परिवार में प्रो० रघुनन्दन लाल सूद के साथ ई सन् 1957 में सम्पन्न हुआ। ई सन् 1962 में मेरे जीवन साथी की Posting Govt. College Sector-11 Chandigarh में हो गई।

ई सन् 1966 में हम अपने दो बच्चों-धीरेनन्द्र (सनी) आयु 4 वर्ष व छोटी बेटी अनुपम (हनी) के साथ मकान नं० 376 सैक्टर-15A चण्डीगढ़ में रहते थे। प्रो० सूद आनन्दकन्द प्रभु श्री रामलाल जी महाराज द्वारा दीक्षित थे और उन के स्वरूप का घर में आरती पूजन होता था परन्तु संस्कारवश मुझे गुरुपरम्परा में विश्वास नहीं था। स्वामी श्री मुलखराज जी महाराज द्वारा दीक्षित, होशियारपुर योग साधन आश्रम के आचार्य प्रो० चमन लाल कपूर की नियुक्ति बी.एड., कालेज शिमला में थी और वह कालेज में सर्दी की छुट्टियाँ होने पर होशियारपुर जाते हुए तीन चार दिन के लिये अपने परिवार सहित चण्डीगढ़ रुके।

श्री प्रभु प्रेरणा से 9th Jan, 1966 (रविवार) को सुबह 10 बजे हमारे घर पर आदरनीय प्रो० कपूर जी द्वारा हवन सत्संग आदि का प्रोग्राम हुआ। इस में 14 सैक्टर चण्डीगढ़ से श्री चन्द्रमोहन जी महाराज द्वारा दीक्षित भक्त समाज तथा कुछ पड़ोसी लोग भी आये हुए थे। आनन्दकंद प्रभु श्री रामलाल जी महाराज की अपार कृपा से हवन के समय सैक्टर-14 के पाँच भक्तों का ध्यान लग गया। एक ध्यानी देवी-कृष्णा (श्री आर. सी. कालिया जी की पुत्रवधु) को वहाँ ध्यान में श्री प्रभु जी के चरणों से दो पुष्प मिले फिर उस ने श्री प्रभु आज्ञानुसार एक आशीर्वाद रुपी पुष्प प्रो० सूद को और दूसरा मुझे दिया। हवन के बाद श्री प्रभु जी की आरती हुई।

एक ओर खड़ी मैं एक नवयुवक की ओर देख रही थी, जो खड़े-खड़े हाथ जोड़े हुए ध्यान में थे। वहाँ पर आए भक्तों ने बहुत कोशिश की कि उस ध्यानी को बिठा दिया जाये ताकि वह गिरे नहीं, पर उस की टांगे लकड़ी के समान थीं और कोई भी उस युवक को बिठाना तो दूर रहा उस की टांगे हिला तक न सके। आरती के बाद मैंने आरती ली। इतने में मैं क्या महसूस करती हूँ कि मेरे पैर व हाथ पत्थर होते जा रहे हैं। मैंने बड़ी कोशिश की कि

पैरों को उठाऊँ व हाथों को अलग करूँ पर ये सब बेकार रहा। मेरी आंखें बन्द हो गई और मैं चरणामृत व प्रशाद न ले सकी।

फिर मैंने अपने सामने अखंड तेज प्रकाश को देखा जो अनन्त सूर्यों की रोशनी से भी कहीं अधिक तेज युक्त था परन्तु चन्द्रमा की चाँदनी से कहीं अधिक शीतल तथा लुभायमान था। उस दिव्य प्रकाश में मैंने आनन्दकन्द योग योगेश्वर श्री प्रभु रामलाल जी महाराज को जटाधारी स्वरूप में देखा जो बाद में मर्यादा पुरुषोत्तम राम, लीलाधारी भगवान श्री कृष्ण, श्री गुरु नानक देव जी, गौतम बुद्ध, लौड करिशट आदि के रूपों में बारी-बारी से बदलते हुए दिखाई दिए। फिर मैंने अखंड तेज प्रकाश में देखा कि श्री प्रभु राम लाल जी महाराज जटाधारी रूप में खड़े मुझे बुला रहे हैं। मैंने कहा कि ''मैं आप के पास नहीं आऊँगी।'' श्री प्रभु जी बोले- ''फिर तुम्हें कौन सा रूप अच्छा लगता है?'' मेरे यह कहने पर कि मुझे श्री कृष्ण जी अच्छे लगते हैं तो श्री प्रभु जी ने अपने मुँह पर हाथ फेर कर, अपनी दाढ़ी हटा कर, फिर सिर पर मोर मुकुट धारण किये हुए श्री कृष्ण जी बन कर मेरे सामने खड़े हो गए। यह देखकर मैं प्रसन्नतापूर्वक उन की ओर बढ़ी पर उन के निकट जा कर फिर उन का वही पहले वाला दिव्य जटाधारी रूप देखा। मुझे उदास देखकर वे मुस्कराकर फिर श्री कृष्ण जी बन गये और मैं उन की उँगली पकड़ कर उन के साथ चल दी। परन्तु राह में वह मुझे कई बार अपना रूप बदल-बदल कर दिखाते रहे। जब वह श्री कृष्ण जी के रूप में होते, तो मैं उन की उँगली पकड़ लेती थी पर जब फिर जटाधारी दिव्य रूप में होते, तो मैं उन की उँगली छोड़ देती थी। मैंने बच्चों की भांति श्री प्रभु जी से आग्रह किया कि मुझे श्री कृष्ण जी अच्छे लगते हैं, आप इस साधू रूप में मुझे अच्छे नहीं लगते। तब श्री प्रभु जी कहने लगे ''अच्छा तो जाओ उधर कृष्ण जी के पास चली जाओ।'' जब मैं श्री कृष्ण जी की ओर जाने लगी तो मुझे वहां पर भयंकर सर्प दिखाई दिये। मैं बहुत डर गई तो देखा कि सामने श्री प्रभु जी हँसते हुए खड़े थे और वे मुझे कृष्ण रूप में अपने साथ ले गये।

श्री प्रभु जी ने मुझे कई मंदिर, पहाड़ रास्ते में दिखाये, फिर एक छोटा सा मकान बर्फीले पहाड़ों के ऊपर दिखाया जिस से एक मार्ग नीचे की ओर जा रहा था। उस मकान में श्री प्रभु जी मेरे साथ छुपन-छुपाई खेलते रहे। इस के बाद उन्होंने मुझे अपनी गोदी में बिठा कर बहुत प्यार किया। मैंने श्री प्रभु जी से कहा कि मुझे भूख लगी है और वापस घर जाना है। श्री प्रभु जी मुझे उसी मकान के एक स्थान पर ले गये जहाँ पर थालियों में बहुत सारी खाने की चीज़ें थी। उन्होंने मुझे एक गिलास पानी दिया। मैंने फिर श्री प्रभु जी से कहा कि मुझे घर जाना है। तो श्री प्रभु जी ने गर्दन हिला कर मना किया तब मैंने कहा कि मुझे फिर कुछ खाने को दीजिए बहुत भूख लगी है। श्री प्रभु जी बोले - ''यदि हमनें तुम्हें खाना खिला दिया तो तुम यहां कभी नहीं आओगी। इस लिए खाना तो नहीं मिलेगा।'' इस के बाद श्री प्रभु जी मुझे उस घर के दरवाजे के बाहर छोड़ देते हैं ताकि मैं घर आ जाऊँ पर मेरे पैर उसी स्थान पर जमे रहे तो श्री प्रभु जी हँस कर मेरे पास आये और मेरी उँगली पकड़ कर मुझे फिर दरवाजे से अंदर

ले गये। इसी प्रकार वह मुझे कई बार दरवाजे के बाहर छोड़ जाते और फिर अंदर ले जाते। जब मैं बाहर होती तो मेरे पैर उस स्थान से हिल नही पाते थे। मेरे बार बार प्रार्थना करने पर कि मुझे भूख बहुत लगी है इसलिए जाने दीजिए तो श्री प्रभु जी ने कहा – ''अच्छा जाओ, जो व्यक्ति तुम्हें सब से पहले दिखाई दे उस से आशीर्वाद लेना।'' फिर मैं उसी मकान से जो मार्ग नीचे जा रहा था उस से नीचे उतरने लगी। उतरते–उतरते मैंने प्रो० कपूर जी को ऊपर की ओर आते हुए देखा तो उन के चरणों में प्रणाम कर आशीर्वाद प्राप्त किया और अपने को सब के बीच पाया।

रात्रि को सात बजे जब सब मिल कर श्री प्रभु जी की आरती कर रहे थे तो प्रो० कपूर जी ने मुझे भी आरती उतारने के लिये बुलाया। आरती उतारते हुए मैं ध्यान मग्न हो गई। प्रो० कपूर जी ने आरती की थाली दूसरे भक्तों को भी देने के लिए मेरे हाथ से ले ली पर मैं ध्यान में उसी प्रकार हाथ ऊपर उठाये खड़ी रही। आरती के काफी देर बाद मुझे बिठा दिया गया। बेटी अनुपम (हन्नी) को 103°F बुखार था और वह प्रो० सूद जी की गोदी में लेटी हुई थी। रात के 10 बज चुक थे इस कारण श्रीमती कपूर ने अपनी बेटी अरुणा से वहाँ खाना रसोईघर से लाने को कहा। अरुणा ने रसोईघर से खाना ला कर वहाँ कमरे में रख दिया। इतने में श्री प्रभु जी द्वारा समथिस्त मनोरमा ने बन्द आंखें अपने एक हाथ को धीरे–धीरे पूरीयों की ओर आगे बढ़ा कर के उन के ऊपर रख दिया और फिर अपने दूसरे हाथ से होले होले थाली को अपनी ओर सरका कर दो पूरियाँ प्रो० सूद जी की ओर फेंकी तथा हाथ उठा कर आशीर्वाद भी दिया। आदरनीय प्रो० कपूर जी ने कहा कि इस समय मनोरमा में श्री प्रभु रामलाल जी महाराज का आवेश है। उसी समय एक वर्ष 6 माह आयु की छोटी बेटी अनुपम (हनी) ने रोना आरम्भ कर दिया और वह अपने डैडी से कह रही थी कि मुझे साथ वाले बैडरूम में ले चलो। श्री प्रभु जी ने भी मेरे हाथ के इशारे से प्रो० सूद जी को बेटी अनुपम (हनी) को दूसरे कमरे में ले जाने को कहा। प्रो० सूद बेटी अनुपम (हनी) को उसी समय साथ वाले बैडरूम में ले गये। फिर आशीर्वाद सहित एक पूरी प्रो० कपूर (भापा जी) को, एक पूरी श्रीमती कपूर (माता जी) को और एक पूरी प्रो० कृष्ण लाल खेतरपाल को मिली। इस के बाद थाली खाली हो गई। थाली फिर मेरे द्वारा बन्द आंखें दूर खिसका दी गई। प्रो० कपूर भापा जी ने अरुणा द्वारा और पूरियाँ रसोई घर से मंगवाई। श्री प्रभु जी ने मेरे द्वारा थाली फिर बन्द आंखें धीरे–धीरे अपनी ओर सरका कर प्रो० सूद जी को फिर और दो पूरीयाँ तथा आशीर्वाद प्रदान किया। इस के बाद एक पूरी तथा आशीर्वाद आशा को मिला। अब एक पूरी जो शेष रही उस का कुछ भाग तथा आशीर्वाद बेटी अनुपम (हनी) को तथा शेष पूरी आशीर्वाद सहित इन्दू को प्रसाद रूप में मिली। बाकी बच्चे सो रहे थे। फिर रात के 11 बजे मेरी समाधि खुल गई। उस समय हनी बेटी का पारा बिल्कुल ठीक था। अब मैं दोनो समय श्री प्रभु जी की आरती करने लगी। एक दिन मुझे ध्यान में गणेश जी के दर्शन हुए। फिर एक दिन ध्यान में श्री कृष्ण जी नन्हें से बालरूप में ग्वालों के साथ खेलते हुए दिखाई दिये। एक दिन मैंने

ध्यान में देखा कि श्री रामचन्द्र जी खड़े हैं व उन के पास विश्वामित्र जी व श्री लक्ष्मण जी भी खड़े हैं और सीता जी ने वरमाला श्री रामचन्द्र जी के गले में डाल दी है। आरती के समय में मुझे हर रोज ऐसे ध्यान में दिखाई देता था जैसे कोई मकान है और उस में बहुत से खम्बे हैं। इस का एक बड़ा दरवाजा खुलता है तो वहाँ बहुत से लोग पूजा कर रहे होते हैं। एक दिन ध्यान में सचमुच ही वह लोग हिलते हुए दिखाई दिए और उन्होंने मुझे आशीर्वाद भी दिये।

13th Jan ई सन् 1966 को आरती करते करते मेरा ध्यान श्री प्रभु जी के चरणों में लग गया। मुझे बहुत ही तेज रोशनी दिखाई दी और इस तेज रोशनी में श्री प्रभु जी के दिव्य रूप को देखा। मेरे यह कहने पर कि मुझे श्री कृष्ण जी अच्छे लगते हैं श्री प्रभु जी ने मुझे इस प्रकार से ध्यान में दिखाया। भगवान श्री रामचन्द्र जी व सीता जी दोनो पास पास खड़े होते हैं और मुझ से पूछते हैं – ''हम अच्छे नहीं लगते न?'' और इन दोनों की गर्दनें न का इशारा भी करती हैं। इस के साथ ही श्री प्रभु जी भी एक तरफ बैठे ''ना–ना'' कहते हुए गर्दन भी हिलाते हैं। फिर इसी प्रकार भगवान शिव–पार्वती भी दिखाई देते हैं। वह भी ''ना–ना'' करके गर्दन हिलाते हैं और श्री प्रभु जी भी ''ना'' कहते हैं। अन्त में श्री कृष्ण जी व राधा जी उसी प्रकार पास–पास खड़े होते हैं और पूछते हैं ''हम अच्छे लगते हैं न?'' और अपनी गर्दन ''हाँ'' में हिलाते हैं। साथ ही श्री प्रभु जी भी ''हाँ–हाँ'' कहते हुए गर्दन हिलाते हैं। फिर सब प्रभु स्वरूप एक बार इकट्ठे आते हैं बाकी सब तो ''ना'' में गर्दन हिलाते हैं पर श्री लीलाधारी कृष्ण–राधा जी ''हाँ'' में गर्दन हिलाते हैं। उस समय श्री प्रभु जी मुस्करा रहे होते हैं और इस सारे समय में बहुत ही तेज प्रकाश रहता है। फिर श्री प्रभु जी के साथ मेरी इस प्रकार से बातें होती हैं :–

मैं श्री प्रभु रामलाल जी महाराज से पूछती हूँ – ''आप मुझे छोड़ कर क्यों चले जाते हैं? अब मेरा मन आप के बिना नहीं लगता।'' श्री प्रभु जी ने उत्तर दिया–हमें और काम भी तो करने हैं। यह कैसे हो सकता है कि हम हमेशा तुम्हारे पास रहें। हाँ, हम अपने भक्तों को निराश नहीं करते। कोई हमारी मूर्त्ति बना कर अपने मन को बहला लेता है। कोई हमारा चित्र रख लेता है। हमारा स्थूल शरीर सदा एक स्थान पर तो नही रह सकता न।'' मैं कहती हूँ – ''फिर आप मुझे अपना चित्र दें। परन्तु मुझे श्री कृष्ण रूप में चित्र चाहिए।'' उन का उत्तर आया– ''हमारे चित्र पर तुम मुकुट लगा लो।'' मैं कहती हूँ कि इस प्रकार से तो यदि कोई देखेगा तो समझेगा कि किसी सरदार जी ने मुकुट लगा कर अपना फोटो खिंचवाया है। मुझे तो पूरा श्री कृष्ण रूप चाहिए–''कमर में पीली चुन्नी बन्धी हुई और कंधों पर लाल चुन्नी, सिर पर मुकुट व हाथों में बाँसुरी, धोती डाल कर।'' श्री प्रभु जी हँस पड़े और बोले – ''अच्छा समय आने दो तुम्हें हमारा चित्र मिल जायेगा।'' फिर मैं कहती हूँ– ''आप मेरे पास बाल रूप में आ जाइये। मेरा आप के बिना मन नही लगता।'' श्री प्रभु जी मुस्कराने लगे और बोले – ''बालरूप कैसा चाहिए देवकी की तरह या यशोदा की तरह।'' मैं कहती हूँ दोनों ठीक भी हैं और गलत भी। इस के बाद श्री

प्रभु जी का आशीर्वाद पा कर ध्यान खुल गया और मैं सो गई। अगले दिन कपूर माता जी ने प्रो० कपूर (भापा जी) से कहा कि आप मनोरमा का हाथ देख कर बतायें कि इस पर यह अद्‌भुत कृपा प्रो० सूद के कारण से है या कि इन के अपने पिछले संस्कार हैं? आदरनीय प्रो० कपूर जी ने सब के सामने मेरा हाथ देख कर बताया कि यह सब इन की अपनी कमाई है जिस के कारण श्री प्रभु जी ने स्वयं ही इन पर यह अद्‌भुत कृपा की है।

अक्टूबर 1966 से मुझे अपने परिवार सहित श्री प्रभु जी के असीम कृपापात्र आदरनीय श्री चन्द्रमोहन जी महाराज का 25-30 वर्ष तक हर साल के अकटूबर मास आगमन पर सैक्टर-14 चण्डीगढ़ में सत्संग करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उन के शाम के प्रवचनों में मेरा ध्यान लग जाता और रात के एक दो बजे खुलता। श्री महाराज जी मुझे सदा प्यार से ''शक्ति'' कह कर सम्बोधित करते थे। जब मैंने उन से दीक्षा लेने के लिए प्रार्थना की तो उन्होंने मुझे साफ साफ शब्दों में कहा कि ''शक्ति'' तुम्हें दीक्षा लेने की कोई जरूरत नही है। तुम्हें दीक्षा तो स्वयं प्रभु श्री रामलाल जी महाराज ने दी हुई है।'' यह जबाब उस समय वहाँ पर सत्संग में आए सब भक्त समाज सैक्टर-14 ने सुन कर श्री प्रभु रामलाल जी महाराज का जयकारा बुलाया। ये कैसी करूणा कृपा लीला है।

राम नवमी उत्सव शिमला की अनोखी प्रभु घटना :-

ई सन् 1966 के अप्रैल माह में प्रभु श्री रामलाल जी महाराज का शुभ जन्म दिवस ''योग साधन आश्रम रिज, शिमला (हि.प्र.) में मनाने के लिए प्रो० चमन लाल जी कपूर ने अपने आश्रम के सब भक्तों को निमंत्रण भेजा। उन के आग्रह पर जब हम दोनों ने बच्चों को लेकर रिज पर स्थित आश्रम में जा कर श्री प्रभु जी को प्रणाम किया तो श्री प्रभु रामलाल जी महाराज ने मनोरमा को समाधिस्थ कर दिया। उस समय वहां पर शिमले तथा अन्य स्थानों से काफी भक्त आए हुए थे। आश्रम में पहले हवन हुआ, फिर आसन तथा नेती क्रिया की Demonstrations हुई। फिर भजन बोले गए। इस के बाद भक्तों ने मिल कर सब्जियों को गर्म कर उस के बाद कड़ाही में घी को पूरा गर्म कर पूरीयाँ निकालनी आरम्भ कर दीं। समय काफी हो चुका था और सब को भूख लगी हुई थी।

श्री प्रभु जी ने ध्यान में मनोरमा को आज्ञा दी कि ''बेटी! हमें भोग जल्दी से लगा दो वरना यह सब भोजन जूठा हो जाएगा।'' मनोरमा ने समाधि में बन्द आंखों से कटोरियों में सब्जी, चने, पकौड़ियां और हलवा डाल कर, थाली में पूरीयों को कड़ाही के उबलते घी में से अपने दूसरे हाथ द्वारा, उठा-उठा कर, थाली में रख कर, श्री प्रभुजी को भोग लगवाकर, उन को बाद में उन-उन के बरतनों में डाल कर, मिला दिया।

इस के बाद सब भक्तों ने प्रभु प्रसाद को ग्रहण किया और फिर जब उन्होंने अपनी आंखों से समाधिस्थ मनोरमा के हाथों और उन की उंगलियों में लगे सेक के बाद कोई भी छाले अथवा इन की त्वचा पर कोई भी निशान नहीं देखा तो श्री प्रभुजी की ऐसी करुणा कृपा लीला देख कर बड़े हैरान हुए।

इस के बाद भी आदरनीय प्रो० कपूर (भापा जी) के आग्रह पर हम दोनो छोटे बच्चों के साथ चण्डीगढ़ कालेज की गर्मियों की छुट्टियों में एक मास के लिए शिमला घर में सारी कपूर परिवार के साथ रह कर प्रभु श्री रामलाल जी महाराज की कृपा लीला का अस्वादन करते रहे।

श्री प्रभु रामलाल जी महाराज के जन्मस्थान के दर्शन :-

चन्डीगढ़ के कालेज की छुट्टियों में हम दोनों बच्चों-धीरेन्द्र और अनुपम को अपने साथ लेकर श्री प्रभु रामलाल जी महाराज के जन्मस्थान के दर्शन करने के लिए ई सन् 1967 में अमृतसर गए। वहां पर श्री प्रभु जी द्वारा दीक्षित भक्त जसवन्त राय दुर्ग्याना मन्दिर के समीप धूप की दुकान करते थे इस लिए जन्मस्थान का पता करने हम उन की दुकान पर गए। वहां पर श्री जसवन्त राय जी के देहान्त के बाद उन का बेटा दुकान चला रहा था। हमारी प्रार्थना पर वह टाँगे में सवार होकर हमारे साथ श्री प्रभुजी के जन्मस्थान कूचा भाई सन्त सिंह (समीप हिन्दु कालेज) की गली में काफी आगे जा कर फिर दायें हाथ की गली में मुड़ कर बाईं ओर वाले कुएं के पास 'शेर मुंह वाले' मकान के बड़े दरवाजे से हम श्री प्रभु जी के जन्म स्थान के अन्दर गए। उस मकान की सीढ़ियां घर के इस दरवाजे के अन्दर से, बाहर वाली दीवार के साथ, ऊपर को जा रही थीं। इस मकान का आगे का माथा बहुत चौड़ा था और पीछे का हिस्सा तंग था। इस घर की जमीनी स्तह की पीछे वाली तंग जगह पर एक ही छोटा कमरा था यहाँ पर तीनों लोकों के मालिक चैत्र शुकल नवमी विक्रमी सम्वत् 1945 तद्नुसार 22 मार्च सन् 1888 ई० बृहस्पतिवार को प्रकट हुए। जैसे ही हम सब उस कमरे में जाकर बैठे और वहाँ पर श्री प्रभु रामलाल जी महाराज की गृहस्थी रूप में कैमरे से ली गई पुरानी बलैक एवं बाईट फोटो को देख कर प्रणाम किया तो मनोरमा उसी क्षण समाधिस्थ हो गई। इतनी देर में श्री प्रभुजी के भाई के बच्चे ऊपर से हमारे पास आए और कुशल मंगल तथा आने का समाचार जानने के बाद उन्होंने हमें वहां जलपान कराया। तब मनोरमा की समाधि खुलने पर उस ने कहा कि श्री प्रभुजी ने सब को अपना आशीर्वाद देते हुए कहा कि "हमें खुशी है कि आज हमारे बच्चे हमारे जन्मस्थान पर आए हैं।" इस के बाद मनोरमा को भी उन्होंने जलपान कराया। फिर उन सब का धन्यवाद करके टांगे में सवार होकर हम वापिस आ गए।

चण्डीगढ़ के सैक्टर 15 घर में चोरों द्वारा की गई चोरी की अद्भूत घटना (ई सन् 1967):-

एक दिन सुबह मेरे दान्त में बड़ा दर्द हुआ और उसी दिन मनोरमा ने भी अपने दान्तों को डा० राम प्रताप सैक्टर-16 वालो को दिखाने का टाइम पहले से ही ले रखा था। इस लिए हम ने मकान के कमरों को ताले अन्दर से लगा कर और अन्दर के बरामदे के दरवाजे को बाहर चिटकनी से बन्द करके, साईकल पर बच्चों के साथ सैक्टर-16 के डेन्टल क्लिनिक को चले गए। वहाँ से दांतों का इलाज करवाकर हम वापिस कच्चे रास्ते से अपने घर आए क्योंकि मुझे कालेज में शाम की अपनी क्लास की तैयारी करनी थी। घर में आकर दरवाज़े की चिटकनी

को खुली पाया मगर यह दरवाजा अन्दर से बन्द था। जब इस दरवाज़े को जोर से खोला तो यह खुल गया। घर के अन्दर वाले दरवाजों के ताले टूटे हुए थे और रसोई घर की भूमि पर औज़ार पड़े थे। रसोई घर के साथ वाले कमरे की अलमारी खुली पड़ी थी और मेरे दो नए गर्म सूट वहाँ डाइनिग टेबल पर पड़े थे। उस के साथ वाले दूसरे कमरे की अलमारी भी आधी खुली थी और मनोरमा के दो सोने के सेट पास वाले बैड पर बिखरे पड़े थे। इसी अलमारी में श्री प्रभुजी का एक स्वरूप विराजमान था।

मेरे मन में प्रश्न था कि जब उस घर का कोई सामान उन चोरों ने नहीं उठाया और अपने औज़ार भी वहीं छोड़ दिए तो वह चोर वहाँ करने क्या आए थे? मनोरमा ने अपने पड़ोसी भटनागर फैमली को बताया तो वह सब इस करिश्मे को अपनी आंखों से देखने आए। देख कर बड़े हैरान हुए और उन्होंने मनोरमा को दोनों गर्म सूट और दोनों सोने के सेट वहां से उठा कर अपने पास सम्भालने की सलाह दी ताकि पुलिस आकर इन को अपने कब्जे में न कर ले। श्रीमती भटनागर, मनोरमा और बच्चों के साथ घर पर रहीं और 'रघुनन्दन' कालेज की क्लास लेने चला गया। कालेज की क्लास में यह सारा वृतान्त हंसते हुए और फिर प्रिंसिपल डा० गोवर्धन लाल बक्षी जी को अपने प्रश्न के साथ जब सुनाया तो सब बड़े हैरान हुए। मेरे कहने पर डा० साहिब ने पुलिस स्टेशन फोन करके घर में चोरी के बारे में बता दिया।

कालेज से घर आकर जैसे ही हम ने खाना खाया तो वहां पर चन्डीगढ़ के डी एस पी साहिब अपनी धर्मपत्नी के साथ घर में आये और उन्होंने कहा कि उन के लड़के ने आप की क्लास से आकर हमें सारा किस्सा सुना कर आप के घर भेजा है ताकि आप को कोई पुलिस की ओर से तकलीफ न हो। अभी उन को बिठाया ही था कि पुलिस इन्सपैक्टर, डोग स्कवेड वाले व अन्य पुलिस कर्मी घर में आए और डी एस पी साहिब को वहाँ देख सब पुलिस वालों ने सेलयुट मारा और अपना काम आरम्भ कर दिया। पुलिस इन्सपेकटर ने मुझे सारा किस्सा लिखने को कहा। डी एस पी साहिब ने मेरे कहने पर रिर्पोट बना दी और मेरे दस्तखत करवा कर इन्सपैक्टर को दे दी। पुलिस ने ओज़ारों को सम्भाल लिया और चाय के लिए मना करके वे घर से चले गए। बाद में डी. एस. पी. साहिब और उन की धर्मपत्नी के साथ हम सब ने चाय पी और उन का धन्यवाद किया। फिर वह भी चले गए।

अगले दिन श्री प्रभु जी ने मनोरमा को ध्यान में दिखाया कि छेः चोर घर में चोरी करने आए थे। उन में से तीन चोर घर की पीछे की दीवार से कूद कर घर के अन्दर आए और दो बाहर घर के आगे की ओर और एक घर के पीछे की गली में चौकीदारी करने के लिए रुके रहे। घर के अन्दर आए चोरों ने पहले कमरे का ताला तोड़ा और फिर रसोईघर का ताला तोड़ कर अपने ओज़ारों को वहां रख दिया। एक चोर ने बरामदे के दरवाजे की अन्दर वाली अरल को हलका सा लगा दिया। बाहर वाले चोर ने इस दरवाज़े की बाहर वाली चिटकनी को खोल दिया। इस के बाद तीनों रसोई घर के साथ वाले कमरे में आए। उन्होंने इस कमरे की अलमारी से दो सूट उठा कर कमरे

के मेज पर रख दिए और फिर साथ वाले कमरे की लकड़ी की अलमारी खोली और उस के निचले खाने से सोने के दो सेट उठाए और जब ऊपर देखा तो उन्हें श्री प्रभु जी का विकराल रूप दिखाई दिया। वह सोने के दो सेटों को कमरे की चारपाई पर फेंक अपने सिर पर पाँव रख कर घर की पीछे की दीवार को फांद कर भाग निकले। श्री प्रभु जी ने ध्यान में मनोरमा को बताया कि बेटी तुम्हारा उन के साथ चोरी का संस्कार था जो हम ने भुक्तवा दिया। कैसी है यह श्री प्रभु जी की अपार करुणा कृपा लीला।

प्रिंसिपल डा० गोवर्धन लाल वक्षी के साथ हुई घटना :-

हमारे घर में हुई चोरी की अद्भुत घटना को सुनकर और सैक्टर-14 चन्डीगढ़ में श्री चन्द्रमोहन जी महाराज के सत्संग में आने का बुलावा पा कर एक दिन डा० गोवर्धन लाल भी महाराज जी के सत्संग में आए। यहाँ सत्संग में श्री प्रभु कृपा से उन को इतना आनन्द आया कि समय का कुछ ध्यान ही नहीं रहा। उसी रात के 8 बजे उन की एक विशेष मीटिंग वाईसचांसलर पंजाब युनिवर्सिटी के साथ सैक्टर-14 में थी। सत्संग में बैठे उन को अचानक अपनी मीटिंग का जब ध्यान आया तो उन के पास उस समय उन की घड़ी नहीं थी। वह मन में सोच ही रहे थे कि पता नहीं अब कितना समय हो गया होगा। समाधिस्थ मनोरमा ने श्री चन्द्रमोहन जी के पास रखे टाईमपीस को उठा कर दूर से डा० साहिब की गोद में फैंक दिया। इस पर प्रिंसिपल साहिब बड़े हैरान हुए कि कैसे उन के मन में विचार आते ही वह टाईमपीस उन की गोद में आ गिरा। उन्होंने समय देखा तो अभी उन की मीटिंग में 15 मिन्ट शेष थे। वह श्री महाराज जी को प्रणाम कर चले गए। अगले दिन डा० साहिब ने यह घटना मुझे सुनाई और अपने कालेज में स्टाफ के लिए श्री चन्द्रमोहन जी महाराज को प्रार्थना कर, उनका योग पर प्रवचन रखा और उन का प्रेम से वहां स्वागत किया।

मनोरमा जी द्वारा प्रभु प्रतिमा का निर्माण (ई सन् 1968) :-

एक दिन द्वारकादास लाईबरेरी सैक्टर-15 चंडीगढ़ में पेन्टिंग सिखाने वाले स्वामी जी ने हमारे घर 631/16-D चन्ड़ीगढ़ में आकर मुझ से पूछा कि क्या आप कोई पेन्टिंग बनाना चाहते हैं? 'रघुनन्दन' ने जवाब दिया कि मिसिज़ मरोरमा सूद श्री प्रभु जी का स्वरूप बनाना चाहती हैं। क्या आप वह स्वरूप पेन्ट करने में हर रोज़ शाम 7 बजे खाना यहाँ घर पर खा कर, उन की सहायता कर सकते हो? उन्होंने अपनी स्वीकृति देकर कहा "आप सामान लिख लें और वह कल शाम सात बजे घर आ जाएंगे।" अगले दिन शाम से काम आरम्भ हो गया और मनोरमा को बोर्ड की भूमिका तैयार करने में तीन दिन लगे। फिर उस बोर्ड पर श्री प्रभु जी के जटाधारी स्वरूप की रूप रेखा बनाने के लिए श्री प्रभु जी के एक छोटे चित्र पर खाने डाले।

अगले दिन उस बोर्ड पर प्रभु प्रतिमा के निर्माण के लिए मनोरमा ने अपना सुबह का खाना जल्दी बना लिया और मुझे कहा कि आप अपना खाना अभी खा लीजिए क्योंकि आप को कालेज जल्दी जाना है लेकिन वह

बोर्ड पर श्री प्रभुजी के स्वरूप की रूपरेखा के लिए खाने डाल कर और छोटे चित्र के अनुसार इस पर नंबर लगा कर फिर उन नंबरों को मिला कर बाद में खाना खाएंगी। तब 'रघुनन्दन' ने सबजियों को कटोरियों में डाल कर अभी खाना आरम्भ भी नही किया था कि मनोरमा अन्दर से फिर मेरे पास आई और मुझे अपने साथ वहाँ ले गईं। वहाँ जा कर 'रघुनन्दन' ने जब बोर्ड को देखा तो हैरान रह गया कि उस पर खाने डाले बिना श्री प्रभु रामलाल जी की पूरी की पूरी रूपरेखायें कैसे बनी?

इस पर मनोरमा ने बताया कि जब उस बोर्ड पर खाने डालने के लिए उस ने अपना पेन उठाया तो देखा कि उस बोर्ड के ऊपर श्री प्रभुजी के जटाधारी स्वरूप की सारी की सारी रूपरेखाओं में से अपने आप दिव्य तेज प्रकट हो गया और सारी रेखाएं इस दिव्य तेज से चमक रहीं थीं। तब उस ने उन चमक रहीं रूप रेखाओं के ऊपर अपना पेन चला दिया। हम दोनों ने श्री प्रभुजी को वहाँ स्वयम् विराजमान होकर अपनी अपार करुणा कृपा से जो 13.10.1966 को वचन दिया था 'अच्छा समय आने दो तुम्हें हमारा चित्र मिल जायेगा।' वह आज मनोरमा को प्रदान कर उसे साकार कर दिया। इस के लिए हम दोनो ने श्री प्रभु जी का कोटि कोटि धन्यवाद किया और बारम्वार प्रणाम किया। कैसे हैं कृपालु प्रभु! जिन्होंने अपनी प्रतिमा के निर्माण कार्य का श्री गणेश स्वयम् प्रकट हो कर किया।

श्री स्वामी जी को प्रभु आज्ञा :-

अब स्वामी जी हर रोज़ शाम के सात बजे से पहले घर 631/16-D में आकर, खाना खाकर मनोरमा के द्वारा श्री प्रभुजी के इस स्वरूप की रूप रेखाओं को पेंट द्वारा बनवाने और सजाने का काम करने लगे। एक दिन स्वामी जी को सैक्टर-15 में एक डाक्टर के घर भगवान श्री कृष्ण का चित्र बनाते बहुत रात हो गई। हम लोग स्वामी जी का बहुत देर तक इन्तजार करते रहे फिर सो गए।

उसी रात को जब स्वामी जी डाक्टर के घर सैक्टर-15 चन्ड़ीगढ से सैक्टर-16 को जाने वाली रोड़ (मन्दिर वाली) पर चल रहे थे तो उन्होंने सामने से एक बड़े तेज प्रकाश को अपनी ओर आते देखा जो बाद में समीप आने पर श्री प्रभु रामलाल जी महाराज के रूप में बदल गया। श्री प्रभुजी ने स्वामी जी को कहा कि ''हमारे बच्चे तुम्हारा इन्तजार करके सो गए हैं। अब वहां न जा कर अपनी लाईब्रेरी को जाओ।'' सुबह कालेज जाने से पहले मनोरमा ने मुझे कहा कि आप ने कालेज जाते हुए स्वामी जी के पास जा कर पता करना कि वह कल क्यों नहीं आए। जब स्वामी जी से पूछा तो उन्होंने कहा कि श्री प्रभुजी की आज्ञा नहीं थी। शेष घर आकर सारी घटना सुनाऊँगा। उन के शाम को घर आकर बतलाने पर श्री प्रभुजी की इस करुणा कृपा लीला का पता चला।

इसी प्रकार घर में यह कार्य काफी देर तक चलता रहा। एक दिन स्वामी जी के रात को जाने के बाद मनोरमा को कई बार शौच जाना पड़ा अगले दिन भी ऐसा ही रहा। शाम को जब स्वामी जी के घर आने पर

'रघुनन्दन' ने दरवाजा खोला तो दरवाज़े पर ही उन्होंने पूछा कि क्या हमारी दीदी अस्वस्थ हैं और क्या उन को बार बार शौच जाना पड़ता है? इस पर मुझ को कहना पड़ा कि आप को किस ने ऐसा कहा तो उन्होंने घर में सब के सामने कहा कि श्री प्रभुजी ने उन को स्वप्न में कहा कि "हमारी बेटीअस्वस्थ है और बार-बार शौच जा रही है इस लिए हमारे चित्र को जल्दी से पूरा करवा दो वह ठीक हो जायेगी"। उस दिन जैसे ही श्री प्रभुजी का स्वरूप पूरा होता गया मनोरमा ठीक होती गई।

एक अनजाने सरदार-कारपेंटर पर अनोखी करुणा कृपाः-

चन्डीगढ H. No. 631/16-D वाले मकान के मालिक दिसम्बर में रिटायर होकर अपने परिवार के साथ अपने मकान में आ गए। इस लिए ई सन् 1969 में हमें प्रो० कुलवन्त सिंह जी के मकान No. 3250 (पहली मंजिल) सैक्टर-15D चन्डीगढ़ में किराएदार के रूप में जाना पड़ा। इस मकान की खिड़कियों में ग्रिलें लगाने के लिए एक सरदार कारपेंटर को मालिक मकान ने भेजा। उन खिडकियों के पास ही मन्दिर में श्री प्रभु रामलाल जी महाराज का यह जटाधारी स्वरूप विराजमान था। जैसे ही सरदार जी ने खिड़कियों का नाप लेने से पहले श्री प्रभु चरणों में प्रणाम किया तो उस का वहाँ खड़े खड़े ही ध्यान लग गया। उस की आंखों से प्रेम के आंसू काफी देर तक बहते रहे। जब उस का ध्यान खुला तो सरदार जी ने बताया कि 12 वर्ष पहले उस ने अपने गाँव के किसी गुरुजी से दीक्षा ग्रहण की थी। उस के बार बार प्रार्थना करने पर भी उस के गुरुजी ने उसे अपनी फोटो नहीं दी थी और दीक्षाकाल के बाद जल्दी ही वह ज्योति-जोत समा गए। वह अपने गुरुजी के दर्शन करने के लिए तब से ही लालायित रहता था और उस का मन अपने गुरुजी के दर्शनों के लिए तड़फा करता था। आज यहाँ आकर जैसे ही उस ने श्री प्रभु चरणों में प्रणाम किया तो उसे अपने गुरुजी के साक्षात दर्शन हुए और उन का आशीर्वाद भी प्राप्त हुआ। कैसी है यह श्री प्रभुजी की अनोखी करुणा कृपा।

योग साधन आश्रम में श्री रामनवमी उत्सव ई.सन् 1969:-

आदरनीय प्रो० चमन लाल जी कपूर के विशेष आग्रह पर योग साधन आश्रम होशियारपुर के श्री रामनौवीं उत्सव में भाग लेने हम चण्ड़ीगढ से बच्चों के साथ अप्रैल, 1969 को वहां गए। श्री रघुवीर जी भी वहाँ आश्रम में थे। उन को मिलने के बाद हम सभी आश्रम के सत्संग में सब भक्तों के पीछे बैठ गए। भजनों के बाद गवर्नमैंट कालेज के हिन्दी विभाग के एक प्रो० का योग पर प्रवचन होना था। उन के आने की प्रतीक्षा हो रही थी।

इतने में वहाँ बैठे हुए श्री रघुवीर जी ने मनोरमा से उस का पर्स माँगा। मनोरमा के मना करने पर 'रघुनन्दन' ने वह पर्स मनोरमा से छीन कर श्री रघुवीर जी की और फैंक दिया। जब मनोरमा उन से लेने गई तो उन्होंने उस पर्स को मेरे पास फैंक दिया। जब मनोरमा मेरे पास आई तो वह पर्स श्री रघुवीर जी के पास फैंका गया। ऐसा कई बार हुआ। हम बच्चों की तरह खेलने में मस्त थे। इतने में आदरनीय प्रो० कपूर जी ने माईक पर

बोल कर, सत्संग में आराम से बैठ कर वक्ता का इंतजार करने की सूचना दी तो हम लोग सावधान हो गए।

श्री रघुवीर जी और मनोरमा जब आराम से बैठे तो दोनों ही समाधिस्थ हो गए और पर्स मुझे सम्भालना पड़ा। थोड़ी देर के बाद प्रो० कपूर जी ने माईक पर कहा कि अब उन प्रो० वक्ता के स्थान पर प्रो० भारद्वाज जी का प्रवचन होगा। प्रो० भारद्वाज जी अभी स्पीकर के माईक पर आने ही वाले थे कि इतनी देर में उस माईक पर समाधिस्थ मनोरमा ने माईक को अपनी हाईट के अनुसार स्वयम् एडजेस्ट करके, प्रवचन करना आरम्भ कर गया।

महाप्रभु भगवान सदा शिव जी महाराज का सन्देश :-

आज भगवान राम का जन्मदिवस है और यह हमारा सौभाग्य है कि ऐसे शुद्ध व सुन्दर वातावरण में हम सब एकत्रित हुये हैं। जब जब भी भगवान अवतार लेते हैं तब-तब वे अपनी शरण में आए हुए प्राणियों को, इस अंधकार रूपी भवसागर से डूबते हुओं को पार उतारने के लिए हमारी जीवन नैय्या के खेवट बनते हैं।

जिस समय हम श्री प्रभुजी के दर पर आकर उन के चरण पकड़ कर नतमस्तक होते हैं तो इस का वास्तविक अर्थ यह है कि हे प्रभु! मैं अपना सर्वस्व तुम्हारे चरणों में सौंपता हूँ। जब ऐसे शुद्ध विचार और भावना से हम अपना सर प्रभु दर पर झुकाते हैं तो सचमुच ही प्रभु अपने भक्त के अंगसंग रहते हैं लेकिन ऐसी भावना हमारे अन्दर बहुत कम भक्तों में पाई जाती है। हम यह समझते हैं कि भगवान तो दिखाई नहीं देते और न ही हम भगवान को कभी देख सकते हैं। हमारी यह भूल है वास्तव में प्रभु तो हम सब के बीच मौजूद हैं, पर हमारे पास समय नहीं है कि हम प्रभु की ओर बढ़ें। प्रभु को देखने के लिए हमारे पास नेत्र नहीं हैं। जैसे नेत्रहीन व्यक्ति न सूरज को और न ही धूप को देख सकता है, ठीक इसी प्रकार हमारे पास वह दिव्य नेत्र नहीं हैं जिन से हम ईश्वर को पहचान सकें। जब तक हमारे नेत्र नहीं खुलते तब तक हम ईश्वर को पहचान नहीं सकते और नेत्र खुलते हैं सत्गुरु कृपा द्वारा। केवल सत्गुरु ही हमारे अन्तःकरण के नेत्र खोल सकते हैं। इस लिए यह बहुत जरूरी है कि हम किसी श्रोत्रिय-ब्रह्मनिष्ठ गुरु की शरण में जायें। यह तो एक सरल साधन है जिस से हम शीघ्र ही प्रभु का साक्षात्कार कर सकते हैं। दूसरा साधन है कि हम नियम से नाम जाप, ध्यान पूजा और भजन आदि द्वारा प्रभु को प्राप्त करें। दूसरा मार्ग लम्बा है।

सत्गुरु हमें ईश्वर तक पहुँचाने के लिए सीढ़ी का काम करते हैं। जिस प्रकार हम सूरज से धूप को अलग नहीं कर सकते ठीक उसी तरह ईश्वर और सत्गुरु में कोई भेद नहीं है। ऐसा सच्चा गुरु जो ज्ञान का बोध कराने वाला हो, कर्मयोगी हो और अच्छे आचरण वाला हो। प्राणी को भक्ति मार्ग पर चलते हुए ऐसे ही सत्गुरु की खोज करनी चाहिए। अपने इष्ट के चरणों में अनुराग व उन की सेवा करने में लगातार लगे रहना ही भक्ति है। ईश्वर की प्राप्ति के लिए अपने गुरु से अनन्य प्यार और गुरु की आज्ञा में रह कर तथा सेवा करके ही अपने प्रभु को प्रसन्न करना है। ऐसे शिष्य से प्रभु व सत्गुरु दोनों ही प्रसन्न रह कर अपनी कृपा से हमारे वह दिव्य नेत्र खोलने

में सहायक होते हैं जिस से हम ईश्वर को पहचान सकें। केवल सत्गुरु कृपा से ही हमारे अन्तःकरण के नेत्र खुल सकते हैं। इस लिए यह बहुत आवश्यक है कि हम एक योगी व उच्चकोटि संत की शरण ग्रहण करें। श्री सद्गुरु की सेवा तथा आज्ञा का पालन करने वाला व्यक्ति ही वास्तव में भक्त कहलाता है। ऐसे भक्त का हृदय वास्तव में शुद्ध होता है और ईश्वर के वास करने के लिये उत्तम आसन रूपी स्थान है। हमारे हृदय में जो ईश्वर को प्यार करने की भावना है वही हमें सही शब्दों में भक्ति करने के लिए प्रेरणा करती है। भावना भी ऐसी जिस में किसी प्रकार की इच्छा, छल और कपट, राग-द्वेष और ईर्ष्या न हो। पूर्ण रूप से भावना होने पर भगवान भी दौड़े आते हैं।

भक्त प्रह्लाद को कितने कष्ट सहने पड़े और जब प्रह्लाद ने तपते हुए खम्बे पर चींटी को चलते देखा तो किस भावना से बालक ने खम्बे को पकड़ा? धन्य हैं प्रभु जिन्होंने अपने भक्त के लिए खम्बे में से ही प्रकट होकर हिरण्यकश्यप का वध किया। फिर प्रभु को शान्त होने के लिए सच्चे भक्त प्रह्लाद ने ही प्रार्थना की। प्रभु प्रह्लाद से कहते हैं कि "मेरे आने में जो विलम्ब हुआ और जो जो तुम्हें कष्ट हुआ उस का मैं ऋणी हूँ और क्षमा माँगता हूँ।

प्रभु भक्त से क्षमा माँगते हैं और हम प्राणी एक दूसरे से क्षमा मांगने से लज्जा महसूस करते हैं। शुद्ध व निष्काम भावना का होना बहुत जरूरी है। यदि भावना ना होने पर हम तन, मन, धन भी सत्गुरु को अर्पित करते हैं तो इस का कोई लाभ नही और पूर्ण भावना से एक पुष्प भी यदि चरणों में चढ़ाया हो तो प्रभु उसे प्रेम से स्वीकार करते हैं। हमें वास्तव में अपने हृदय रूपी पुष्प को निष्काम भावनाओं से भर कर अपने प्रभु के चरणों में अर्पित करना चाहिए। जब हमारी भावना शुभ होगी तो प्रभु चरणों में स्वतः ही प्रेम उत्पन्न होगा। जब प्रेम होगा तभी हम भक्ति कर सकते हैं। भगवान के लिए भक्त और भक्त के लिए भगवान का होना जरूरी है ये दोनों ही एक दूसरे से अलग नहीं रह सकते। ईश्वर को प्यार करने की भावना से ही मनुष्य के हृदय में भक्ति होगी। अतः भगवान, भक्त व भक्ति इन का परस्पर इतना गहरा सम्बन्ध है जैसे-सूर्य, किरणें और धूप।

जिस भी प्राणी ने एक बार सच्चे हृदय से प्रभु के चरणों में सिर निवाया है फिर उसे दर पर आने की या इस मार्ग पर चलने का अवसर ना मिले तो किसी न किसी जन्म में उस का उद्धार तो केवल प्रभु के चरणों में आकर ही होगा। एक बार सच्चे हृदय से सिर झुकाया हुआ है तो प्रभु भी उस के ऋणी हैं। भक्त चाहे अपने मार्ग से हट जाये पर प्रभु ने तो जब तक उस का उद्धार नहीं करना तब तक उस का पीछा नहीं छोड़ना। भक्त के हृदय में भी अपने प्रभु के चरणों के निशान व याद सदा बनी रहती है और वे भी प्रभु के चरणों में आने के लिए जन्मों तक तड़फता है। जब हम ईश्वर का आश्रय लेकर उसे भजते हैं और हर क्षण ईश्वर के प्रति प्रेम और अपने इष्ट के स्वरूप का अनुभव करते हैं तथा ईश्वर के प्रति दृढ़ता से तार जोड़ लेते हैं तभी इस मार्ग पर उत्तीर्ण हो सकते हैं। इस सांसारिक माया में रमे हुए मन को प्रभु चरणों में लगाना बहुत कठिन है, लेकिन हमारे जन्मों की संचित की गई साधना द्वारा हमारा मन व तन, सन्त पुरुषों से प्रेम की तार आसानी से जोड़ लेता है। ऐसे संसारी प्राणी ही गुरु

दरबार में पहुँच कर गुरु भक्ति की साधना करते हैं। लेकिन हमेशा याद रखना चाहिए कि 'भक्ति' व 'माया' कभी भी इकट्ठे नहीं मिल सकते जैसे या रात होगी या दिन। इसी तरह या हम भक्ति कर सकते हैं या हम माया पा सकते हैं। हम केवल दोनों में से एक को ही पा सकते हैं।

हमें ये समझना चाहिए कि भक्ति द्वारा हमारा अंत: करण शुद्ध होता है, हमारे पाप नष्ट होते हैं और हमें शान्ति का अनुभव होता है। जीवन में केवल प्रभु की भक्ति ही सब सुखों की खान है। भक्ति द्वारा ही हमारे में वैराग्य आता है और हमे ईश्वर के दिव्य स्वरूप का ज्ञान तथा अनुभव होता है। भक्ति ही हमें अन्त समय तक साथ देती है। सांसारिक सुख जो हम बटोरने में लगे हुए हैं उन्हें यहीं छोड़ जाना है। वास्तविक सुख और शान्ति देने वाले परमपिता को हम भूल जाते हैं। यदि हम ये अनुभव करते हैं कि केवल ईश्वर की शरण ही हमारे 'सुख' व शान्ति का साधन है तो हमें संसार के सुख छोड़ कर उस परम पिता की शरण में आना चाहिए जिस से हमारा मन शान्ति व सुख का अनुभव कर सके और हम अपने जीवन को सार्थक बना सकें।

श्री महाप्रभु भगवान सदा शिव जी महाराज का यह उपदेश जो हिमालय पर सिद्ध समाज को दिया गया और उन की अपार करुणा कृपा से मनोरमा द्वारा उच्चारण समाधि से हम सब आश्रम में आये भक्तों को सुनने को मिला इस के मेनप्वायंट 'रघुनन्दन' अपनी डायरी में लिख रहा था। आश्रम के रामनौवीं उत्सव के बाद हम परिवार सहित श्री कश्मीरी लाल जैन के घर कनक मंडी में आ गए। मनोरमा समाधि की मस्ती में उन के घर की चारपाई पर जा कर लेट गईं। श्री कश्मीरी लाल जी ने मुझ से आश्रम के उत्सव के बारे में पूछा तो वहाँ जो जो जैसा जैसा देखा और सुना वह सब उन को बता दिया और उन्होंने जब डायरी से प्रवचन के मेनप्वायंट को पढ़ा तो कहा कि काश! वह भी वहाँ होते तो अपने कानों से पूरे का पूरा प्रवचन सुन पाते।

इस के थोड़ी देर बाद जैसे ही 'रघुनन्दन' श्यनकक्ष में गया यहाँ चारपाई पर मनोरमा लेटी हुई थीं, तो देखा वह आंखें बन्द करके चारपाई पर बैठी अपने हाथ के इशारों से कोई कापी और पैंन माँग रही थीं। यह लेने के बाद आश्रम में दिया गया सारे का सारा श्री महाप्रभु जी का यह प्रवचन मनोरमा द्वारा उस कापी में लिखा गया और वह कापी मुझे देकर मनोरमा चारपाई पर लेट गई।

जब रघुनन्दन ने कापी की लिखित को पढ़ा तो जाना कि श्री कश्मीरी लाल जी के मन में उठी सच्ची भावना से द्रवीभूत होकर यह कृपा श्री महाप्रभु जी द्वारा हुई है। जब वह कापी अपने मित्र श्री कश्मीरी लाल जी को पढ़ने के लिए दी तो वह कहने लगे कि जो उन्होंने डायरी के मेनप्वायंट पढ़े थे ठीक उसी क्रम में उन्हें भी श्री महाप्रभु भगवान शिव जी की कृपा से उन का यह सारा उपदेश पढ़ने को मिला है। फिर उन पर हुई इस प्रभु कृपा से उन की आंखों से प्रेम के आंसू बहने लगे। यह कैसी अनोखी करुणा कृपा है भगवान की।

'रघुनन्दन' के श्वास रोग संस्कार का भुगतान (ई सन् 1969):-

एक दिन 3250/15-D घर के बरामदे में 'रघुनन्दन' को थोड़ी देर के लिए ऐसा महसूस हुया कि उस के नाक और मुंह के द्वार तो खुले हैं मगर फेफड़ों के अन्दर हवा नहीं जा रही थी। मेरी इस परेशानी को सुन कर मनोरमा और बच्चे भी परेशान हो गये। धीरेन्द्र और अनुपम ने हमारे पड़ोसी श्री के. सी. शेनमार (डायरैक्टर जनरल पंजाब प्रिजनज़) के घर जा कर उन को जब बताया तो वह दो डाक्टरों को लेकर घर आए। जब डाक्टरों ने मुझे check किया तो उन्हें यह "दिल का दौरा पड़ा था" ऐसा लगा। डाक्टरों ने मुझे अस्पताल जाने की सलाह दी। श्री शेनमार ने मुझे अस्पताल जाने के लिए तैयार रहने को कहा और वह डाक्टरों को उन के क्लीनिक पर अपनी कार में छोड़ने चले गए। मनोरमा ने धीरेन्द्र को सैक्टर-14 में श्री ओम प्रकाश शर्मा को बुलाने भेज दिया और आप अस्पताल की तैयारी में लग गई। 'रघुनन्दन' ने तैयार हो कर श्री प्रभु चरणों में प्रणाम कर उन्हें अस्पताल जाने के बारे में बताकर मन ही मन कहा कि अच्छा प्रभु जी आप तो वहाँ जायेंगे नही तो मुझे वहाँ जाने की आज्ञा दीजिए। शर्मा जी के आने पर हम सब शेनमार जी के साथ उन की कार में सैक्टर-16 अस्पताल तत्काल चले गए। डाक्टरों ने 'नमोनिया' बता कर दाखिल कर लिया। मनोरमा ने डाक्टरों से अनुरोध किया कि आप पेशेंट को जनरल वार्ड की बजाए किसी वार्ड के कमरे में भेज दें क्योंकि हमारे दो छोटे बच्चे हैं, वहाँ हमें मुश्किल पड़ेगी। डाक्टरों ने जवाब दिया कि इस समय कोई भी कमरा खाली नहीं है। इस लिए मुझे जब यह लोग जनरल वार्ड की ओर लेकर जा रहे थे तो सामने से जो मेटरन आ रही थी उन्होंने कहा कि कमरा नं० 3 खाली है आप इन को वहाँ ले जाऐं। मुझे उस कमरे में ले गए।

अगले दिन सुबह 9 बजे डा० वर्मा जी आए, उन्होंने परीक्षण करके टेस्ट और दवाई लिख दी। 'रघुनन्दन' ने कालेज में छुट्टी की अरजी भेज दी। शर्मा जी ने कहा कि रात को अस्पताल में सोने के लिए श्री चुनी लाल महाजन आप के पास रहेंगे और सुबह 6 बजे यहाँ से घर आकर यूनिवर्सिटी ओफिस 7 A.M. पर अपना काम करेंगे। मनोरमा ने कहा कि बच्चों को उन के स्कूल भेज कर वह अस्पताल 10 बजे तक आएगी। रघुनन्दन ने जवाब दिया कोई बात नहीं जैसा श्री प्रभु जी चाहेंगे हो जाएगा। आप लोग चिंता न करें अगर मुझे किसी वस्तु की आवश्यकता हुई तो काल बैल से नर्स को बुला लूँगा। उस रात श्री चूनी लाल जी आकर कमरे में सो गए और अगले दिन सुबह 6 बजे कमरे से सैक्टर-14 घर को चले गए। मुझे अकेला देख प्रभु प्रेरणा से नर्सें अपने आप दवाई समय पर देने आ जातीं और शेष स्टाफ अपने आप मुझे ले जाकर सारे टेस्ट करवा रहे थे।

कालेज के मकेनिक सुशील की अनोखी घटना :- सुशील हमारे कालेज में मकेनिक था। कालेज में मेरी छुट्टी की अरज़ी और सैक्टर-16 होसपिटल में दाखिल हुआ जान वह मुझे वहाँ मिलने के लिये आया और पूछने लगा कि क्या वह रात को यहाँ सो जाए। मेरे जवाब देने पर कि हमारे गुरुभाई श्री चुनी लाल महाजन यहाँ रात में सोते हैं इस पर उसने कहा कि वह अपनी मर्जी से यहां पर नही आया और रोने लगा। मेरे पूछने पर कि उस

को यहां पर फिर किस ने भेजा है उस ने पिछली रात वाली घटना जो उस के साथ जैसे हुई वह सारी सुना दी। उस ने कहा कि कल रात अपने कमरे में जैसे ही उसे नींद आई तो किसी ने उसे पीछे से पकड़ कर उठा दिया और कहा कि ''अगर सोना है तो अस्पताल जा।'' इस पर सुशील समझा कि कमरे में कोई और भी है। इस का पता करने के लिए वह चारपाई से उठा और सारे कमरे की छानबीन करके देखा तो वहाँ कोई नहीं था। फिर भी उस ने बन्द कमरे के दरवाजे को अन्दर से ताला लगा कर वाहिर की खिड़की को भी बन्द करके उस की चिटकनी लगा दी और वह जैसे ही चारपाई पर लेटा और नींद से आंखें बन्द हुईं तो फिर उसे किसी ने पीछे से पकड़ कर उठा दिया और कहा कि ''अगर सोना है तो अस्पताल जा''। ऐसा सारी रात बार बार होता रहा और वह बिल्कुल सो न सका। जब वह कालेज गया तो उसे वहां मेरी छुट्टी की अर्जी और अस्पताल में दाखिले का पता चला तो वह यहां चला आया। सुशील ने आगे कहा कि आज उसे यहां सो कर देख लेने दें अगर उसे रात को यहां नींद आ गई तो ठीक है वरना कल से किसी दूसरे अस्पताल में जा कर उस जगह की तलाश करुँगा।

रात को श्री चूनी लाल जी और सुशील दोनों वहाँ आराम से सोये रहे। चूनी लाल तो सुबह 6 बजे कमरे से चले गए और सुशील को सात बजे 'रघुनन्दन' ने आवाज दी कि सुशील अब उठो, तैयार होकर अपनी चाय और ब्रेड ले लो और मुझे भी दे दो। फिर कालेज जो आठ बजे से आरम्भ होगा उस में अपनी ड्यूटी पर जाओ। सुशील ने चाय और नाश्ता तैयार करके कहा कि उस की ड्यूटी सुबह 10 बजे से शाम के 4 बजे तक कालेज में लगी हुई है सो वह यहाँ से पौने 10 बजे कालेज जाएगा। शाम को अस्पताल वह 4-30 बजे आ जाएगा क्योंकि उस की धर्मपत्नी अपने घर अमृतसर गई हुई थी। उस के ऐसा कहने पर श्री प्रभु जी की अपार कृपा लीला समझ में आई कि सुबह 6 बजे से 10 बजे तक के uncovered time gap के लिए और शाम 4 बजे से मनोरमा के घर बच्चों के लिए व घर का काम करने के लिए जाने के बाद और श्री चूनी लाल जी के रात को आने तक के uncovered time gap को भरने के लिये श्री प्रभु जी स्वयम् ही अपनी प्रेरणा से सुशील को यहां लाए हैं ताकि उन कृपालु जी के बालक को कोई परेशानी न हो। कैसी है यह श्री प्रभु जी की अपार करुणा कृपा जो अपने आप बिना माँगे अपने शरणागत भक्तों पर बरसती है।

मनोरमा जी की उच्चारण समाधि :- तीसरे दिन मनोरमा जब घर से अस्पताल के कमरे में आई तो वहाँ आते ही उन की भ्रसरिका बड़ी ओर से आरम्भ हो गई और काफी देर तक चलने के बाद वह समाधिस्थ हो गई। फिर उच्चारण समाधि द्वारा श्री प्रभु जी ने कहा कि ''बेटे तुम्हारा इस अस्पताल का संस्कार था इस लिए हम स्वयम् भी तुम्हारे इस संस्कारकाल में यहीं रहेंगे। इस संस्कार के समाप्त होने पर हम घर को जाएंगे।'' ''रघुनन्दन'' श्री प्रभु जी के इन करुणा कृपा रूपी वचनो को सुन कर अपने प्रेम भरे आंसुओं को न रोक सका। वहाँ वह अस्पताल, अस्पताल न रह कर मन्दिर बन गया। इस लिए 'रघुनन्दन' ने प्रभु आज्ञा के बाद नर्सों से

दवाई को दोनो हाथों द्वारा प्रसाद के रूप में लेना आरम्भ कर दिया तो एक नर्स ने मनोरमा से पूछा कि पहले तो प्रो० सूद दवाई को एक हाथ से लेते थे पर अब वह अपने दोनों हाथों द्वारा लेते हैं ऐसा क्यों? मनोरमा ने जवाब दिया कि आप ने यह उन से ही पूछ लेना। इस पर उस नर्स ने मुझ से पूछा कि अब आप दवाई को अपने दोनों हाथों द्वारा क्यों लेते हो? इस प्रश्न का उस नर्स को 'रघुनन्दन' ने जवाब दिया कि बेटी! जब भगवान किसी स्थान पर विराजमान हो जायें तो उस स्थान को क्या कहते हैं? नर्स ने कहा कि उस स्थान को मन्दिर कहते हैं। फिर उस नर्स से पूछा कि बेटी मंदिर में प्रसाद को कैसे लेते हैं। नर्स ने कहा कि दोनो हाथों द्वारा। इस पर 'रघुनन्दन' ने नर्स को समझाया कि आप द्वारा दी गई दवाई को वह प्रभु प्रसाद के रूप में ग्रहण करते हैं इस लिए मुझे दोनो हाथों द्वारा इस को लेना पड़ता है। यहाँ पर 25 दिनों के लिए डा० वर्मा द्वारा इन्वैस्टीगेशन तथा दवाई से इलाज चला।

श्री चूनी लाल महाजन के साथ हुई दिव्य घटना :- अस्पताल में रहने की आखिरी आधी रात में श्री चूनी लाल जी की आंख खुली तो उन्होंने देखा कि कमरे में बड़ी तेज रोशनी हो रही है। वह समझे कि आज यहाँ सोए हुए काफी सवेरा हो गया जिस के कारण इतनी सूर्य की रोशनी कमरे में आ गई। उन्होंने अपनी चादर और तकिया लेकर जैसे ही कमरे से बाहर दरवाज़ा खोल कर अपना कदम रखा तो देखा कि आकाश में तारे हैं और फिर घड़ी में समय देखा तो रात के 2 बजे थे। वह बड़े हैरान हुए और अपने घर सैक्टर-14 में आधी रात को ही चले गए यह विचार करके कि हो सकता है कहीं उन की धर्मपत्नी की तबीयत इस समय खराब हो गई हो और इसी कारण प्रभु जी ने मुझे कमरे में सूर्य की रोशनी का आभास कराया हो। जब वह अपने घर पहुंचे और घर की काल बैल बजाई तो उन की पत्नी ने उन से पूछा कि क्या अस्पताल में सब कुशल से तो है आप वहाँ से आज आधी रात में ही क्यूं यहाँ आ गये। जब श्री चूनी लाल जी ने अपनी आप बीती अपनी धर्मपत्नी को सुनाई तो वह बड़ी हैरान हुई।

मनोरमा जी की फिर अस्पताल में उच्चारण समाधिः- श्री चूनी लाल जी के आधी रात में अस्पताल से जाने के बाद दिन के दस बजे जब वहाँ कमरे में घर से मनोरमा जी आईं तो वहाँ उन की फिर उच्चारण समाधि हुई जिसमें श्री प्रभु जी ने कहा कि बेटे! ''तुम्हारा अस्पताल का संस्कार आज समाप्त हुआ हम घर जा रहे हैं और तुम भी घर आ जाना।'' जब मनोरमा की समाधि खुली और डा० वर्मा आए तो उन्होंने कहा कि आप को Bronchial Asthama है। इस के लिए उन्होंने दवाई आदि लिख दी है। अब आप अपने डिसचार्ज पेपर लेकर घर जा सकते हैं। हम ने डा० वर्मा जी का धन्यवाद किया और घर वापिस आ गए।

घर आकर श्री चूनी लाल जी को सूचना दे दी कि हमें अस्पताल वालों ने छुट्टी दे दी है और हम अपने घर आ गए हैं। श्री चूनी लाल जी का इतनी रातें हमारे साथ अस्पताल में साथ देने के लिए उन का धन्यवाद किया तब

श्री चूनी लाल जी ने उन के साथ डुई कल आधी रात वाली घटना हमें सुनाई।

दवाई के सेवन से कुछ फर्क पड़ा मगर रात को सर्दी आरम्भ होते ही तकलीफ बहुत बढ़ जाती। दस दिन के बाद डा० वर्मा ने दवाई के साथ पेईनकिलर भी दिया। इस से कुछ आराम आया मगर आधी रात में मुझे सांस खींच कर लेना पड़ता। उस समय घर वाले सारे सोए हुए होते और मुझे सांस के कारण नींद नही आती थी। सुबह सारा शरीर दुखता था। डा० वर्मा ने कहा कि इस बीमारी को अभी पूरी तरह से समाप्त करने का उन के पास कोई इलाज़ नहीं है। बीमारी का प्रकोप बढ़ता ही चला गया।

मिलटरी अस्पताल जालंधर केन्ट की अनोखी घटना :- श्री रघुवीर जी के दर्द गुर्दा का ईलाज मिलटरी होसपिटल जालंधर केन्ट में काफी समय से चल रहा था। उन की बाईं किडनी में X रे रिपोर्टों के आधार पर काफी बड़ी पत्थरी थी। डाक्टरों ने जब उन की बाईं किडनी का आपरेशन किया तो किडनी में कोई पत्थरी नहीं मिली। सारे डाक्टर बड़े हैरान परेशान थे कि ऐसा हुआ कैसे! जबकि उन के सब X रेज में पत्थरी साफ दिखाई दे रही थी। इस के बाद उन को मेडिकल grounds के आधार पर मिलटरी की नौकरी से रिटायरमैंट मिल गई। फिर श्री रघुवीर जी होशियारपुर में आकर अपने एक मित्र के साथ मिल कर 'रामा पेंटस' के नाम से कोतवाली बाजार में दुकान करने लगे।

महाप्रभु भगवान सदा शिव जी की धूनी के प्रशाद की प्राप्ति :- ई सन् 1970 अप्रैल की छुट्टियों में मनोरमा ने होशियारपुर पूज्यनीय श्री रघुवीर जी के पास जा कर उन से प्रार्थना करने का मन बना लिया ताकि प्रो० सूद को सांस के रोग से निजात मिल सके। चण्डीगढ़ से हम सब बस द्वारा होशियारपुर पहुंचे और वहां श्री कश्मीरी लाल जी के घर कनक मण्डी में ठहर कर श्री रघुवीर जी को उन के घर सराज़ा चौंक पर मिलने गये। मनोरमा ने श्री रघुवीर जी को प्रो० सूद के होसपिटल में रहने का सारा हाल बताया और आंसू भरी आंखों से प्रार्थना की ''कि मुझ से इन की तकलीफ देखी नहीं जाती आप श्री प्रभुजी से कह दें कि वह या तो इन्हें कृप्या ठीक कर दें नहीं तो इन को अपने पास बुला लें।'' श्री रघुवीर जी को मनोरमा के मन की सच्ची पुकार पर दया आ गई और वह ध्यानास्थ हो गये। समाधि से उठ कर उन्होंने 'रघुनन्दन' को श्री महाप्रभु भगवान सदा शिव जी महाराज की धूनी का प्रशाद दिया और कहा कि इस की दस पुड़ियां बना कर हर रोज़ प्रभु आरती के बाद एक एक करके दस दिन ले लेना और यहाँ उन के घर के अन्दर ही रहना बाहर नहीं जाना। दस दिन के बाद अगले 15 दिन घर से बाहर तो जा सकते हो मगर प्यास या भूख लगने पर इसी घर में आकर खाना-पीना बाहर का बिल्कुल नही। 'रघुनन्दन' ने उन की आज्ञा का अक्षरश: पालन किया और आज दिन 46 वर्षों के बाद तक भी मुझे न तो कभी दमें का दौरा पड़ा और न ही कोई सांस का रोग हुआ। यहाँ तक कि कुछ समय बाद कालेज में आए पी.जी.आई. के डाक्टरों ने जब कालेज के स्टाफ के फेफड़ों की ताकत अपनी मशीन द्वारा जांची तो प्रो० सूद के फेफड़ों की ताकत सब के मुकाबले प्रथम रही। यह कैसी करुणा कृपा है मेरे श्री प्रभु जी की।

श्री प्रभु करुणा कृपा अवलम्बित अनुभवी जीवन

देहली में हुई उमेश कपूर और मीरा खन्ना की शादी की दिव्य घटना :- श्री प्रभु रामलाल जी महाराज द्वारा दीक्षित आदरनीय श्री श्याम लाल जी खन्ना की सुपुत्री मीरा का विवाह संस्कार श्री स्वामी मुलख राज जी द्वारा दीक्षित योग साधन आश्रम होशियारपुर के योगाचार्य प्रो० चमन लाल कपूर के सुपुत्र उमेश कपूर के साथ देहली में होना निश्चित हुआ। इस विवाह का निमंत्रण स्वयम् श्री रघुवीर जी (उमेश कपूर के मामा जी) ने चण्डीगढ़ आकर मनोरमा को जब यह बता कर दिया कि श्री प्रभु रामलाल जी महाराज ने कहा है कि इस विवाह में हम एक बन्दर को नचायेंगे तो वह बहुत प्रसन्न हुईं। उसे लगा कि इस विवाह में श्री रघुवीर जी की समाधि में कुछ अनोखी लीला होगी। इस लिए उस विवाह में भाग लेने के लिये हम सब खुशी-खुशी मनोरमा के मम्मी पिता जी के करोल बाग वाले घर में समय पर पहुंच कर, तैयार होकर, पास की प्रह्लाद मारकीट में विवाह वाले घर में आ गए। श्री रघुवीर जी अपने इस बड़े भाई के घर में पहले से ही ध्यानस्थ थे और जिस कमरे में शगुन का कार्य होना था वहाँ एक ऊंचे आसन पर श्री प्रभु रामलाल जी महाराज द्वारा दीक्षित महात्मा ऋृषि देवी जी विराजमान थीं। हम सब महात्मा ऋृषि देवी जी को प्रणाम कर उस कमरे में बैठ गए। वहाँ बैठते ही मनोरमा ध्यानास्थ हो गईं। वहां पर शगुन की पूजा-प्रथा के लिए पंडित जी का इन्तजार हो रहा था। इतने में श्री श्यामलाल जी खन्ना अपने अन्य रिश्तेदारों के साथ लड़के को शगुन डालने वहाँ आ गये। मनोरमा जी की आवेश समाधि द्वारा श्री प्रभु रामलाल जी महाराज ने श्याम लाल को आज्ञा दी कि "इस शगुन समारोह में लड़के वालों और उन के सम्बन्धियों के लिए जो तुम पैसे लाए हो वह हमें दे दो।" श्री श्याम लाल जी ने 100-100 रूपये के पांच नोट मनोरमा जी के हाथों में दे दिए। श्री प्रभु जी ने तीन 100-100 वाले नोटों के छोटे नोट मंगवाए। इतने में पंडित जी भी आ गये और मनोरमा जी की बन्द आंखों द्वारा हो रही प्रभु लीला का आनन्द लेने लगे।

सब से पहले मनोरमा जी की बन्द आखों द्वारा शगुन के एक सौ एक रूपये महात्मा ऋृषि देवी जी को भेंट किए गए। उस के बाद सौ रूपये का एक नोट लड़के के माता-पिता आदरनीय प्रो० कपूर और श्रीमती कपूर को उन के नामों से बुलाकर अपने आशीर्वाद सहित वहां दिया। फिर लड़के उमेश को वहाँ बुलाया और श्री प्रभु जी ने रू 51/- उस को अपने आशीर्वाद के साथ दिए। इस के बाद श्री प्रभु जी ने प्रो० कपूर और श्रीमती कपूर के सब सम्बन्धियों का नाम ले लेकर अपने पास बुला बुला कर उन सब को आशीर्वाद के साथ शगुन के रूपये दिए। श्री प्रभु जी ने नाम ले लेकर उन रिश्तेदारों को भी शगुन के रूपये और अपना आशीर्वाद दिया जो इस शादी में किसी

कारण आ नहीं सके थे। इस के बाद श्री प्रभु जी ने श्यामलाल से पूछा कि "बेटे! बारात के भोजन में लहसुन और प्याज का इस्तेमाल तो नहीं हुआ।" श्री श्याम लाल जी ने जवाब दिया कि महाराज जी हमारे यहां आने से पहले खाना बनाने वाले लोग प्याज और लहसुन काट रहे थे। श्री श्यामलाल जी ने उसी समय अपने एक साथी को जैन धर्मशाला भेज दिया ताकि वह वहाँ पर सब्जियों में प्याज और लहसुन के इस्तेमाल को रोक दे। इस पर प्रो० चमन लाल जी ने श्री श्यामलाल जी खन्ना को कहा कि आप कोई चिंता न करें अगर हलवाई ने सब्जियों में प्याज और लहसुन का इस्तेमाल कर लिया होगा तो हम श्री प्रभु जी की आज्ञानुसार वहाँ पर दही से खाना खा लेंगे।" वहाँ पर श्री प्रभुजी बड़ी प्रसन्न मुद्रा में दिखाई दे रहे थे। श्री प्रभु जी ने कहा कि "जब हम अपने महाप्रभु भगवान सदा शिव जी के पास जाने के लिए नेपाल से ऊपर एक पहाड़ी पर बैठे थे तो वहाँ पर हम ने एक भजन बनाया था। आज वह भजन हम सब को सुनाते हैं।"

श्री प्रभु जी के इस कृपा रूपी 'भजन' को 'रघुनन्दन' ने वहाँ अपने पास लिख लिया। इतने में श्री श्यामलाल जी के साथी ने आ कर बताया कि जैन धर्मशाला में हलवाई लोग सब्जियों को प्याज और लहसुन का छोंक लगाने ही वाले थे कि उस ने वहां पहुंचते ही उन को मना कर दिया और उन्हें बता भी दिया कि श्री प्रभु जी की आज्ञानुसार वहाँ लहसुन और प्याज का बिल्कुल इस्तेमाल नहीं होगा। इस के बाद श्री श्यामलाल जी ने हाथ जोड़ कर "जैन धर्मस्थान करोलबाग" में सब को मिलनी आदि की प्रार्थना की और श्री प्रभु जी को प्रणाम करके व अपने साथियों को लेकर अपने स्थान पर चले गए।

वहां घर में विवाह की रस्में पूरी होने के बाद सब बाराती तैयार हो रहे थे और नीचे सड़क पर बैन्ड बाजे वाले, लाईट वाले और घोड़ी वाला दूल्हे और बारातियों का इन्तजार कर रहे थे। थोड़ी देर में दूल्हे के साथ सब बाराती घर की पहली मंजिल से नीचे सड़क पर आए। समाधिस्थ मनोरमा जी आंखें बन्द, बिना चप्पल डाले नंगे पाओं, साड़ी के साथ नीचे उतर कर, घोड़ी के आगे जा कर खड़ी हो गईं।

जब दुल्हे और सरबाले को घोड़ी पर बिठा कर वारने आदि की रस्मों के बाद, बैंड बाजे बजने लगे तो तीनों लोकों के स्वामी ब्रह्मा बिष्णु जी को भी नचाने वाले आज अपने भक्त परिवारों की अटूट श्रद्धा और प्रेम के वशीभूत हो कर समाधिस्थ मनोरमा जी के रूप में स्वयम् श्री रामलाल प्रभु घोड़ी के आगे आगे सारे रास्ते नाचते चले गए। जो लोग इस बारात को देख रहे थे वह कह रहे थे कि आज तक हम ने बारातें तो बहुत देखीं पर यहां पर तो कमाल ही हो गया। देखो यहां एक औरत शराब के नशे में धुत आंखें बन्द कैसे नाच रही है। वहां किसी को क्या मालूम कि स्वयम् प्रभु अपने भक्तों के प्रेम के बन्धन में बंधे हुए इस भूमि पर अपनी प्रेम लीला कर रहे हैं। कैसी है यह प्रभुजी की करुणा कृपा लीला।

जैन धर्मस्थान के सामने रस्म मिलनी और जयमाला हुईं। उस के बाद, बाराती खाने के लिए चले गए

और लड़की वाले दुल्हे को अपने कमरे में ले गए। वहां खन्ना परिवार ने श्री प्रभु जी के गृहस्थी रूप को अपने मन्दिर में बड़े प्रेम से सजाया हुआ था। वहाँ आरती पूजा के बाद कुछ रस्में करके लड़की वाले दुल्हे और दुल्हन को विवाह के मंड़प में ले गए। समाधिस्थ मनोरमा जी दुल्हे और दुल्हन के साथ विवाह मंडप में सारी रात रहीं।

श्री प्रभु जी के इस बारात के खाने में लहसुन और प्याज के इस्तेमाल पर रोक लगाने से 'रघुनन्दन' के मन में एक प्रश्न बार बार उठ रहा था कि आजकल शाकाहारी लोगों के विवाह संस्कारों पर लहसुन और प्याज का खुला इस्तेमाल होता है तो यहाँ पर इन के इस्तेमाल पर जो रोक लगाई है इस का कोई न कोई कारण तो अवश्य होगा। वहां खाना खाने के बाद मुझे पखाना घर का पता करने के लिए जैन धर्मस्थान के कार्यालय में जाना पड़ा तो देखा कि वहाँ जैन धर्मस्थान में ठहरने वाले सभी लोगों के लिये एक बड़े नोटिसबोर्ड पर नियमावली लिखी हुई थी। उस में दिए एक नियम के अनुसार धर्मस्थान में रहने वाला कोई भी व्यक्ति लहसुन व प्याज का वहां इस्तेमाल नहीं करेगा। यह नियम पढ़ कर जाना कि श्री प्रभु जी ने अपने बच्चों से होने वाली स्थान मर्यादा की त्रुटि को अपनी आज्ञा द्वारा कैसे सुधार दिया।

सारी रात 'रघुनन्दन' भी मनोरमा जी के साथ विवाह मंडप में रहा और फेरों के बाद जब 'मीरा' बेटी को विदा करने के लिये सारे लड़की वाले जैन धर्मस्थान से बाहर जा रहे थे उस समय समाधिस्थ मनोरमा जी और 'रघुनन्दन' श्री श्यामलाल जी के साथ-साथ चल रहे थे। मीरा बेटी की विदाई के समय श्री श्यामलाल जी की आंखों में आँसू आ गए। इस पर बन्द आंखें समाधिस्थ मनोरमा जी ने अपने हाथों के इशारे से श्री श्यामलाल जी से कुछ लिखने के लिए पेपर और पैंन मांगा। तो उन्होंने अपनी पाकैट डायरी और पैंन उन्हें दे दिया। मनोरमा जी द्वारा श्री प्रभु जी ने उस डायरी में पैंन से कुछ लिख कर वह डायरी और पैंन श्री श्यामलाल जी को वापिस दे दिए। तो श्यामलाल जी ने जब प्रभु संदेश पढ़ा तो मुस्करा दिए। फिर हम तीनों आगे चलने लगे। 'रघुनन्दन' ने बाद में आदरनीय श्री श्यामलाल जी से प्रार्थना की कि जो आप की डायरी में लिखित बात है अगर वह कानफिडैशियल न हो तो कृप्या मुझे बता दें। इस पर श्री श्यामलाल जी ने वह पाकैट-डायरी मुझे दे दी। उस में लिखा था कि ''बेटे श्यामलाल! तुम सदा यह कहते रहे कि प्रभुजी यह बच्चे आप के हैं तो फिर आज बेटी की विदाई पर तुम्हारी आंखों में आँसू क्यों?'' यह पढ़ कर वह डायरी श्री श्यामलाल जी को वापिस कर सब बारातियों के साथ हम भी घर आ गये। घर में आकर मनोरमा जी की समाधि खुली। तो वहां पर श्री रघुवीर जी ने मनोरमा से कहा कि श्री प्रभु जी आप के मम्मी-पिता जी के करोलबाग वाले घर में हवन सत्संग करवाना चाहते हैं इस लिए उन से पता करके बताना कि उन का क्या विचार है। इस पर मनोरमा ने कहा कि वह घर में सत्संग हवन के लिए कभी नहीं मानेंगे। इस पर श्री रघुवीर जी ने 'रघुनन्दन' की डयूटी लगा दी। फिर हम लोग वहाँ से मम्मी-पिता जी के घर आकर सो गए।

अगले दिन सुबह 'रघुनन्दन' ने पिता जी से उनके घर में आदरणीय प्रो० कपूर जी द्वारा 'हवन-सत्संग' करवाने के लिए प्रार्थना की। इस पर उन्होंने कहा कि यह तो बड़ी अच्छी बात है। 'हवन सत्संग' से तो घर की शुद्धि होती है। इस लिए हवन आदि करवाने में कोई कठिनाई नहीं पर यह हवन होगा कहाँ पर? इस पर 'रघुनन्दन' को कहना पड़ा कि जहां आप ठीक समझें। तो पिता जी ने कहा कि घर के बरामदे में ठीक रहेगा। 'रघुनन्दन' ने जवाब दिया ठीक है पिता जी। अब अगर आप की आज्ञा हो तो उन्हें कह दूँ ताकि वह 'हवन-सत्संग' यहाँ करने की तारीख और समय बता दें। पिता जी ने जवाब दिया कि आप ने उन से हवन-सत्संग की तारीख और समय पूछ कर हमें बता देना। अगले दिन पिता जी से हुई सारी बात श्री रघुवीर जी को बता दी। उन्होंने आदरणीय प्रो० कपूर जी से तारीख और समय पक्का कर मुझे बता दिया। रात को घर जाने पर 'रघुनन्दन' ने पिता जी को घर में हवन-सत्संग की तारीख और समय के बारे में बता दिया। उस निश्चित दिन व समय पर 'हवन-सत्संग' के लिए घर पर आदरनीय प्रो० कपूर, फिरोज़पुर वाले कंवर हरबंस लाल जी तथा अन्य भक्तगण पधारे। उन का उचित सत्कार और जलपान कराने के बाद हवन आरम्भ हुआ। मनोरमा जी को प्रभु जी ने समाधिस्थ कर दिया। मम्मी-पिता जी के लिए यह एक अनोखी बात थी। फिर समाधिस्थ मनोरमा जी द्वारा श्री प्रभु जी ने मम्मी स्नेह कान्ता जी के गले में एक फूलों की माला डाली और पिता जी को अपने आशीर्वाद सहित एक पुष्प दिया। वहाँ पर आदरणीय प्रो० कपूर जी का उपदेश भी हुआ। सत्संग के समापन पर सब भक्त अपना अपना प्रसाद लेकर अपने अपने घर को चले गए। अगले दिन हम लोग भी देहली से चण्डीगढ़ वापिस आ गए।

प्रधान योगाचार्य श्री चन्द्रमोहन जी महाराज के आगमन पर प्रभु लीला :-

ई सन् 1970 के अक्टूबर मास में श्री चन्द्रमोहन जी महाराज का सैक्टर-14 चण्डीगढ़ में 15 दिवसीय योग प्रचार कार्यक्रम गत वर्षो की भांति श्री ओम प्रकाश शर्मा जी के घर में हुआ।

ई सन् 1966 से श्री चन्द्रमोहन जी महाराज के गत वर्षों के चण्डीगढ़ सैक्टर-14 के शाम के सत्संग में हम हर रोज़ श्री प्रभु कृपा से, दोनों छोटे बच्चों-धीरेन्द्र और अनुपम के साथ सम्मिलित होते थे। वहाँ पर मनोरमा समाधिस्थ हो जाती और उस की समाधि रात के एक दो बजे खुलती तो धीरेन्द्र सोये हुए को श्री रूप कालिया जी उठाते और अनुपम सोई हुई प्यारी बेटी को 'रघुनन्दन' उठा कर मनोरमा के साथ सैक्टर-15 के घर में आकर सो जाते। इन गत वर्षों में मनोरमा ने श्री रघुवीर जी को श्री चन्द्रमोहन जी के योग प्रचार के इस कार्यक्रम में वहाँ जाने के लिए कई बार कहा था। इस बार उमेश और मीरा की शादी के बाद जब मनोरमा ने देहली में श्री रघुवीर जी से अक्टूबर में श्री चन्द्रमोहन जी महाराज के योग प्रचार कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए कहा तो उन्होंने जवाब दिया कि इस बार हम एक बीमार को अपने साथ लेकर उन के पास जायेंगे और छुप कर देखेंगे कि योग से वह उस बीमार को कैसे ठीक करते हैं।

इस वर्ष अक्टूबर 1970 में श्री चन्द्रमोहन जी महाराज के चल रहे योग प्रचार कार्यक्रम के कुछ दिनों बाद मनोरमा ने सुबह विस्तर से उठ कर मुझे कहा कि आज आप कालेज से छुट्टी लेकर इतना घी, चावल, आटा, खांड आदि बाज़ार से लेकर बहन बिमला शर्मा को उन के घर दे आयें और अगर वह पूछें तो कह देना कि यह श्री प्रभु जी ने श्री महाराज जी के लिये भिजवाया हैं। 'रघुनन्दन' ने वैसा ही किया। जब वह सामान श्रीमती बिमला शर्मा (पत्नी ओ.पी. शर्मा) को दिया तो उन्होंने पूछा कि ''सूद साहिब! महाराज जी तो अब चार दिन में सँवाई जाने वाले हैं तो इतने सारे सामान का जो श्री प्रभु जी ने महाराज जी के लिए भिजवाया है उस का क्या करेंगे''? इस पर 'रघुनन्दन' ने उन्हें जवाब दिया कि बहन जी अगर यह सामान श्री महाराज जी के काम नहीं आएगा तो उन के जाने के बाद यह वापिस घर चला जायेगा। उन्होंने कहा तब ठीक है।

अगले दिन एतवार को सुबह 8 बजे महाराज जी ने मनोरमा को अपने सैक्टर-14 के सत्संग पर बुलाया तो मनोरमा ने कहा कि वह 8 बजे वहाँ आ जाएगी। उसी रात 3 बजे 'रघुनन्दन' के पेट में दर्द गुर्दा आरम्भ हो गई। दवाई और गर्म बोटल द्वारा आराम न आने पर सुबह छः बजे मनोरमा को जब बताया तो मनोरमा ने धीरेन्द्र बेटे को उठा कर कहा कि महाराज जी के पास जाकर उन्हें कहना कि मेरी मम्मी आज 8 बजे के सत्संग में नहीं आ सकेंगी क्योंकि पापा के पेट में रात से बहुत दर्द हो रहा है। सन्नी बेटे के महाराज जी को बताने के बाद उन्होंने उसे बहुत प्यार किया। फिर वह वापिस घर आ गया।

स्वामी श्री मुलखराज जी द्वारा दीक्षित श्री राजकुमार जी सैक्टर-22 के कुछ भक्तों के साथ एतवार सुबह 8 बजे सैक्टर-14 के योग प्रचार सत्संग कार्यक्रम के लिए वहाँ गए तो प्रधान योगाचार्य श्री चन्द्रमोहन जी द्वारा उन को पता चला कि कल रात से प्रो० सूद के पेट में बहुत दर्द होने के कारण मनोरमा के सुबह न आ सकने पर आज सुबह का सत्संग शाम को होगा। आप सब उस में अवश्य आएं।

जब वह भक्तगण वहाँ से लौट रहे थे तो प्रो० कृष्णलाल खेत्रपाल (प्रो० चमन लाल कपूर जी के सब से बड़े दामाद) मेरे कालेज के साथी उन से कहने लगे कि सैक्टर-22 जाते हुए प्रो० सूद के घर सैक्टर-15 में उन का हाल पूछ कर जायेंगे। उन के घर आने पर सूद परिवार ने उन सब श्री प्रभु जी के बच्चों का स्वागत कर जल पान कराया तो उन्होंने कहा कि आज रविवार का सत्संग न तो उन के किसी एक के घर में हो सका और न उन्हें सैक्टर-14 में आदरणीय श्री चन्द्रमोहन जी महाराज द्वारा प्राप्त हुआ। इस पर प्रो० सूद ने जवाब दिया कि यह घर भी तो श्री प्रभु जी का ही है आप यहां पर अपना सत्संग कर लीजिए। वह सब बड़े प्रसन्न हुए और सब ने मिल कर कमरे से सोफा आदि बाहर निकाल कर दरी बिछाई और फिर श्री प्रभु जी को वहाँ विराजमान कर सत्संग को आरम्भ कर दिया।

सत्संग आरम्भ होने के बाद 'रघुनन्दन' ने मनोरमा से कहा कि सत्संग के बाद खाने का समय हो जाएगा।

इस लिए आप एक दाल और एक सब्जी बनाने का प्रबन्ध कर लें ताकि श्री प्रभु जी के सब बच्चे यहाँ पर उन का प्रसाद पा सकें। मनोरमा और श्रीमती आशा खेत्रपाल ने मिल कर दाल बननी रख दी और जब आशा आटा गोंध रही थी तो मनोरमा ने आशा से कहा कि वह श्री प्रभु जी को प्रणाम करके सब्जी को बनने रख देंगी।

कमरे में जाकर जैसे ही मनोरमा जी ने श्री प्रभु चरणों में प्रणाम किया वह समाधिस्थ हो गईं और मनोरमा जी की उच्चारण समाधि द्वारा श्री प्रभु रामलाल जी महाराज ने मेरे पास आकर चिरम्ची को बच्चों से मंगवा कर मेरे आगे रखवा दिया। फिर अपने हाथ में पकड़े पुष्प को मुझे देकर उसे सेवन करने की आज्ञा दी और बाद में चरणामृत मेरे मुँह में डाल दिया। उसे पीते ही चिरम्ची में उल्टीयां हुई और दर्द कम हो गई तो श्री प्रभु जी ने कहा कि ''बेटे! अब न तुम कुछ खाओगे और न जी हम लेंगे और यहां घर में कोई भी कुछ नही खायेगा। सब सैक्टर-14 के सत्संग में जाएंगे।'' श्री प्रभु आज्ञानुसार घर को ताला लगा कर हम सब समाधिस्थ मनोरमा जी के पीछे पीछे सीढ़ियों द्वारा नीचे उतर कर सड़क पर आ गए। मनोरमा जी नंगे पाओं, अपने दोनों बाजुओं को फैलाये, हाथों को खोले, बन्द आंखें आगे आगे चल रही थी और हम सब उन के पीछे पैदल चल रहे थे। वह सैक्टर-15 की मेन रोड़ की market से सैक्टर-14 की मेन रोड़ पर यहाँ कई गाड़ियों और बसों की भीड़ थी उन के बीच से निकलती हुईं हम सब के साथ श्री चन्द्र मोहन जी महाराज के पास जा पहुँची। सब ने श्री महाराज जी को प्रणाम किया। महाराज जी ने शर्मा जी को बुला कर कहा कि इन सब को प्रेम से बिठा कर श्री प्रभु जी का प्रसाद दो। श्री ओम प्रकाश शर्मा ने उन को पंगत में बिठा कर भोजन कराया। जब वह सब नीचे भोजन कर रहे थे तो मनोरमा जी ने महाराज श्री चन्द्रमोहन जी को कहा कि आप के पास एक मरीज को लाई हूँ आप इसे ठीक कर दीजिए। श्री महाराज जी ने मुझ से पूछा कि ''लला! आप को क्या तकलीफ है?'' 'रघुनन्दन' ने जवाब दिया महाराज जी इस समय मेरे शरीर में बड़ी तेज़ दर्द गुर्दा हो रही है। श्री महाराज जी ने 'रघुनन्दन' को 5 मिन्ट के लिए शीर्श आसन करवाने के लिए शर्मा जी को आज्ञा दी तो शर्मा जी ने एक दूसरे अपने गुरुभाई के साथ मिल कर मुझे वहीं दीवार के साथ, घड़ी देख कर पूरे 5 मिन्ट के लिए शीर्श आसन करवाया। फिर महाराज जी ने पूछा कि ''लला! अब दर्द कैसी है? 'रघुनन्दन ' ने कहा कि महाराज जी दर्द तो पहले से भी बढ़ गई है। इस पर महाराज जी ने कहा ''लला! तुम नीचे मंदिर में जा कर आराम से लेट जाओ।'' उन की आज्ञानुसार नीचे श्री प्रभु मन्दिर में जा कर 'रघुनन्दन' लेट गया। फिर श्री महाराज जी ने शर्मा जी के द्वारा दवाई बनवा कर मुझे देने को कहा। इस पर शर्मा जी ने नीचे प्रभु मंदिर में आकर मुझ से कहा कि ''सूद साहब! आप उठो और श्री महाराज जी ने कहा है कि यह दवाई लो जो आप के लिए बनवाई है इस के सेवन से अभी दर्द ठीक हो जाएगी।'' 'रघुनन्दन' ने शर्मा जी से दवाई वाला कप ले लिया और श्री प्रभु जी के चरणों में मन ही मन प्रार्थना की कि प्रभु जी अब क्या करूँ? अगर

लेता हूँ तो आप की आज्ञा का उलंघन होता है और अगर नहीं लेता तो श्री चन्द्रमोहन जी का निरादर होगा। इस समस्या को कृप्या आप ही निपटा सकते हैं।' जैसा आप ठीक समझें वैसी आज्ञा करें। इतने में शर्मा जी मंदिर से बाहर चले गए और समाधिस्थ मनोरमा जी के रूप में विराजमान मेरे अंतरयामी प्रभु ने मेरे हाथ से कप लेकर दवाई को पी लिया और खाली कप मेरे हाथ में देकर वह ऊपर श्री चन्द्रमोहन जी महाराज के पास चली गईं। उसी समय शर्मा जी मेरे पास आए और दवाई वाला खाली कप मेरे हाथ से लेकर मेरा हाल पूछा तो 'रघुनन्दन' ने जवाब दिया कि शर्मा जी इस समय दर्द नही है तो उन्होंने कहा कि उन्हें पता था कि यह दवाई पीते ही आप ठीक हो जाओगे और वैसा ही हुआ। रघुनन्दन ने जवाब दिया कि शर्मा जी यह सब श्री प्रभु जी की करुणा कृपा लीला है जिस से यह मेरा दर्द बिल्कुल जाता रहा।

सत्संग में श्री प्रभु जी की दिव्य लीला :-

आदरनीय श्री चन्द्रमोहन जी महाराज ने सत्संग के लिए सब भक्तों को शर्मा जी के घर के सामने लगे शामियाने में जा कर बैठने की आज्ञा दी। जब सारे भक्तगण आ कर वहां पर भजन सुन रहे थे उस समय महाराज जी और उन के साथ समाधिस्थ मनोरमा जी नीचे शामियाने में आए और वहां पर विशेष रूप से सजाए गए प्रभु मन्दिर में प्रणाम कर श्री प्रभु जी की आरती करने लगे। आरती के बाद सब भक्तों ने बारी-बारी से श्री महाराज चन्द्रमोहन जी को प्रणाम किया और फिर महाराज जी अपने आसन पर विराजमान हो गए।

इतने में समाधिस्थ मनोरमा जी ने श्री प्रभु चरणों से पुष्प उठा कर वहां बैठे भक्तों के बीच जा जा कर उन को पुष्प प्रशाद की एक एक पत्ती जैसे जैसे अपने आशीर्वाद सहित दी तो वह सब के सब ध्यानास्थ होते चले गए। जब समाधिस्थ मनोरमा जी के पास पुष्प समाप्त हो गये तो उन्होंने एक छोटी बालिका (आयु दो वर्ष) को अपनी गोदी में उठा लिया और उस के पाओं से जिस-जिस भाग्यशाली भक्त को छुआ वह सब के सब ध्यानास्थ होते गए। इस श्री प्रभु जी की करुणा कृपा लीला के बाद श्री चन्द्रमोहन जी महाराज का प्रवचन हुआ और मनोरमा जी की समाधि खुलने के बाद महाराज जी तथा सब भक्त समाज अपने अपने स्थानों को चले गए।

सत्संग में हुई दिव्य प्रभुलीला का तत्व :- अगले दिन सुबह के सत्संग में कल-समाधिस्थ हुए सब भक्तों ने श्री चन्द्रमोहन जी महाराज को बताया कि महाराज जी कल यहां उन्होंने अपने अपने ध्यान में स्वामी श्री मुलखराज़ जी महाराज को वहां आसन पर विराजमान देखा। स्वामी श्री मुलखराज जी महाराज का ई सन् 1960 में देहावसान हो गया था। इस पर उन भक्तों के मन में श्री स्वामी मुलखराज जी के प्रति द्वेष होने के कारण उन्होंने ऐसा सोचा कि कल मनोरमा को किसी पिशाच आत्मा ने समाधिस्थ किया हुआ था जिस से उन सब को पहली बार स्वामी मुलखराज जी के ध्यान में दर्शन हुए थे।

सोमवार को फिर रात के सत्संग में मनोरमा जी उसी तरह वहां समाधिस्थ रही। श्री चन्द्रमोहन जी महाराज ने प्रभु आरती के बाद पहली बार जम्मू से चण्डीगढ़ आए अपने उन शिष्यों के नाम बोल बोल कर शक्ति (मनोरमा) के द्वारा उन को अपने पास बुला कर फिर भक्तों को समझाया, कि बन्द आंखें मनोरमा जी बिना किसी को जाने कैसे श्री प्रभु रामलाल जी महाराज की अपार करुणा कृपा से प्राप्त तुरियास्थिति द्वारा, उन के बुलाने पर उस व्यक्ति के पास जाकर, फिर उसे उठने का संकेत देकर, उन के पास ले आती है। सत्संग के बाद जब मनोरमा जी का ध्यान खुला तब महाराज जी अपने कक्ष में चले गए। हम भी सोए हुए बच्चों के साथ घर आ गए और सो गए।

रात में मनोरमा जी की स्वप्न समाधि :- रात में मनोरमा जी को स्वप्न समाधि हुई उस में श्री प्रभु रामलाल जी महाराज ने कहा कि ''बेटी! सैक्टर-14 चण्डीगढ़ के भक्त जो रविवार को वहाँ ध्यानस्थ हुए थे उन सब को ध्यान में मुलखराज के दर्शन हुए तो वह समझते हैं कि उस समय मनोरमा के अन्दर किसी मृतक आत्मा का वास था। वहाँ कोई भी नही जान सका कि हम स्वयम् आए हुए थे। चन्द्रमोहन को चाहिए था कि वह हमें पहचान कर और उठ कर हमें प्रणाम करता।''

इस के बाद श्री प्रभु जी ने मनोरमा को दिखाया कि कैसे एक 40/50 वर्ष के लगभग आयु वाला आदमी धोती कुर्ता पहने हुए श्री प्रभु रामलाल जी महाराज के चरणों को पकड़ कर रो रहा था। इस पर श्री प्रभु जी ने मनोरमा से कहा ''अच्छा बेटी! अब कल चन्द्रमोहन के पास जा कर एक प्रश्न पूछना कि महाराज जी! श्री प्रभु जी ने कल ध्यान में एक आदमी को उन के चरण पकड़ कर रोते दिखाया था-वह कौन है और कहाँ का है और क्यूँ रो रहा था?''

सुबह मनोरमा जब सो कर उठी तो उस ने मुझे कहा कि आज आप कालेज से छुट्टी ले लो। हम दोनों बच्चों के घर आने से पहले श्री चन्द्रमोहन जी महाराज के पास जाएंगे और श्री प्रभु जी ने जो कल रात उन से प्रश्न पूछने के लिए कहा है वह काम करेंगे। 'रघुनन्दन' ने कालेज से छुट्टी ले ली और जल्दी से तैयार हो कर हम दोनों ने सैक्टर-14 शर्मा जी के घर जा कर महाराज जी को प्रणाम किया तो उन्होंने पूछा कहो 'शक्ति' कैसे आए हो? मनोरमा ने जवाब दिया महाराज जी! कल ध्यान में श्री प्रभु जी ने एक आदमी को उन के चरण पकड़ कर रोते दिखाया था। वह कौन है? कहाँ का है? और वह क्यूँ रो रहा था। इस पर श्री चन्द्रमोहन महाराज जी ने पूछा कि शक्ति! उस की आयु क्या होगी और ध्यान में कैसा दिखता था? मनोरमा ने कहा महाराज जी! वह पतले शरीर वाला सफेद कुर्ता धोती पहने 40/50 वर्ष आयु के लगभग वाला दिखाई देता था। यह सुनते ही महाराज जी लेट गए और उन्होंने काफी देर तक कोई जवाब नही दिया तो हम दोनों वहाँ से घर आ गए। अगले रोज़ महाराज जी सवाँई चले गए।

रात को मनोरमा की फिर स्वप्न समाधि हुई। तो श्री प्रभु जी ने पूछा ''बेटी! क्या जवाब मिला।'' मनोरमा ने कहा कि ''प्रभु जी! उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया''। तो श्री प्रभु जी ने बताया कि ''उस का नाम वेद प्रकाश है और वह लुधियाने का रहने वाला है''। फिर श्री प्रभु जी ने कहा कि ''हम ने जो सामान सैक्टर-14 में भिजवाया था वह इस लिए था कि अगर एक भाई के बच्चे दूसरे भाई के घर जाते हैं और वह वहाँ अपने भाई के बच्चों को खाने के लिए न पूछे तो बदनामी पिता की होती है। इसलिए हम ने वह सामान भिजवा दिया था कि अगर आप अपना खाना नहीं खिला सकते तो हमारे भेजे हुए सामान का कुछ बनाकर उन को खिला देना ताकि हमारी बदनामी न हो। अब जब वह चले गए हैं तो हमारा सामान घर वापिस ले आओ।''

श्री प्रभु जी की आज्ञानुसार जब 'रघुनन्दन' शर्मा जी के घर सैक्टर-14 में गया तो बहन बिमला जी ने कहा कि ''सूद साहिब! महाराज जी तो चले गए अब उस सामान का क्या करना है। उन्हें 'रघुनन्दन' ने जवाब दिया बहन जी यह सामान वापिस घर ले जाता हूँ। वह सामान घर आ गया और घर में ही इस्तेमाल हो गया।

स्वामी श्री नरसिंह मूर्ति जी महाराज का आगमनः-

कुछ दिनों बाद श्री प्रभु रामलाल जी महाराज द्वारा दीक्षित श्री नरसिंह मूर्ति जी महाराज आंधरा प्रदेश से हमारे घर आए। तो उन को जब श्री वेद प्रकाश लुधियाने वालों के बारे में बताया तो उन्होंने कहा कि वह लुधियाने ही जा रहे हैं और उन के लुधियाने में कई शिष्य हैं इस लिए वह वेद प्रकाश का पूरा पता वापसी पर बता देंगे। कुछ दिनों के बाद जब श्री नर सिंह मूर्ति जी लुधियाने से लौटे तो उन्होंने घर आकर बताया कि वेद प्रकाश जी की दुकान चौड़े बाजार में ऊषा सिलाई मशीन के नाम से है और वह उस दुकान के ऊपर रहते हैं। यह दुकान पंजाब नैशनल बैंक चौड़ा बाज़ार लुधियाने के सामने है।

रघुनन्दन का उसी साल पंजाब यूनिवर्सिटी के प्रैक्टिकल की परीक्षा लेने आर्य कालेज लुधियाने जाना हुआ। वहाँ कालेज के प्रो० तनेजा जी के साथ 'रघुनन्दन' श्री वेद प्रकाश जी को मिलने के लिए उन की दुकान पर गए। जब उन को श्री प्रभु जी की घटना सुनाई तो उन की आंखों से प्रेम भरे आंसू बह निकले और वह कह रहे थे कि उन का नाम श्री कृपालु प्रभु जी ने अपनी कृपा से अपनी लिस्ट में लिख रखा है इस से बड़ा उन का और क्या सौभाग्य होगा। फिर उन्होंने अपना मन्दिर दिखाया जहां प्रभु श्री राम लाल जी महाराज विराजमान थे। उन का सारा कमरा भगवान के अवतारों की लीलाओं की तस्वीरों से भरा हुआ था। उन्होंने मुझे कहा कि अगर आप उन के कमरे में रात को रुक जाएँ तो वह सिद्धों का दर्शन, आशीर्वाद और प्रसाद दिलवा देंगे। 'रघुनन्दन' ने प्रार्थना की कि पी. यू. की डयूटी पर यहां आया हूँ इस लिये यहां रात न रहने की क्षमा चाहता हूँ आप हमें श्री प्रभु चरणों का प्रसाद देने की कृपा करें। हम प्रसाद लेकर कालेज वापिस आ गए। चण्डीगढ़ आकर वहाँ का सारा वृतांत मनोरमा

को बता दिया।

तीसरे बालक के संस्कार पर प्रभु कृपा :– ई सन् 1970 की दिसम्बर की छुट्टियों में मित्र श्री कश्मीरी लाल जैन के बुलावे पर उन के घर होशियारपुर भूमि के कमिशन की नियुक्ति के लिए हम सब गए। अगले दिन जब श्री रघुवीर जी को उन के घर पर हम लोग मिलने गए तो उन्होंने कहा कि ''सूद साहब ! श्री प्रभु जी कहते हैं कि आप का अभी एक बालक का संस्कार शेष है वह चाहे अब भुक्त लो या दस वर्ष के बाद।'' 'रघुनन्दन' ने जवाब दिया कि इस सस्कार को अभी भुक्त लेना ठीक है, दस वर्ष बाद तो यह समस्या गम्भीर हो जाएगी। उन्होंने कहा तो ठीक है। भूमि कमिशन बना कर हम चण्डीगढ़ आ गए। अप्रैल 1971 में रघुनन्दन की बदली गवर्नमैंट कालेज फोर गर्लज़ सैक्टर–11 चण्डीगढ़ में हो गई।

मनोरमा के स्त्री रोग समस्या का ईलाज काफी देर से डा० मिसिज कटारिया द्वारा चल रहा था। जब ई सन् 1971 अप्रैल में वह गवर्नमैंट होसपिटल सैक्टर–16 की सी एम ओ बन गईं तो फिर मनोरमा का ईलाज डा० मिसिज भारगव करने लगीं।

हिमालय के एक बड़े तेजस्वी महात्मा का संस्कार :–

अब मनोरमा को ध्यान अवस्था में कभी कभी एक बड़े तेजस्वी महात्मा के हिमालय की कन्द्रा में दर्शन होते और कभी उस समाधिस्थ महात्मा की लंबी लंबी जटाओं पर ऊँचे ऊँचे बरफीले पहाड़ों के झरनों से पानी गिरता दिखाई देता। कभी ध्यान में ऐसा लगता कि वह तेजस्वी महात्मा अपना शरीर अपनी समाधि में छोड़ कर एक बालक का रूप धारण कर लेता है। कभी कभी वह महात्मा बालक रूप में मनोरमा की उंगली पकड़ कर मम्मी–मम्मी कहता तो मनोरमा उस से अपनी उंगली जबरदस्ती छुड़वा लेती। कभी कभी वही तेजस्वी महात्मा बाल रूप में अपनी मम्मी की गोदी में आने के लिए रोता तो मनोरमा उसे कहती कि वह उस की मम्मी नहीं है तो ध्यान में ही वहाँ लोगों की भीड़ लग जाती और वह कहते कि ये कैसी माँ है जो अपने बच्चे को ही नही पहचानती। कभी क्या ऐसा भी होता है कि एक छोटा सा बच्चा अपनी ही मम्मी की गोद में आने को मम्मी–मम्मी कहता हुआ ऐसे रोता है। ऐसा मनोरमा को कई बार अपनी ध्यान अवस्था में प्रभु कृपा से अनुभव होता रहा और वह मुझे बताती रही और कहती रही कि यह कैसा महात्मा है जो हाथ धोकर उस के पीछे पड़ा है और ध्यान में उसे छोड़ता ही नहीं। 'रघुनन्दन' ने जवाब दिया कि मनोरमा तुम्हारा उस तेजस्वी महात्मा जी के साथ कोई पुराना संस्कार होगा जो श्री प्रभु जी अपनी करुणा कृपा से तुम्हारे ध्यान में भुगता रहे हैं। आप चिन्ता मत करो जैसी इच्छा मेरे प्रभु जी की होगी वैसा ही होगा। इस पर मनोरमा ने कहा कि हम सब मई जून की छुट्टियों में इस बार श्री प्रभु जी के ऋृषिकेश 'योग साधन आश्रम' में जाएंगे और श्री चन्द्रमोहन जी महाराज का आशीर्वाद प्राप्त करेंगे।

दिव्य समाधि का रहस्य :-

गर्मी की छुट्टियां होने पर मुझे एक दो दिन के लिए किसी रिटायरड गुरदावर को भूमि कमिशन की सहायता के लिए नियुक्ति करने होशियारपुर जाना पड़ा। वहां काम करने के बाद श्री रघुवीर जी से मिला तो उन्होंने छुट्टियों का प्रोग्राम पूछा। तो मनोरमा के ऋृषिकेश आश्रम में सब के साथ वहां पर जाने का बता दिया। फिर 'रघुनन्दन' ने श्री रघुवीर जी से एक प्रश्न पूछा कि ''सैक्टर-14 के सत्संग में समाधिस्थ मनोरमा के ध्यान को खुलवाने के लिए श्री चन्द्रमोहन जी महाराज उस के सिर पर अपना हाथ रख कर कहते हैं कि 'शक्ति' अपने गुरुदेव की आज्ञा से अपनी आंखें खोल दो तो मनोरमा की आंखें खुल जाती हैं। इस में क्या रहस्य है?'' श्री रघुवीर जी बहुत हंसे और कहने लगे कि ''क्या मनोरमा के समाधिस्थ अवस्था में जाने के लिए उस की आखों का बन्द होना भी उन के ही हाथों के आशीर्वाद द्वारा होता है?'' मेरे इन्कार करने पर उन्होंने कहा कि अब मनोरमा का ध्यान जिनकी कृपा से लगता है उन की ही इच्छा से खुलेगा। इस के बाद श्री रघुवीर जी ने समाधि के रहस्य को समझाया। उन्होंने कहा कि ''श्री प्रभु जी के बच्चे केवल श्री प्रभु कृपा से ही ध्यानस्थ होते हैं लेकिन श्री प्रभु जी के प्रचार कार्य में ,आचार्यों की सुविधा के लिए उन की इच्छा अनुसार श्री प्रभु जी ध्यान को खोल देते हैं ताकि आश्रमों के आचार्यों को प्रचार कार्य में बाधा न पड़े''। अगले दिन 'रघुनन्दन' चण्डीगढ़ वापिस आ गया।

पंजाब यूनिवर्सिटी ला विभाग के रीडर डा० छाबड़ा हमारे साथ सैक्टर-15 वाले मकान के नीचे वाले हिस्से में रहते थे। जब उन्होंने ऋृषिकेश जाने का सुना तो वह भी ऋृषिकेश आश्रम में हमारे साथ जाने को तैयार हो गए। हम सारे सुबह आरती के समय ऋृषिकेश आश्रम पहुँचे। आरती में मनोरमा जी श्री प्रभु चरणों में समाधिस्थ हो गईं। वहाँ पर मन्दिर में 'उमा' जी भी थीं उन के साथ मन्दिर में मर्यादारहित हुई घटना पर श्री प्रभु रामलाल जी महाराज ने हमें वहाँ न रुकने का आदेश देकर मनोरमा जी का ध्यान खोल दिया। ध्यान खुलने पर मनोरमा ने मुझे सारी बात बताई कि श्री प्रभु जी ने उन को वहाँ आश्रम में न रुकने के लिए क्यों कहा। डा० साहिब ने बहुत कहा कि अब आप लोग ऋृषिकेश आए हैं तो चलो हम सब गुरुद्वारे में जा कर ठहर जाते हैं। हमने उन्हें जवाब दिया कि अब हम लोग वापिस सीधे चण्डीगढ़ ही जायेंगे यहां नही रुकेंगे।

इस के बाद श्री चन्द्रमोहन जी महाराज से आज्ञा लेने जब गए तो उन्होंने बहुत कहा कि 'शक्ति' अभी अभी तो तुम आई हो, कुछ दिन यहां रहो फिर चले जाना। मगर मनोरमा ने कहा कि महाराज जी उन्हें यहां से अभी वापिस जाने की आज्ञा श्री प्रभु जी महाराज ने प्रदान की है। इस लिए हम यहां न रुकने के लिए आप से क्षमा चाहते हैं। श्री महाराज जी ने प्रसाद दिया और हम मन्दिर में श्री प्रभु जी को प्रणाम कर वापिस चण्डीगढ़ आ गए।

डा० मिसिज भारगव द्वारा मनोरमा का इलाज :-

वापिस आने पर मनोरमा की हालत काफी खराब चलने लगी और वह डलिवरी के बाद तक बिस्तर पर ही रही। डा० मिसिज भारगव ने मनोरमा के कुछ टेस्ट करवा कर बताया कि मनोरमा गर्भवती है और इसे पूरा समय आराम से बिस्तर पर ही रहना होगा। जब छोटी भाभी जी को पता चला तो उन्होंने हमारे पास तीन माह डलिवरी से पहले और दो माह बाद तक चण्डीगढ़ रहना स्वीकार कर लिया। मगर अचानक ई सन् 1971 में जब भारत और पाकिस्तान की लड़ाई आरम्भ हो गई तो छोटी भाभी जी ने हमारे पास चण्डीगढ़ आने से मना कर दिया। उस मुश्किल भरे समय को प्रभु प्रसाद जान पर गुजारा किया तो घर में काम करने वाली माईयां मिल गईं– एक रसोई का, दूसरी बरतनों का और तीसरी सफाई व कपड़े धोने का काम करने लगीं। वह अपने समय अनुसार अपना अपना काम करके चली जातीं। श्री प्रभु जी के दोनों बच्चे अपने आप तैयार होकर, कुछ खाकर और अपने टिफन लेकर, अपने समय पर, अपने आप स्कूल चले जाते। मुझे अपने समय पर कुछ खा कर और मनोरमा को खिला कर कालेज जाना होता था। फिर कालेज से आकर मनोरमा और बच्चों का ध्यान भी रखना होता था। यह सब अपने आप श्री प्रभु जी की अपार कृपा से उन के सहारे चलता रहा, समय गुज़रता गया।

गवर्नमैंट होसपिटल सैक्टर-16 की अद्भुत प्रभु लीला :- ई सन् 1972 के जनवरी माह में गवर्नमैंट होसपिटल के प्राईवेट वार्ड के एक कमरे में मनोरमा को डा० भारगव ने दाखिल कर लिया। अब होसपिटल के कमरे में मनोरमा के पास सारा दिन कौन रहेगा? इस की चिंता जब आप श्री प्रभु जी पर छोड़ कर अपनी डयूटी को पूरी अपनी जान लड़ा कर करते हैं तो श्री प्रभु जी भी अपने बच्चों की मुश्किल को दूर करने में देरी नहीं करते। ऐसे हैं यह करुणासागर प्रभु। होसपिटल के इस कमरे में श्री प्रभु जी महाराज को विराजमान किया हुआ था। श्री प्रभु जी अपने बच्चों के अंग-संग रहते हैं और उन के सब कर्मों के द्रष्टा होते हैं। होसपिटल में दाखिल होने के दूसरे दिन नर्स-''राज'' को अपनी एक सहेली नर्स द्वारा पता चला कि वह जिन को गुरु मानती है उनके ही जटाधारी स्वरूप को होसपिटल के कमरे में एक मरीज़ ने सजा रखा है। उस मरीज की सारे दिन में देख भाल करने वाला वहां कोई नहीं। यह सुन कर 'राज़' उसी समय उस कमरे में आई और मनोरमा से उस ने बड़े प्यार से कहा कि उस की बहन ने श्री चन्द्रमोहन जी महाराज से दीक्षा ली हुई है और हम सैक्टर-19 में रहते हैं। उस ने नरसिंग फाईनल के पेपर दिए हुए हैं और उस के परिणाम का इंतजार कर रही है। अभी अभी उसे अपनी सहेली से पता लगा कि आप के पास सारा दिन होसपिटल के कमरे में रहने वाला कोई नही है। आजकल वह खाली है अगर आप कहें तो वह अपनी बहन जी से पूछ कर आप के पास यहां होसपिटल में सारा दिन रह सकती है। मनोरमा ने जवाब दिया कि वह अपनी बहन जी को यह अवश्य बता दें कि मनोरमा होसपिटल में दाखिल है और अगर वह इजाज़त दें तो यहां आकर उन के साथ कमरे में रुक जाना। 'राज़' उसी समय अपनी बहन जी से

पूछने चली गई ।'राज' की बात सुन कर उस की बहन ने कहा कि अगर मनोरमा जी होसपिटल में दाखिल हैं और तुम्हें उन के साथ वहाँ रह कर उन की सेवा का अवसर मिलता है तो अभी अपने कपड़े आदि लेकर जल्दी से वहाँ चले जाओ। राज वहाँ आकर मनोरमा के पास रहने लगी। 'रघुनन्दन' के कालेज से आने पर वह सैक्टर-15 वाले घर में जाकर वहाँ नहा धो कर अपना खाना खाकर और मनोरमा का खाना साथ लेकर होसपिटल आ जातीं। वह मनोरमा के पास सारा दिन होसपिटल में एक मास से अधिक रहीं। यह सब कार्य श्री प्रभु जी की करुणा कृपा से ही सम्भव हो पाया।

मनोरमा के ओपरेशन पर अनोखी प्रभु लीला ई सन् 1972 :- राज नर्स के होसिपिटल में आने के बाद डा० भार्गव इन्चार्ज गाइनी विभाग सैक्टर-16 अस्पताल ने मनोरमा का ओपरेशन 14 जनवरी, 1972 को और इस की तैयारी एक दिन पहले से करने की सूचना दी। 'रघुनन्दन' ने उसी समय सुशील को श्री रघुवीर जी के पास होशियारपुर उन को मनोरमा का हाल बताने और डा० की 14/1/72 पर दी गई तारीख पर ओपरेशन करवाने की आज्ञा लेने के लिए भेजा। श्री रघुवीर जी ने सुशील द्वारा पैगाम भेजा कि "अगर मनोरमा का ओपरेशन 14 जनवरी 1972 को होता है तो वह ठीक नहीं रहेगा। यह ओपरेशन आगे कब होगा हम स्वयम् वहाँ आकर बताएंगे"। श्री रघुवीर जी का पैगाम मिलने के बाद डा० भार्गव अपने अन्य डाक्टरों के साथ कमरे में आकर मनोरमा से पूछने लगी कि क्या आप 14 जनवरी को ओपरेशन करवाने को तैयार हैं? मनोरमा ने कहा कि प्रो० सूद के मां-बाप 14 जनवरी को ओपरेशन के लिए मना करते हैं। तो डा० भार्गव ने मुझ से पूछा कि क्या आप के मां-बाप डाक्टर हैं? 'रघुनन्दन' ने जवाब दिया कि वह डाक्टर तो नहीं हैं पर वह जो कह देते हैं वह सदा सच्च निकलता है। इस पर डा० भार्गव ने बड़े गुस्से में आकर कहा कि अगर आप को 17 जनरवी, 1972 को जो उन का अगला ओपरेशन का दिन है उस दिन ओपरेशन करवाना हो तो 16 जनवरी शाम तक बता देना। अगर उस दिन भी न करवाना हो तो आप कमरा खाली करके अपने घर या किसी दूसरे अस्पताल में चले जाना। आज के बाद आप को अगर कोई भी कोम्पलीकेशन होती है तो इस होसपिटल का कोई डाक्टर आप को अटैंड नहीं करेगा। यह कह कर सारे डाक्टर कमरे से चले गये। 'रघुनन्दन' उसी समय यह सारी बात श्री रघुवीर जी को टैलीफोन द्वारा बताने के लिये टैलीफोन बूथ पर गया। उधर श्री रघुवीर जी वहाँ बैठे मेरे टैलीफोन का इन्तजार कर रहे थे। जब श्री रघुवीर जी को यहां होसपिटल के डाक्टरों ने जैसा कहा वह सारे का सारा वैसे ही अश्रुपूरित आंखों से बता दिया तो उन्होंने कहा कि आप कोई चिन्ता न करना भाभी जी को कुछ नहीं होगा। इस की सारी जिम्मेदारी वह लेते हैं। वह स्वयम् चण्डीगढ़ आकर ओपरेशन की तारीख का फैसला करेंगे। मेरा मन तो वहीं शान्त हो गया और जब मनोरमा को आकर बताया तो वह भी शान्त हो गई और अगले दिन से श्री रघुवीर जी के यहां आने का इन्तजार

करने लगी। 15 जनरवी तक के दिन इन्तजार में गुजर गए। मनोरमा 16 जनरवी की सुबह से हमारे परिवार के सर्वेसर्वा श्री रघुवीर जी के ही इन्तजार में आंखों से आँसू बहा रही थी। न वह कुछ खा रही थी और न ही कुछ पी रही थी। उधर 'रघुनन्दन' सैक्टर-15 के घर में श्री रघुवीर जी का इन्तजार कर रहा था। श्री रघुवीर जी शाम के चार बजे बस अड्डे से रिक्शा में घर आए। नीचे से ही मुझे बता कर डा० छाबड़ा जी के साथ उन के स्कूटर द्वारा फौरन मनोरमा के पास होसपिटल पहुँच गए। वहाँ जा कर श्री रघुवीर जी ने डाक्टरों को मनोरमा का 17 जनवरी, 1972 को ओपरेशन करने और उस की तैयारी के लिए कह दिया। तब मनोरमा की जान में जान आई तो उसने श्री रघुवीर जी के साथ वहाँ खाना खाया। इतने में 'रघुनन्दन' भी होसपिटल पहुँच गया। डा० भारगव ने शाम के दौरे पर बताया कि कल सुबह मनोरमा का ओपरेशन दस बजे होगा और इन को कमरे से सुबह 9-30 बजे लेकर जाएंगे।

रात को मनोरमा ने श्री रघुवीर जी से पूछा कि यहाँ होसपिटल में डाक्टर जब ठीक समझें तो ओपरेशन से बच्चों का जन्म करा देते हैं। लोग कहते हैं कि बच्चे के जन्म का समय पहले से ही निर्धारित रहता है, तो ठीक क्या है? इस पर श्री रघुवीर जी ने कहा कि हमारे बच्चे के जन्म के समय को श्री प्रभु जी ने पहले ही निर्धारित किया हुआ है आप चिंता न करें। फिर मनोरमा ने पूछा कि क्या उस का ओपरेशन डा० मिसिज कटारीया नही कर सकती? इस पर श्री रघुवीर जी ने कहा कि आप क्या चाहते हो? मनोरमा ने जवाब दिया कि उस की रसौली का ईलाज डा० कटारीया द्वारा चल रहा था मगर जब से वह सी.एम.ओ. बनी हैं तब से उस का ईलाज और दवाई डा० भारगव द्वारा चली। इस ओपरेशन के लिए डा० कटारीया से बेनती की थी क्योंकि वह प्रो० सूद जी की मासी जी की लड़की की सहेली हैं तो उन्होंने कहा था कि अगर यह ओपरेशन वह करती हैं तो डा० भारगव इस को अच्छा नहीं लेंगी। इस लिए वह इस ओपरेशन में डा० भारगव के साथ ओपरेशन रूम में रहेंगी और अगर डा० भारगव को कोई मुश्किल आई तो वह उस की मदद कर देंगी। इस पर श्री रघुवीर जी ने कहा कि आप का ओपरेशन डा० कटारीया ही करेंगी। चिन्ता न करें। नर्सों ने तैयारी पूरी कर ली। अस्पताल के नोटिस बोर्ड पर 17 जनवरी की ओपरेशन लिस्ट में मनोरमा का पहला नम्बर था। रात को बातचीत के बाद सब सो गए।

अगले दिन सुबह जल्दी से तैयार होकर हम सब श्री प्रभु रामलाल जी महाराज की आरती उतार रहे थे तो नौ बजे से पहले डा० भारगव ने आकर पूछा कि मरीज़ तैयार है? तो 'रघुनन्दन' ने जवाब दिया कि डा० साहिब वह श्री प्रभु जी की आरती उतार रही है। कल आप ने उन को कमरे से 9-30 A.M. पर लेकर जाने को कहा था क्योंकि उन का ओपरेशन 10 A.M. पर रखा गया था। डा० भारगव ने कहा कि आज उन की मीटिंग हो गई इस लिए उन्होंने काम पहले आरम्भ कर दिया। कोई बात नहीं आप उन को आरती करने दें वह लिस्ट के नम्बर-2 को

पहले ले जाते हैं और इन का ओपरेशन उन के बाद कर देंगे। प्रभु आरती के बाद मनोरमा समाधिस्थ हो गईं। जब उन को ओपरेशन के लिए कमरे से लेकर गए तब भी वह ध्यानस्थ ही थीं। मनोरमा को ओपरेशन रूम में छोड़कर 'रघुनन्दन' कमरे में वापिस श्री रघुवीर जी के पास आ गया परन्तु मनोरमा के मम्मी जी जो कुछ दिन पहले देहली से हमारे पास आए हुए थे वह ओपरेशन रूम के बाहर ही बैठे रहे।

श्री प्रभुजी की बेटी का शुभ जन्म :- श्री रघुवीर जी ने अपनी घड़ी में 11 बज कर 52 मिन्ट पर समय देख कर मुझे कहा सूद साहब !''बधाई हो-श्री प्रभु जी की बेटी का जन्म 11-52 A.M. पर हो गया है। अब आप वहाँ जा कर पता कर लें।'' जैसे ही 'रघुनन्दन' ओपरेशन रूम के पास पहुंचा तो डा० भारगव ओपरेशन रूम से हमारे पास आईं और उन्होंने कहा प्रो० सूद बधाई हो। बेटी 11-55 AM पर हुई है। इस पर रघुनन्दन ने डा० भारगव और मम्मी जी को भी बधाई दी। फिर मम्मी जी को अपने साथ लेकर कमरे में चला आया ताकि वह अपना नाशता ले सकें।

ओपरेशन के बाद मनोरमा तथा बेटी को रिकवरी रूम में न ले जाकर होसपिटल के लोग उसे सीधे कमरे में ही लेकर आए क्योंकि मनोरमा जी ध्यान अवस्था में बोल रही थी कि ''प्रभु जी मुझे आप के साथ ही जाना है। कृप्या मुझे भी अपने साथ ही ले चलो।'' क्या लीला है प्रभु जी की कि इस बेटी के जन्म और गर्भाधान के समय मनोरमा जी समाधिस्थ अवस्था में ही रहीं। समाधि की उत्थान अवस्था होने पर मनोरमा ने बताया कि उसे जैसे ही ओपरेशन थियेटर के टेबल पर लिटाया गया उसी समय डा० भारगव के पति का उन को फोन आया तो डा० भारगव ने डा० कटारीया जो उन के पास ही खड़ी थीं उन्हें बेनती की कि आप मनोरमा का ओपरेशन कर दें क्योंकि उन के पति ने फोन करके उन्हें अभी वहां बुलाया है। डा० कटारीया ने जब मनोरमा के युटरस का ओपरेशन किया तो उस में से एक 3½ Kgm. की बेटी और दूसरे 3½ kgm. का टीयूमर निकला। डा० ने टीयूमर को टेस्ट करवाने के लिए लैबोरटरी में भेज दिया। जब मनोरमा का ओपरेशन हो रहा था तब करुणा सागर प्रभु श्री रामलाल जी महाराज मनोरमा जी की ध्यान अवस्था में ओपरेशन रूम में उस के पास ही रहे और ओपरेशन के बाद जब वह कृपालु प्रभु वहां से जाने लगे तो मनोरमा उन के श्री चरणों में उसे भी अपने साथ ले जाने की प्रार्थना करती रही। जैसे ही ओपरेशन का काम समाप्त हुआ डा० भारगव वहां वापिस आ गईं और उन्होंने ही बेटी के जन्म की सूचना हमे दी थी। तब श्री रघुवीर जी ने मुझे बताया था कि ''बच्चे के जन्म का समय तब लेना चाहिए जब बच्चे का पहला अंग बाहर निकले, पर डाक्टर जब बच्चा सारा बाहर आ जाता है तब समय अपनी घड़ी में देख कर अपने रिकार्ड में लिखते हैं। इस लिए हमारी बेटी का जन्म 11-55 पर नहीं हुआ यह 11-52 पर ही हुआ है।'' टयूमर के कारण बेटी पूरे 9 महीने टेढ़ी (side ways) ही यूटरस में लेटी रही इस लिए

मनोरमा को 8/9 मास चारपाई पर ही पूरा आराम करना पड़ा। मनोरमा का टयूमर Non-malignant था। श्री रघुवीर जी ने होसपिटल में 17 जनरवी 1972 की रात को वहां रहने के लिए होशियारपुर आश्रम के प्रो० चमन लाल कपूर जी की बेटी इन्दु को वहां से बुलाया हुआ था। शाम को बेटी इन्दु चन्डीगढ़ होसपिटल के कमरे में सारी रात रही और श्री रघुवीर जी अगले दिन होशियारपुर चले गये और मुझे पत्र द्वारा मनोरमा का तथा उन की अपनी प्यारी बेटी का पता देते रहने की आज्ञा प्रदान कर गए। आज्ञानुसार 'रघुनन्दन' लगातार होशियारपुर श्री रघुवीर जी को उन की प्यारी बेटी और मनोरमा के बारे में पत्र द्वारा सूचना देता रहा।

अगले दिन आरती के बाद जब मनोरमा ध्यानस्थ हुई तो श्री प्रभु जी ने उस को कहा कि ''बेटी! तुम जिस दिन अपने बैड से अपने आप उठ कर और चल कर उन के पास आओगी उस दिन होसपिटल से तुम्हारी छुट्टी होगी।'' चार दिनों के बाद डाक्टरों ने बड़ी कोशिश की कि मनोरमा कुछ चल सके। उन्होंने जब जबरदस्ती चलाने की कोशिश की तो मनोरमा गिर गई। तब डाक्टरों ने सोचा कि जब वह चल सकेगी तभी यहाँ से छुट्टी देंगे।

कुछ दिनों के बाद एक अनोखी घटना होसपिटल में हुई वह यह थी कि मनोरमा जी की भ्रसरिका बड़े जोर से उस कमरे में चलने लगी और फिर वह समाधिस्थ हो गईं। नर्स 'राज' ने पहले कभी किसी को समाधिस्थ होते देखा नही था। वह समझी कि इन के प्राण पखेरू हो रहे हैं। वह उसी समय होसपिटल की नर्सों को बुला लाई। नर्सों ने फौरन ऐमरजैंसी कडीशन कह कर सब डाक्टरों को वहाँ बुला लिया। डाक्टर कटारीया, डाक्टर भारगव वहाँ जब भागे आए तो उन को साँस चढ़ा हुआ था और मनोरमा की चलती भ्रसरिका देख बड़ी परेशान और हैरान हो गईं। उस समय श्री प्रभु जी ने मनोरमा से कहा ''बेटी! इन डाक्टरों से कह दो कि तुम बिल्कुल ठीक हो, नही तो यह कोई गलत इन्जेकशन लगा देंगे।'' तब ध्यान में ही जब मनोरमा जी ने डाक्टरों से कहा कि वह बिल्कुल ठीक हैं तब डाक्टरों की जान में जान आई। समाधि खुलने के बाद जब मनोरमा ने सारी बातें सुनाई तब डा० भारगव ने उन पर श्री प्रभु जी की अपार करुणा कृपा जान और समाधि अवस्था में किसी को पहली बार देख कर वह बड़ी प्रसन्न हुई। उस के बाद जब जब भी डा० भारगव को मनोरमा मिली तो वह बड़े प्रेम से उन से बातें करती उन के प्रभु चरणों में हुए अनुभवों को पूछती और श्री प्रभु जी की छोटी बेटी 'योगिनी' के बारे में पूछना कभी नही भूली।

मनोरमा इस होसपिटल में एक महीने से अधिक रही। क्या लीला है प्रभु की कि जिस दिन मनोरमा को होसपिटल से छुट्टी हुई उसी दिन नर्स 'राज' को गोरमिंट की नौकरी मिल गई। नर्स 'राज' बड़ी प्रसन्न हुई उस ने श्री प्रभु जी का बार बार धन्यवाद किया। जिन की कृपा से उसे मनोरमा की होसपिटल में सेवा करने का अवसर प्राप्त हुआ और साथ ही उन की छुट्टी के साथ उसे गोरमिंट सर्विस भी दिलवा दी। हम सब ने भी 'राज' का

आभार प्रकट किया और बहुत-बहुत धन्यवाद किया। 'राज' फिर भी कई बार घर में आकर छोटी बेटी को देखती और मनोरमा को मिल कर जाती।

पूर्व जन्मों के संस्कारों की प्रबलता :- ई सन् 1972 में श्री प्रभु रामलाल जी महाराज के जन्म उत्सव रामनवमी पर हम सारे होशियारपुर गए। वहाँ जब श्री रघुवीर जी को मिलने उन के घर सुराजाँ चौंक में गए उस समय छोटी बेटी अभी तीन मास की ही हुई थी। वह श्री रघुवीर जी को देख कर अपने हाथ उठा उठा कर उन के पास जाना चाहती थी। वह उठा नहीं रहे थे। यह प्रभु लीला भी कमाल की थी कि इतनी छोटी बेटी उन के पास जाने के लिए कैसे उछल रही थी और अपने दोनों हाथों को उठा कर उन की ओर निहारती हुई उन की गोद में जाने के लिए लालायित थी। जब ऐसा नज़ारा काफी देर चलता रहा और श्री रघुवीर जी खड़े उस की ओर देखते रहे मगर उन्होंने अपने हाथों से उसे नहीं उठाया तो 'रघुनन्दन' से न रहा गया तो उस ने बेटी को मनोरमा की गोदी से उठा कर श्री रघुवीर जी की गोद में देना चाहा। ऐसा करते ही श्री रघुवीर जी के जलते हुए सिगरेट का अगला हिस्सा बेटी की बाजू को जरा छू गया। इस पर श्री रघुवीर जी ने कहा कि "सूद साहब आप अब चण्डीगढ़ वापिस चले जाओ। हमारी बेटी के अब माता निकल आयेगी।" हम अगले दिन चण्डीगढ़ वापिस आ गए। आते ही छोटी बेटी को बुखार हो गया और माता निकल आई फिर कुछ दिनों बाद वह ठीक हो गई।

श्री प्रभु जी का अपनी प्यारी बेटी को बीमार होने से बचाना :- ई सन् 1974 में मुझे श्री वासुदेव अरोडा जी के साथ किसी कार्य के लिए होशियारपुर जाना पड़ा। दो वर्ष की छोटी बेटी भी अपने पापा के साथ होशियारपुर जाने को तैयार हो गई तो हम ने उसे भी अपने साथ गोदी में उठा लिया। श्री वासुदेव जी ने इटैची को उठाया और हम बस से होशियारपुर श्री कश्मीरी लाल जी को मिलने उन के घर गए। श्री कश्मीरी लाल जी ने कहा कि रात को वह भी हमारे साथ बस में चण्डीगढ़ चलेंगे। खाना खा कर हम श्री रघुवीर जी को मिलने उन की दुकान पर गए। छोटी बेटी उन की गोद में जा बैठी। उन्होंने उसे अपना भरपूर प्यार दिया और मुझे कहा कि "सूद साहब आप इस बेटी को लेकर जल्दी से चण्डीगढ़ चले जाओ।" फिर वासुदेव जी के साथ जब हम माता जी को मिलने उन के घर गीता नगर में जा रहे थे तो बाजार में हमें फिर श्री रघुवीर जी मिले। उन्होंने मुझे से पूछा कि "सूद साहब! आप मेरी बेटी के साथ अभी तक यहाँ पर ही हो गए नही? वासुदेव जी ने कहा कि श्री कशमिरी लाल जी रात की बस से हमारे साथ जाना चाहते थे इस लिए हमें उनके साथ ही जाना होगा। इस पर श्री रघुवीर जी ने मुझे कहा कि "आप मेरी बेटी को लेकर यहाँ से सीधे रिक्शा में चण्डीगढ़ की बस पकड़ लो और वासुदेव श्री कश्मीरी लाल के साथ रात की बस लेकर आप के घर आ जाएँगे।" उन की आज्ञानुसार 'रघुनन्दन' ने वहीं से रिक्शा कर ली और वासुदेव जी को कहा कि आप ने मेरे यहां से ही बेटी के साथ अकेले चण्डीगढ़ चले जाने के

लिए जैन साहिब से कहना कि वह मुझे क्षमा करें और हमारा इटैची उनके घर से आप ने लेते आना। हमारी रिक्शा जैसे ही बस अड्डे पर पहुंची तो चण्डीगढ़ को जाने वाली सीधी बस वहाँ शायद हमारा ही इन्तजार कर रही थीं जैसे ही हम बस में बैठे बस चल पड़ी। होशियारपुर पार करने के बाद ठंडी हवा चल रही थी। रोपड़ के ऊपर काले बादल छाए हुए थे लगता था कि बड़े जोर की वर्षा आने वाली है। छोटी बेटी बड़े आराम से मेरी गोदी में सो रही थी। जब बस चण्डीगढ़ अड्डे पर पहुंची तो वहां से रिक्शा करके जैसे ही हम घर 401/22-A के अन्दर आए तो एकदम मूसलाधार वर्षा आरम्भ हो गई। हमें तो श्री प्रभु जी ने अपनी करुणा कृपा से इस तेज मूसलाधार वर्षा से बचा लिया नहीं तो श्री प्रभु जी की प्यारी छोटी बेटी बीमार हो जाती। श्री कश्मीरी लाल और वासुदेव जी को होशियारपुर से सीधी बस नही मिली। वह पहले रोपड़ तक बस में आए और फिर वहाँ से तेज वर्षा में भीगते हुए दूसरी बस द्वारा देर रात में चण्डीगढ़ घर पहुचे। वह दोनों वर्षा के पानी से बुरी तरह भीगे हुए थे। कैसी है यह अनोखी प्रभु कृपा।

श्री प्रभु जी की बेटी के प्यारे बोल :- ''प्रभु जी मोरे आवो, प्रभु जी जटाधारी''।

यह दो साल की छोटी सी बेटी जब पहली बार बोलने लगी तो उस ने न मम्मी, न पापा, न भईया, और न दीदी बोल कर बोला : ''प्रभु जी मोरे आवो, प्रभु जी जटाधारी'' यह सात शब्द इकट्ठे कैसे बोले यह हम सब की समझ से बाहर की बात थी। उस ने ऐसा केवल एक बार ही बोला हो ऐसा नहीं कई बार बोला और फिर साथ में डांस भी किया। उस के भाई धीरेन्द्र और अनुपम वहन का जब उस के डांस को देखने का मन करता तो वह दोनों चिमटा और ढोलकी लेकर बजाते तो श्री प्रभु जी की यह छोटी सी गुड़िया अपने मुंह से वह सात शब्द बोलती और नाचती। क्या कृपा है श्री प्रभु जी की।

श्री रघुवीर जी द्वारा छोटी बेटी का नामकरण संस्कार :-

जब आदरनीय श्री रघुवीर जी को इस बात का पता चला तो वह होशियारपुर से कुछ दिनों के लिए हमारे पास चण्डीगढ़ आ गए। श्री प्रभु जी की बेटी के बोल और नृत्य द्वारा उस के मन के भाव सुन और विचार कर वह बड़े प्रसन्न हुए। जब मनोरमा ने श्री रघुवीर जी से पूछा कि इस बेटी का नामकरण संस्कार कब होगा? तब उन्होंने कहा कि हम आज ही कर देते हैं। इस के पश्चात श्री रघुवीर जी ने मुझे आज्ञा दी कि ''सूद साहब! आर्य समाज (जो 401/22 घर के सामने था) से हवन कुंड और हवन सामग्री आदि अभी जा कर ले आओ।'' 'रघुनन्दन' वहाँ से उसी समय जाकर वह सामान ले आया तो उन्होंने श्री प्रभु जी के पास हवन कुंड रख कर श्री प्रभु जी के नाम की 'अशटोत्री माला' द्वारा 108 आहुतियाँ डाल कर अपनी बेटी का नाम ''योगिनी'' रखा और वहाँ पर साथ ही उस का मुंडन संस्कार भी सम्पन्न कर दिया। इस के बाद श्री रघुवीर जी ने अपनी योगिनी बेटी को अपनी

गोद में उठा कर श्री प्रभु जी की आरती की और उसे आशीर्वाद देकर सब को प्रसाद दिया। इसके बाद जब जब भी श्री रघुवीर जी ने चण्डीगढ़ आकर घर में श्री प्रभु जी के मन्दिर में, आरती की तो वह सदा अपनी छोटी बेटी योगिनी को अपनी गोद में उठा कर ही किया करते थे।

श्री प्रभु राम लाल जी महाराज द्वारा दीक्षित श्री नरसिंह मूर्ति जी महाराज का 401सेक्टर-22 के घर में पदार्पण :- जब प्रधान आचार्य श्री चन्द्रमोहन जी महाराज द्वारा आन्धरा प्रदेश के श्री नरसिंह मूर्ति जी को मनोरमा की ध्यानावस्था का पता चला तो वह हमारे पास घर में दो तीन दिन रुके। उन का आर्य समाज सैक्टर-22 में योग पर प्रवचन भी हुआ। इस से पहले भी लुधियाना जाते हुए एक बार वह यहाँ पधारे थे। अब उन को सवाँई में जब श्री चन्द्र मोहन जी महाराज ने बताया कि चण्डीगढ़ में मनोरमा श्री प्रभु राम लाल जी महाराज द्वारा दीक्षित है और उसे श्री प्रभु जी की आवेश समाधि होती है। तो वह सवाँई से मनोरमा द्वारा अपनी समस्या के समाधान के लिए चण्डीगढ़ आए थे। उन्होंने आकर हमें बताया कि आन्ध्रा प्रदेश में उन के हज़ारों शिष्य हैं उन को अपने अपने इष्ट के सब को दर्शन होते हैं परन्तु उन्हें श्री प्रभु रामलाल जी महाराज के दर्शन, जब से वह ऋषिकेश से श्री प्रभु जी की आज्ञानुसार अपने पिता जी के साथा आन्ध्रा प्रदेश गए थे उस के बाद कभी भी नहीं हुए। अब आप श्री प्रभु जी से पूछ कर उन्हें बता दें कि उन को श्री प्रभु राम लाल जी महाराज के दर्शन कब होंगे? इस पर 'रघुनन्दन' ने प्रार्थना की कि स्वामी जी मनोरमा को तो श्री प्रभु जी अपनी इच्छा अनुसार बताते हैं। मनोरमा अपनी इच्छा अनुसार श्री प्रभु जी से कोई प्रश्न नहीं पूछ सकती। आप के प्रश्न का उत्तर श्री रघुवीर जी दे सकते हैं आप उन से मिल कर पूछ लें। उन्होंने कहा वह कहाँ मिलेंगे और अगर हो सके तो उन के साथ किसी को भेज दें। इस पर 'रघुनन्दन' ने श्री वासुदेव जी को बुला कर पूछा तो वह उन के साथ श्री रघुवीर जी के पास होशियारपुर में जाने को तैयार हो गए।

श्री स्वामी जी ने श्री रघुवीर जी के पास जा कर अपना वही प्रश्न पूछा, तो श्री रघुवीर जी ने कहा कि आप नहा धोकर सुबह 3 बजे उन के कमरे में आ जाना आप को श्री प्रभु जी के दर्शन हो जाएंगे। स्वामी जी रात को सोने के लिए चले गए मगर उन को नींद कहाँ आनी थी। वह सोच रहे थे कि अगर वह सो गए और नींद न खुली तो श्री प्रभु जी के दर्शन कैसे होंगे। वह रात को सोए नहीं। रात के 2 बजे शौच व स्नान आदि से निपट कर ठीक 3 बजे श्री रघुवीर जी के कमरे में दाखिल हुए और जैसे ही श्री रघुवीर जी के चरणों में प्रणाम किया उसी समय उन की समाधि लग गई। उन्होंने श्री प्रभु राम लाल जी महाराज के साक्षात जटाधारी रूप में दर्शन किये। इस पर उन्होंने श्री प्रभु जी को गृहस्थी रूप में उन्हें दर्शन देने के लिए प्रार्थना की। तब श्री प्रभु जी उन्हें अपने गृहस्थी रूप में दर्शन देने लगे। उन्होंने फिर श्री प्रभु चरणों में प्रार्थना की कि आप मुझे अपना वह गृहस्थी रूप, कृपा कर दिखाएं जिस

में वह उन के श्री चरणों में ऋषिकेश आश्रम में आया था। तब श्री प्रभु जी ने जब वह रूप दिखाया तो वह श्री रघुवीर जी के चरण पकड़ कर बहुत रोए। इस पर श्री प्रभु जी ने उन्हें बहुत प्यार किया तो उन्होंने श्री प्रभु जी से पूछा कि महाराज वह आप की क्या सेवा करे, तो श्री प्रभु जी ने उन्हें कहा कि आप ने हमारे अमृतसर जन्मस्थान पर मन्दिर बनवा देना। काफी देर के बाद उन की समाधि खुल गई। फिर श्री रघुवीर जी से आज्ञा लेकर वासुदेव के साथ वह चण्डीगढ़ घर आये। उन्होंने अपनी सारी घटना हम सब को सुनाई। इस के बाद श्री स्वामी जी महाराज आन्ध्रा प्रदेश चले गए। वहाँ जा कर उन्होंने अपनी सारी जमीन जो समुद्र तट के पास थी वह बेच दी। उस के पैसे बैंक में जमा करवा कर और बैंक की पास बुक लेकर फिर चण्डीगढ़ आए। उन्होंने कहा प्रो० सूद आप इस बैंक की पास बुक द्वारा पैसे बैंक से लेकर श्री प्रभु रामलाल जी महाराज के जन्मस्थान अमृतसर में प्रभु मंदिर बनवा देना। 'रघुनन्दन' ने जवाब दिया स्वामी जी आप को श्री प्रभु जी ने जन्मस्थान पर मन्दिर बनवाने की आज्ञा प्रदान की है तो आप इस पास बुक को अपने पास रखें और आप इस के बारे में श्री रघुवीर जी से दिशा निर्देश ले लें। श्री स्वामी जी बस द्वारा होशियारपुर जा कर श्री रघुवीर जी को मिले। उन्होंने स्वामी जी से कहा कि आप अमृतसर जा कर घर वालों से बात कर लें और उन को पैसे देकर श्री प्रभु जन्मस्थान की रजिस्टरी अपने नाम करवा लें। श्री स्वामी जी फिर अमृतसर श्री प्रभु जी महाराज के जन्मस्थान पर गए और घर वालों से मकान को खरीदने की बात की। उन्होंने वह स्थान बेचने से मना कर दिया। अमृतसर से स्वामी जी फिर चण्डीगढ़ घर में आए और उन्होंने हमें सब बता दिया। 'रघुनन्दन' ने स्वामी जी को कहा कि इस में श्री प्रभु जी की क्या लीला है यह तो वह ही करुणा सागर प्रभु जाने। आप निराश न हों आप जो कर सकते थे वह आप ने प्रभु आज्ञा पालन के लिए सब कुछ किया। अब आप सब श्री प्रभु जी पर छोड़ दें वह वहाँ कब और किस द्वारा अपने मंदिर का निर्माण करवाएंगे वह श्री प्रभु ही जाने। इस पर स्वामी जी प्रसन्न होकर आन्ध्रा प्रदेश चले गए। ई सन् 1978 में स्वामी जी ने अपने भौतिक शरीर का त्याग कर दिया और गोलोक प्रस्थान कर गए।

मेरे मित्र कैलाश जेरथ पर अनोखी प्रभु कृप्या :- कुछ दिनों के पश्चात मेरे मित्र और एम.एस.सी. (ओरँज) के सहपाठी श्री कैलाश चन्द्र जेरथ मुझे सैक्टर-22 की मारकीट में अपनी फैमिली के साथ मिले। मेरे पूछने पर उन्होंने बताया कि वह फौरन से अभी चण्डीगढ़ आए हैं और यहां मकान किराये पर लेकर देहली से सामान ले करके उस में रह कर गोरमिंट पोस्टीग की कोशिश करेंगे।'रघुनन्दन' उन को घर ले आया और उन से बेनती की कि आप सब इस घर में हमारे साथ रहें और जब आप की पोस्टीग हो फिर वहाँ चले जाना। वह हमारे साथ 401/22-A मकान में रहने लगे। हमारे भाभी जी सुबह उठ कर स्नान आदि से फारग होकर श्री प्रभु चरणों में बैठ कर अपना नित्यनेम करते। एक दिन मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ जब कैलाश को प्रभु चरणों में आंखें बन्द करके ध्यान में देखा। जब वह प्रभु चरणों से उठे तो 'रघुनन्दन' ने कैलाश से पूछा कि इतने दिनों के बाद आज

पहली बार आपको श्री प्रभु चरणों में बैठे देख मुझे बड़ी हैरानी हुई। क्या कोई विशेष बात है। इस पर कैलाश ने कहा कि आज सुबह 4 बजे से पहले जब उस की आंखें खुली तो उसने इन श्री जटाधारी प्रभु जी को हमारी चारपाईयों के चक्कर काटते देखा। जब कैलाश ने मन्दिर वाले प्रभु जी को घर के अन्दर सेहन में देखा तो सोचा कि यह उन की अपनी ही सोच होगी वह भला यहाँ क्या करेंगे। इतने में श्री प्रभु जी ने बोल कर कहा कि हम अपने बच्चों को देखने इस लिए बाहर आए थे ताकि उनको कोई तकलीफ न हो। कैलाश ने कहा कि पहले वह उन को एक फोटो के रूप में ही देखता था लेकिन आज उसे पता चला कि यह प्रभु तो सर्व समर्थ, सर्व शक्तिमान और कण कण में व्याप्त हैं। कैसी है यह श्री प्रभु जी की कैलाश पर अपनी अनोखी कृपा। उसी दिन कैलाश की पोस्टिंग चीफ इंजीनीयर के रूप में थर्मल पावर प्लांट करनाल में हो गई और वह लोग वहाँ अपनी गवर्नमैंट कोठी में चले गए। जितने दिन वह वहाँ रहे हमारी दोनों फैमिलीज घर के अन्दर वाले बहुत बड़े सेहन में इकट्ठी चारपाईयें लगा कर व टेबल फेन लगा कर बाहर ताजी हवा में सोते थे। इन ही चारपाईयों के गिरद श्री प्रभु जी को चक्कर लगाते स्थूल रूप में श्री कैलाश ने देखा था। बाद में दो बार 'रघुनन्दन' उन के फरीदाबाद घर में जा कर मिला। उन को तब भी वह सारा किस्सा उसी तरह याद था।

योगिनी बेटी के डाक्टर बनने की भविष्यवाणी :- ई सन् 1976 में श्री प्रभु जी के बेटे धीरेन्द्र ने अपनी मैट्रिक की परीक्षा पास कर कालेज में जब प्रैप में दाखिला लेना था तो उस ने मुझ से पूछा पापा जी! अब प्रैप में वह कौन से विषय ले। इस पर 'रघुनन्दन' ने पूछा कि आप जीवन में क्या बनना चाहते हो। इस पर धीरेन्द्र बेटे ने जवाब दिया कि वह डाक्टर बनना चाहता है तो उस को पापा ने कहा कि आप प्रैप (मैडिकल) का फार्म भर कर डी.ए.वी. कालेज के चण्डीगढ़ आफिस में दे दो। उस ने ऐसा ही किया। फिर वह छुट्टियों में होशियारपुर चला गया।

जब वह वहाँ श्री रघुवीर जी से मिला तो उन्होंने अपने बेटे से पूछा कि कालेज में जाकर क्या लेना चाहते हो? बेटे धीरेन्द्र ने जवाब दिया अंकल जी! वह डाक्टर बनना चाहता है इस लिए प्रैप (मैडिकल) का फार्म भर कर कालेज में दे दिया है।

सूद परिवार के सर्वेसरवा श्री रघुवीर जी ने कहा कि डाक्टर तो हमारी छोटी बेटी योगिनी ही बनेगी (उस समय योगिनी बेटी केवल 4 वर्ष की थी) और तुम ने तो इंजीनियर बनना है इस लिए चण्डीगढ़ लौट जाओ और प्रैप (नोन मैडिकल) का फार्म भर कर कालेज में दे दो। धीरेन्द्र उसी दिन चण्डीगढ़ आ गया और कालेज में जाकर प्रैप (नोन मैडिकल) का फार्म भर कर दे दिया। अपने बच्चों के लिए श्री रघुवीर जी ने जो उस समय भविष्यवाणी की थी ठीक उसी के अनुरूप धीरेन्द्र मकैनिकल इंजीनियर और योगिनी बेटी डाक्टर बनी।

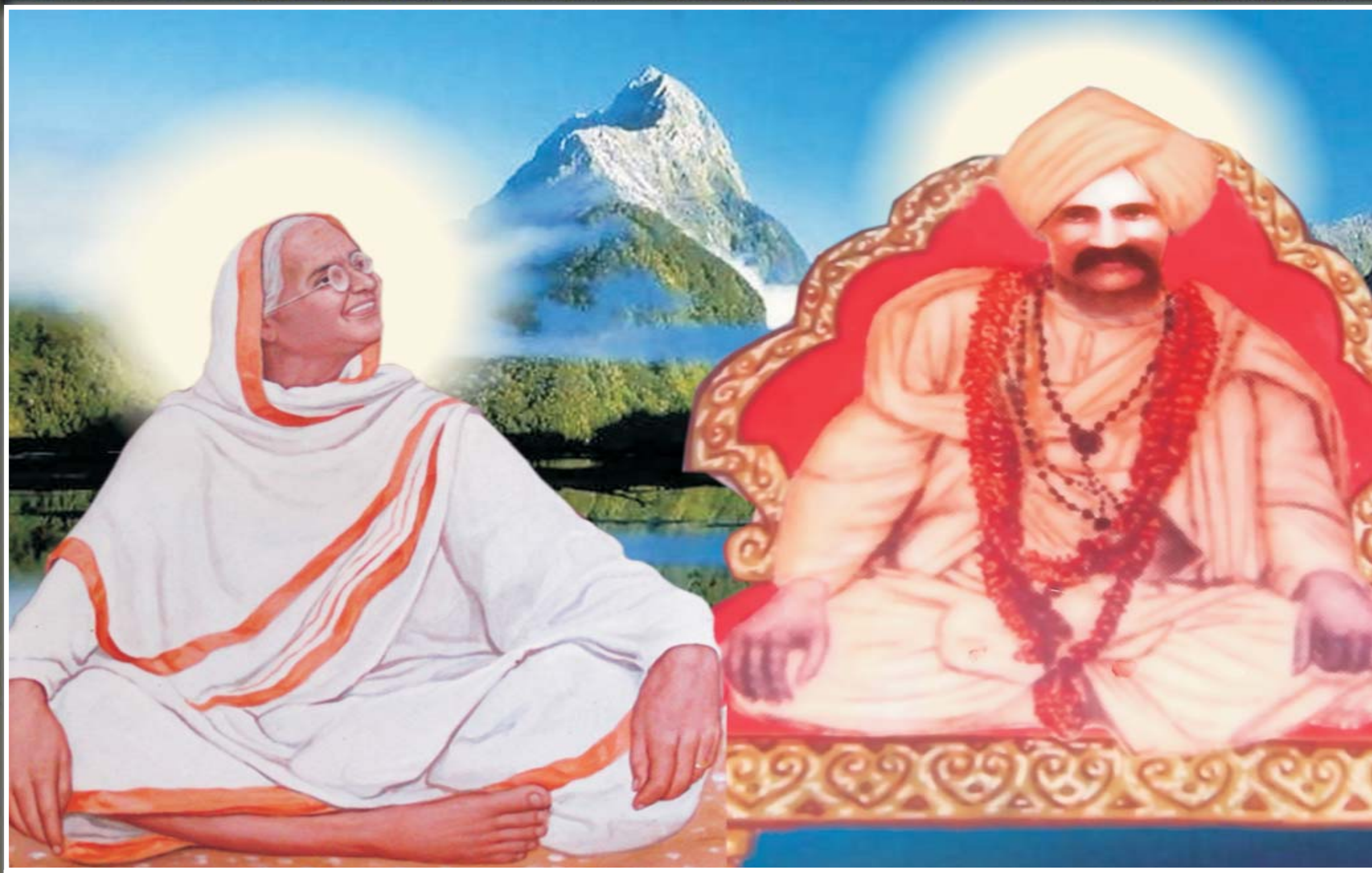

जुगल सरकार योगेश्वर प्रभु श्री रामलाल जी महाराज व गुरुमाँ सुभद्रा जी की कशमीर यात्रा

श्री प्रभु करुणा कृपा अवलम्वित चिन्ता-मुक्त जीवन

 # 401/22 में श्री प्रभु रामलाल जी के श्री चरणों में हर रविवार को सत्संग करने की आज्ञाः-

कैलाश परिवार के चले जाने के कुछ दिनों के बाद श्री रघुवीर जी चण्डीगढ़ घर में आए और उन्होंने मनोरमा से कहा कि श्री प्रभु जी यहाँ पर हर रविवार को सत्संग करवाना चाहते हैं। मनोरमा ने जवाब दिया कि हमें तो कुछ आता ही नहीं तो सत्संग होगा कैसे! इस पर श्री रघुवीर जी ने मुझे आज्ञा दी कि "सूद साहब! मदन लाल मढ़ार (आज की मिनिस्टर सुषमा स्वराज के ससुर) को सैक्टर-14 चण्डीगढ़ से बुला कर लाओ।" 'रघुनन्दन' उसी समय जा कर उन को सैक्टर-14 के घर से बुला लाया। श्री रघुवीर जी ने श्री मदन लाल जी से कहा कि - "उन्हें श्री प्रभु जी ने यहाँ 401/22 सैक्टर में हर रविवार सत्संग आरम्भ करवाने के लिए भेजा है। श्री प्रभु जी ने इस सत्संग के कुछ नियम भी बताए हैं।" इतने में श्री मदन लाल जी ने कहा कि अगर आप को यहाँ के हर रविवार के सत्संग और उस के नियमों के बारे में श्री प्रभु जी कह सकते हैं तो वह मुझे स्वयम् कह दें। इस पर श्री रघुवीर जी ने मनोरमा को रसोई घर से बुलाया और एक भजन सुनाने को कहा। भजन सुनाते ही मनोरमा जी समाधिस्थ हो गई। मनोरमा जी ने बंद आंखों से समाधि में श्री रघुवीर जी की जेब से बाहर के देश की सिगरेट को उसकी डिब्बी से निकाला और फिर दियासलाई की डिब्बी निकाल कर, बन्द आखें, दियासलाई को जलाकर, सिगरेट को अपने मुंह में लगा लिया तथा इसे सुलगा कर फिर दियासलाई बुझा कर उस सिगरेट का धूआँ अपने मुँह में भर कर सामने बैठे मदन लाल जी की तरफ छोड़ दिया। उसी समय श्री मदन लाल समाधिस्थ हो गए। लगभग आधे घंटे के बाद श्री रघुवीर जी ने उन की समाधि खुलवा दी तो श्री मदन लाल जी ने श्री रघुवीर जी से कहा कि उसे बड़ा आनन्द आ रहा था आप ने उसे इतनी जल्दी में ही क्यों उठा दिया। श्री रघुवीर जी ने उन से पूछा कि क्या आप की बात श्री प्रभु जी से हुई। तो उन्होंने कहा कि श्री प्रभु जी ने 401/22 सैक्टर घर में हर रविवार दोपहर के ठीक दो बजे से सत्संग आरम्भ करने को कहा है और श्री प्रभु जी ने इस सत्संग के पांच नियम भी बताये जो इस प्रकार से रहेंगे :- 1. यहाँ पर श्री सतगुरु तत्त्व की पूजा होगी। 2. हर रविवार को सत्संग यहां पर ठीक 2 P.M. से आरम्भ होगा। 3. सत्संग में कोई पैसा व प्रशाद नहीं चढ़ेगा। इस की सूचना सब को देनी होगी और मन्दिर में लिख कर भी लगाना होगा। 4. सत्संग में कोई सांसारिक बातचीत नहीं होगी। 5. सत्संग की समाप्ति प्रभु इच्छा से होगी। यह सत्संग इसी रविवार से 401/22 सैक्टर के घर में श्री प्रभु जी द्वारा बताये गए नियमों के अनुसार ठीक 2 बजे से आरम्भ हो गया। श्री प्रभु स्तुति के बाद श्री मदन लाल जी और उन की धर्मपत्नी अमृतवाणी से प्रभु सत्संग का आरम्भ करते। फिर भजन आदि और प्रभु लीला चलती रहती। प्रभु इच्छा से ही इस की समाप्ति होती।

आखिर में ओम जय जगदीश हरे आरती और प्रभु प्रशाद के बाद सत्संग का समापन होता। इस सत्संग में श्री प्रभु प्रेरणा द्वारा लोग चण्डीगढ़ के दूर-दूर के सैक्टरों से, मोहाली से, बाहर के स्थानों से और सड़क पर चलने वालों को भी अपने आप इस सत्संग में प्रेरणा देकर प्रभु अन्दर बुला लेते। श्री प्रभु जी मनोरमा जी को सत्संग में समाधिस्थ ही रखते और उन की बन्द आखों द्वारा प्रभु लीला वहाँ आये हुए प्रभु प्रेमियों को देखने और अनुभव करने को मिलती। श्री प्रभु जी के आशीर्वाद से वहाँ पर आए कई अंजानें प्राणियों के ध्यान चले। प्रेम समाधियाँ लगी। कईयों के दुख दूर हुए। इस सत्संग द्वारा हुई कुछ विशेष घटनाए इस प्रकार से हैं।

#402/22 चण्डीगढ़ के रविवार सत्संग की कुछ दिव्य घटनाएं:-

एक बार देहली जाते हुए श्री रघुवीर जी रविवार के सत्संग के लिए चण्डीगढ़ रुके। श्री प्रभु आज्ञानुसार सत्संग का कार्य चलते देख और आए भक्त समाज से बातचीत करके उन को प्रसन्नता हुई। श्री विद्यारत्न शर्मा जी सोमवार को अपने आफिस जाने से पहले एक आम को लेकर श्री रघुवीर जी को मिलने आए। उन्होंने वह आम श्री रघुवीर जी को दिया और कहा कि उन के घर 425/22 सैक्टर के आम के पेड़ पर यह एक ही आम पहली बार लगा है और उन के मन के अन्दर यह आप को देने का भाव हो रहा था। इस लिए यह आप को देने यहाँ आया हूँ। श्री रघुवीर जी ने उन के दिए हुए आम को बड़े प्यार से स्वीकार किया और कहा कि ''शर्मा जी! अगर आप के घर कोई ऐसी घटना घटे जो किसी ने न कभी देखी हो और न ही कभी सुनी हो तो वह हमें लिख भेजना''। सत्संग चलता रहा।

मिसिज़ शर्मा वासी # 425/22 सैक्टर पर अलौकिक प्रभु कृप्या:- श्री प्रभु जी के हर रविवार के सत्संग में # 425 सैक्टर-22 से श्री विद्यारत्न शर्मा जी और उन की धर्मपत्नी बड़े प्रेम से आते और बड़े प्यार से श्री प्रभु चरणों में भजन बोलते। मनोरमा जी की समाधिस्थ अवस्था-आंखें बन्द द्वारा श्रीमती शर्मा जी को दो बार प्रभु मन्दिर से पुष्प प्रशाद मिला। जब काफी समय उन को हर रविवार के इस प्रभु सत्संग में आते हो गया तो एक दिन श्री प्रभु प्रेरणा से 'रघुनन्दन' ने शर्मा जी से पूछा कि अगर आप के घर में श्री प्रभु कृपा की कोई घटना हुई हो तो कृप्या हमें भी बताओ। उन की धर्मपत्नी ने कहा कि उन के घर में घटना तो हुई पर वह घटना बड़ी अनोखी थी। उन्होंने बताया कि उन का गोरमिंट मकान दो बैडरूम सैट वाला था। कुछ समय पहले उन के पति और बेटा दोनों बहुत बीमार हो गए। उन दोनों को बहुत तेज बुखार था। शर्मा जी ड्राईंग रूम में लेटे हुए थे और बेटा बैड रूम में लेट रहा था। इन दोनों के बीच वाले बैड रूम में वह (श्रीमती शर्मा) स्वयम् लेटी हुई सोच रही थी कि अगर इन का बुखार बढ़ा या इन की तबीयत खराब हुई तो प्रभु जी इन को कौन सम्भालेगा। जब उन्होंने मन ही मन श्री प्रभु जी के चरणों में प्रार्थना की तो अपने बैड के पास बड़े तेजयुक्त श्री प्रभु जी को जटाधारी रूप में सामने खड़े देखा। तो वह डर के मारे भाग कर रसोई घर की अपनी पेंटरी में आ गई और वहाँ के दरवाज़े से जब घर के अन्दर वाले

सहन में लगे आम के पेड़ के नीचे श्री प्रभु जी को देखा तो उन्होंने फौरन दरवाज़े को बन्द कर कुन्डी लगा दी। वह डर के मारे सहमी हुई रसोई घर में चली आई और अपनी घबराहट को दूर करने के लिए वहां से मौसम्मी और पलेट लेकर अपने बैडरूम में आ गई। वहाँ जब मौसम्मी को छील कर वह पलेट में रख कर खाने लगी तो उन्होंने श्री प्रभु जी को तेजयुक्त अपने सामने जब फिर खड़े देखा तो उन के होश उड़ गए। उस घबराहट में वह अपने ड्राईंग रूम के दरवाज़े को खोल कर साथ वालों के घर के अन्दर ड्राईंग रूम के बड़े सोफे पर जा कर लेट गईं। उन का शरीर डर और घबराहट के कारण कांप रहा था। वहां के जब घर वालों ने मिसिज शर्मा को पसीने से लतपथ अपने सोफे पर पड़ी देखा तो वह भी घबरा गए। उन्होंने मिसिज शर्मा को बुलाया जब उन्होंने कोई जवाब नही दिया तो वह शर्मा जी को उन के घर से बुला लाये। शर्मा जी ने मिसिज को बेहोश पाया तो अपने घर से होमियोपैथिक दवाई को लाकर उन के मुंह में डाल दिया। जब थोड़ी देर के बाद उन को होश आया तो उन्होंने सारी बात शर्मा जी को बताई। यह अलौकिक घटना जब मिसिज शर्मा से हम सब ने सुनी तो 'रघुनन्दन' के मन में बार बार एक प्रश्न उठा कि श्री प्रभु जी के दर्शन तो बड़े सौभाग्य से होते हैं फिर मिसिज शर्मा को तो परम आनन्द की अनुभूति होनी चाहिए थी मगर उन को डर कैसे लगा? इस का कारण क्या है? उसी रात मनोरमा जी को स्वप्न समाधि हुई उस में कृपालु श्री प्रभु जी ने बताया कि ''बेटी! श्रीमती शर्मा के घर आए तो हम स्वयम् थे। उस समय मिसिज शर्मा को हमें देख कर भय इस कारण लगा क्योंकि जब हम ने तुम्हारी समाधिस्थ अवस्था में पहली बार उसे इस सत्संग में पुष्प प्रशाद दिया तो उन्होंने उस डर से कि मनोरमा जी को जो भूत व्याधा है वह यह प्रसाद खाने से कहीं उसे न हो जाए तो उसने हमारे दिए पुष्प प्रसाद को इस घर के अन्दर लगे आम के पेड़ के नीचे डाल दिया। फिर दूसरी बार हम ने जब उसे पुष्प की कुछ पत्तियां प्रशाद में दीं तो उसी डर से दोबारा उस हमारे दिए प्रशाद को घर के अन्दर नलके के पास वाले तुलसी वाले गमले में जा कर डाल दिया और अपने घर को चली गई। श्री कृष्ण रूप में हम ने अर्जुन को कहा था ''कि जो भक्त जिस भाव से हमें सिमरता है हम उस को उसी भाव से मिलते हैं।'' यहां मिसिज शर्मा ने हमें भूत के भाव से ही सिमरा था सो जब उन्होंने हमें अपने घर के कमरे में देखा तो उसी भूत के भाव द्वारा उन को हमारे दर्शन होने से डर लगा। सुबह जब मनोरमा सो कर उठी तो उस से श्री प्रभु जी द्वारा बताई गई बात को सुन कर मेरे मन में उठे सवाल का जवाब मिल गया।

शाम को शर्मा जी के आफिस से आने के बाद हम दोनों उन के घर गए। वहां जा कर 'रघुनन्दन' ने मिसिज शर्मा जी से पूछा बहन जी! क्या आप को रविवार के सत्संग में कभी समाधिस्थ मनोरमा जी द्वारा प्रशाद मिला? उन्होंने जवाब दिया कि उन्हें दो बार प्रशाद मिला–एक बार गेंदे का पुष्प और दूसरी बार गुलाब की पत्तियाँ। मेरे फिर पूछने पर कि क्या आप ने प्रशाद का सेवन किया? उन्होंने जवाब दिया कि पहली बार दिया हुआ

गेंदे का फूल आम के पेड़ के नीचे गिरा दिया था और दूसरी बार की गुलाब की पत्तियों को तुलसी वाले गमले में डाल दिया था। इस पर जो श्री प्रभु जी ने बताया था जब वह सब मनोरमा ने उन्हें सुनाया तो मिसिज शर्मा ने कहा कि उन के मन में प्रशाद को लेकर ठीक यही धारणा थी इसी लिए उन्होंने उस कृपा प्रशाद को सेवन न करके वहाँ घर में आम के नीचे और तुलसी के गमले में डाल दिया था। अब इस का उन्हें बड़ा पछतावा हो रहा था कि वह श्री प्रभु चरणों में प्रणाम तक न कर सकी। कैसी है यह श्री प्रभु जी की अकारण करुणा कृपा लीला। इस घटना के केई साल बाद जब डा० योगिनी ने पंचकूले घर से मिसिज शर्मा जी से यह घटना उन के सैक्टर-38 घर चण्डीगढ़ में जा कर सुनी तो उन्होंने उसे प्रेम व अश्रुपूरत आंखों से बताया कि आज भी श्री प्रभु जी की वही छवि उन के मन में बसी हुई है।

सरदारनी जसवन्त कौर #3295 सैक्टर - 23D चण्डीगढ़ से सम्बन्धित प्रभु घटना :-

सरदार मनमोहन सिंह अमृतसर के स्टेट बैंक ऑफ इन्डिया के जनरल मैनेजर थे। वह श्री माधो राम जी (जो लाहौर में ब्र० गोपालानन्द जी से दीक्षित थे) के सम्पर्क में आए। श्री माधो राम जी गोरमिंट प्रैस सैक्टर-18 चण्डीगढ़ में काम करते थे और रहते सैक्टर-23 में थे। इस लिए सरदारनी जसवन्त कौर अपना मकान #3295 सैक्टर - 23D में बनवा रहे थे। जब उन को 401/22 सैक्टर के रविवार सत्संग का पता चला तो वह एक दिन घर में आकर मनोरमा से मिलीं। खाने का समय था इस लिए मनोरमा ने उन्हें मन्दिर के पास दीवान पर बिठा कर खाना खाने के लिए पूछा। उन्होंने कहा कि वह किसी के भी घर में जलपान व खाना नही लेतीं। थोड़ी देर के बाद 'रघुनन्दन' भी कालेज से घर आया तो उस ने भी बहन जसवन्त कौर से प्रभु प्रशाद ग्रहण करने की प्रार्थना की पर उन्होंने मना कर दिया। जब हम खाना खा रहे थे तो रघुनन्दन ने देखा कि सरदारनी जसवन्त कौर का प्रभु चरणों में एक टक ध्यान लगा हुआ था और उन की आंखों से आंसुओं की लगातार धाराएं बह रही थीं। वह आधा पौना घंटा अपनी प्रेम समाधि की अवस्था में रहीं। उस के बाद जब उन की उथान अवस्था हुई तो बहन जी ने बड़े प्रेम से कहा कि वह भी यहां खाना खाएंगी। इस पर 'रघुनन्दन' ने जवाब दिया कि बहन जी आप को पहले मनोरमा के फिर मेरे यहां प्रशाद ग्रहण करने के लिए बार-बार आग्रह करने पर भी आप ने इंकार कर दिया। आप ने कहा था कि आप किसी के घर में जलपान अथवा खाना नही खातीं। अब आप कृप्या यहां पर भोजन करने से पहले हमें यह बतायें कि अब आप यहां खाना खाने पर कैसे राजी हो गईं। उन्होंने कहा कि उन के बापू (श्री प्रभु रामलाल जी महाराज) ने अभी उन्हें बताया कि "यहां पर तो वह भी भोजन करते हैं तो बेटी तू कैसे नही करेगी।" यह श्री प्रभु जी के प्रेम भरे वचन सुन कर हमारा मन भी प्रभु चरणों पर निछावर हो गया। कैसी है यह करुणा कृपा लीला। इस के बाद उन्होंने बड़े प्यार से प्रभु प्रशाद को ग्रहण किया और फिर जब कभी भी वह इस घर में आए तो उन्होंने

सब से पहले हम से यह पूछा कि आज आप प्रभु प्रशाद में खाने को क्या देंगे। जो भी उस समय घर में उन्हें रूखा सुखा मिला उसे प्रभु प्रशाद मान कर उन्होंने बड़े प्रेम से स्वीकार किया।

भक्त मुनीलाल डौकूमेनटेशन सेन्टर सैक्टर-17 चण्डीगढ़ वालों के साथ हुई प्रभु घटना:-

श्री प्रभु आज्ञा अनुसार 401/22 घर के मेन दरवाजे पर और प्रभु मन्दिर में सत्संग से पहले हर रविवार मोटे शब्दों में लिख कर लगा दिया जाता था कि इस सत्संग में पैसे और प्रशाद चढ़ाने की प्रभु जी द्वारा मनाही है इस लिए सब भक्तों से अनुरोध है कि कोई भी श्री प्रभु जी की आज्ञा का उलंघन न करे।

भक्त मुनीलाल श्री मैनी साहिब के मित्र थे और वह दोनो ठीक समय पर हर रविवार के सत्संग में 401/22 घर में आते। श्री मुनीलाल जी अपने घर सैक्टर-21 से अपना हारमोनियम भी अपने साथ लाते। मैनी साहिब प्रेम से भजन बोलते और श्री मुनीलाल हारमोनियम पर धुन निकालते। ठीक 2 बजे आरती के बाद, अमृत वाणी का पाठ, फिर भजन आरम्भ हो जाते। जिस भक्त का मन प्रभु चरणों में भजन बोलने को करता वह सत्संग में बोल सकता था। वहाँ किसी को भी भजन बोलने की मनाही नही थी। श्री प्रभु जी अपने आप अपनी प्रेरणा से वहाँ पर संस्कारी जीवों को बुलाते थे। हम लोग पहले से इन भक्तों को जानते तक नही थे। आरम्भिक आरती के बाद श्री प्रभु जी मनोरमा जी को समाधिस्थ कर देते और उन की बन्द आंखों द्वारा प्रभु जी की लीला का पान वहाँ का भक्त समाज करता। भक्त मुनीलाल जी ने एक दिन सत्संग में एक रूपये का नोट प्रभु मन्दिर में चढ़ा दिया। 'रघुनन्दन' ने वह नोट मन्दिर से उठा कर, प्रभु आज्ञा आधीन उन्हें समझा कर, वापिस कर दिया। जब सब भक्त श्री प्रभु चरणों में प्रणाम कर बारी बारी से अपना-अपना प्रभु प्रसाद ले रहे थे तो भक्त मुनीलाल ने मन्दिर में प्रणाम कर वह एक रूपये का नोट चुपके से प्रशाद भरी थाली के नीचे सरका दिया। प्रशाद की थाली के पास समाधिस्थ मनोरमा आंखें बन्द खड़ी थी। भक्त मुनीलाल ने सोचा कि इन की तो आंखें बन्द हैं इन को तो पता चलेगा नही और वह एक रूपये का नोट प्रभु चरणों में चढ़ा रहेगा।

समाधिस्थ मनोरमा जी ने बन्द आंखों से उस एक रुपये के नोट को प्रशाद भरी थाली के नीचे से निकाल कर भक्त मुनीलाल की जेब में डाल कर कहा कि यहाँ सत्संग में कोई पैसा व प्रशाद श्री प्रभु चरणों में न चढ़ाने की प्रभु आज्ञा का आगे से उलंघन न करना और यह रुपया किसी दूसरे मन्दिर में जा कर चढ़ा देना। भक्त मुनीलाल बड़ा हैरान था कि बिल्कुल बन्द आंखों से उन्होंने नीचे सरकाये नोट को कैसे देखा, फिर कैसे निकला और उस के बाद बन्द आंखों से सब भक्तों के बीच से होते हुए उन्हें अपनी जगह से दूर बैठे को कैसे ढूंढ कर और उन के पास आ कर फिर उन की जेब में कैसे डाला। सत्संग में ऐसी कई लीलाएं प्रभु अपने भक्तों के हितार्थ करते रहे।

बीबी जसवन्त कौर को प्रशाद न चढ़ाने का आदेश :–

सरदारनी जसवन्त कौर को हम सब ने समझाने की कोशिश की कि आप प्रभु चरणों में प्रशाद चढ़ा कर प्रभु आज्ञा का उलंघन न करें। पर वह हमारी बात मानने को तैयार नही थीं। कुछ देर बाद जब 'रघुनन्दन' होशियारपुर में श्री रघुवीर जी से मिला तो उन्होंने पूछा ''सूद साहब ! रविवार के सत्संग में कोई पैसा या प्रशाद तो नही चढ़ाता?'' 'रघुनन्दन' ने जवाब दिया कि हमारे बार बार कहने पर भी सरदारनी जसवन्त कौर सदा प्रशाद लेकर ही सत्संग में आती हैं। उन्होंने कहा कि अपनी चण्डीगढ़ वाली वापसी यात्रा पर घर जाने से पहले सरदारनी जसवन्त कौर को उन की ओर से एक सूचना देकर जाना। श्री रघुवीर जी ने कहा कि ''सरदारनी जसवन्त कौर को कहना कि उन्होंने कहा है कि रविवार के सत्संग में वह प्रशाद को लेकर नहीं जाएंगी और अगर वह प्रशाद के बिना वहाँ आने को तैयार नहीं हैं तो वह अपने घर में रहें ताकि श्री प्रभु जी की आज्ञा का उलंघन न हो।'' रघुनन्दन वापसी पर होशियारपुर से सीधा सरदारनी जसवन्त कौर के घर सैक्टर–23 में गया और उन को श्री रघुवीर जी का पैगाम दे दिया। यह सुन कर बीबी जसवन्त कौर रोने लगी और अपने घर के अन्दर चली गईं।

सरदारनी जसवन्त कौर पर अकारण प्रभु कृपा :– सरदारनी जसवन्त कौर अगले दिन रविवार के सत्संग में 401/22 सैक्टर नही आईं। शाम की प्रभु आरती के बाद समाधिस्थ मनोरमा जी के हाथ में एक पुष्प था। सत्संग के बाद श्री ओम प्रकाश शर्मा और मिसिज बिमला शर्मा तो घर में ही रहे बाकी भक्त आरती के बाद अपने घरों को चले गए। श्री ओम प्रकाश शर्मा मनोरमा जी के ध्यान खुलने का इन्तजार रात के 10 बजे के बाद तक करते रहे। उन की बेटी शशी शर्मा के विवाह का कोई चक्कर चल रहा था जिस के कारण वे कलकत्ते में श्री चन्द्रमोहन जी महाराज के पास से निराश लौटे थे। वह परेशान थे और सोच रहे थे कि यह पुष्प प्रशाद आज उन को ही मिलेगा। मनोरमा जी का जब ध्यान खुला तो उन्होंने मुझे कहा कि यह पुष्प–प्रशाद श्री प्रभु जी ने सरदारनी जसवन्त कौर की बड़ी बेटी जो मोहाली में रहती है उस को अभी जा कर देने के लिए कहा है। आप पहले सैक्टर–23 उन के घर जाकर पता कर लें अगर वहाँ से उन का बेटा आर पी सिंह वहां जा रहा हो तो उसे देदें और बेटे को कहना कि अपनी बड़ी बहन को वह यह प्रभु प्रशाद अपने सामने खिला दे। अगर कोई न जा रहा हो तो आप ने उन की बड़ी बेटी का पूरा पता लेकर स्कूटर द्वारा वहाँ जा कर खुद खिला कर आना। शर्मा जी तथा मिसिज़ शर्मा यह सुनकर पंचकूले चले गए।

'रघुनन्दन' उसी समय सरदार मनमोहन सिंह के सैक्टर–23 वाले घर चले गए। जब वहाँ जा कर सरदारनी जसवन्त कौर जी से उन के बेटे के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि ''प्रो० सूद ! जब कल होशियारपुर से वापसी पर आप ने श्री रघुवीर जी का पैगाम आकर दिया था तो वह आज रविवार के सत्संग में खाली हाथ जाना

नही चाहती थी क्योंकि उन की बड़ी बेटी के तलाक का फैसला कल सोमवार को होना था। अभी उन का बेटा आर. पी. सिंह इसी सम्बन्ध में अपनी बहन के पास मोहाली जा रहा है। अब उन के लिए श्री प्रभु जी ने अगर कोई आज्ञा दी हो तो कृप्या हमें बता दें।'' 'रघुनन्दन' ने जवाब दिया कि ''बहन जी! श्री प्रभु जी ने आप की बड़ी बेटी के लिए पुष्प प्रशाद भेजा है अगर कुकू बेटा अपने सामने इस प्रशाद को खिला सकता है तो वह अभी जाकर यह काम कर दे नही तो आप मुझे बेटी का पूरा-पूरा मोहाली का पता दे दें तो वहां जा कर प्रभु आज्ञानुसार स्वयम् खिला दूँगा।'' उन्होंने उसी समय अपने बेटे को बुलाकर सारा समझा दिया तो वह भी उसी समय अपनी कार में मोहाली जाकर अपनी बहन को अपने सामने वह पुष्प प्रशाद खिलाने के लिए तैयार होकर कहने लगा कि ''प्रो० सूद आप चिंता न करें वह प्रभु आज्ञा अनुसार सारा काम ठीक करके आएगा।''

दो दिन के बाद सरदार मनमोहन सिंह और बहन जसवन्त कौर घर आए और श्री प्रभु चरणों में प्रणाम कर कहने लगे कि उन्होंने तो सोचा था कि रविवार के सत्संग में प्रशाद लेकर जाएंगे तो श्री प्रभु चरणों में उन की हाज़री लगेगी तो हो सकता है कि हमारी बड़ी बेटी के तलाक की समस्या सुलझ जाए। उस दिन जो श्री प्रभु जी का पुष्प प्रशाद बेटी के सेवन करने की आज्ञा द्वारा मिला, उस के कारण ही सोमवार को जज ने बेटी को देखते ही अपने फैसले में उस का तलाक रोक दिया और लड़के से और उस के घर वालों से माफीनामा भी लिखवा कर अपने फैसले के साथ लगवा दिया। यह सब श्री प्रभु जी की करुणा कृपा द्वारा सम्भव हो सका।

इस रविवार के प्रभु सत्संग में अनेक भक्तों को भिन्न-भिन्न प्रकार के अनुभव होते रहे जैसे प्रिंसिपल श्याम सुन्दर जी को प्रभु चित्र में श्री प्रभु जी के स्वयम् विराजमान होने के अनुभव द्वारा ऐसा लगता रहा कि श्री प्रभु जी अपनी गर्दन को घुमा घुमा कर भक्तों को निहार रहे हैं। पंजाब यूनिवर्सिटी के इंगलिश विभाग के प्रो० भटारा जी को समाधिस्थ मनोरमा जी की आंखें बन्द उन के पास से जाते हुए केवल उन के पाओं द्वारा उन्हें छू जाने मात्र से शरीर में सनसनी, मन के भीतर प्रभु प्यार का हुलार और आंखों से आंसुओं का चलना आरम्भ हो गया। कई भक्तों को भगवान श्री कृष्ण जी के ध्यान में दर्शन हुए।

श्री प्रभु जी का मनोरमा जी द्वारा खाना खाना (ई सन् 1977) :-

एक दिन रविवार के सत्संग के बाद रात को अनुपम बेटी सैक्टर-22 के रसोई घर में रोटियां बना रही थी और उस की मम्मी जी (मनोरमा) खा रहीं थी। जो आटे का डिब्बा भर कर सब की रोटियों के लिए था जब उस सारे आटे की रोटियां मनोरमा समाप्त करने वाली थी तो बेटी अनुपम ने मुझे बुला कर कहा ''डैडी जी! आप आटा एक डिब्बा और कर दो क्योंकि मम्मी जी अभी खाना खा रही हैं।'''रघुनन्दन' ने फिर पूरा डिब्बा भर कर आटा तैयार कर दिया। मनोरमा जब दूसरी बार भी उस डिब्बे के आटे को खत्म करने वाली थी तो बेटी अनुपम ने

मुझे फिर बुला कर कहा कि ''डैडी जी ! आज तो कमाल हो गया। मम्मी जी की तो भूख खत्म ही नहीं हो रही।'' 'रघुनन्दन' ने जवाब दिया कि ''बेटी ! तू परेशान क्यों हो रही है। यह तुम्हारी मम्मी के रूप में स्वयम् श्री प्रभु जी ही प्रेम से तुम्हारे हाथों से रोटी बनवा कर भोग लगा रहे हैं। अच्छा अगर तुम्हें मेरी बात पर विश्वास नहीं हो रहा तो ला एक रोटी डैडी बेल कर दे देते हैं उसे अपनी मम्मी जी को खिला देना''। अनुपम ने आटे के एक पेड़े को मुझे बेलने के लिए दिया। 'रघुनन्दन' ने श्री प्रभु जी का ध्यान कर रोटी को बेल कर उस को तवे पर डाल कर अनुपम बेटी से कहा कि बेटी अब यह रोटी फुलाकर अपनी मम्मी जी को खिला देना। जब अनुपम ने वह रोटी अपनी मम्मी जी को खाने के लिए दी तो उसे खाकर मनोरमा जी का पेट भर गया तो उन्होंने अनुपम बेटी को और रोटी लेने से मना कर दिया। यह कैसी करुणा कृपा लीला है श्री प्रभु जी की। ऐसे ही भक्त शिरोमणि आनन्द मईं माँ के रूप में श्री कृष्ण जी ने 73 रोटियां खाई थी। प्रभु भाव के भुखे हैं, रोटिओं के नहीं।

मनोरमा के मासी जी को भगवान कृष्ण के दर्शन और अधरंग रोग से निजात :-

मनोरमा के मासी जी काफी वृद्ध थे फिर भी वह अपने घर सैक्टर-21 से हर रविवार के सत्संग में अवश्य आते थे। उन को बाद में जब अधरंग हो गया तो उन का रविवार के सत्संग में आना मुश्किल हो गया। उन्होंने अपने बेटे हरबंस लाल सूद द्वारा, उन को रविवार सत्संग में भेज कर 401 घर में आए सब भक्त समाज को प्रार्थना की कि रविवार के इलावा किसी और दिन जब उन्हें सुविधा हो तो उन के घर में प्रभु जी का सत्संग करने की कृपा करें क्योंकि वह अधरंग के कारण आप सब के पास रविवार सत्संग में आ नही सकतीं। सारे भक्त समाज ने स्वीकृति प्रदान कर दी तो श्री मदन लाल मढ़ार जी ने श्री हरबंस लाल जी को सत्संग का दिन और समय भक्त समाज की सहमति से बता दिया।

सब भक्तगण प्रभु जी के नियमों को ध्यान में रखकर निश्चित स्थान, समय और तिथी पर प्रभु जी का आरती पूजन कर सत्संग करने लगे। मासी जी श्री चन्द्रमोहन जी महाराज द्वारा दीक्षित थे। उन्होंने अपने घर में श्री प्रभु जी और भगवान श्री कृष्ण जी के स्वरूपों को फूलों से सजाया हुआ था। आरती के बाद मनोरमा जी समाधिस्थ हो गईं। कई भक्तों को वहाँ पर भगवान श्री कृष्ण जी के बाल रूप में चलते हुऐं के दर्शन हुए। मासी जी को श्री प्रभु चरणों से समाधिस्थ मनोरमा जी द्वारा पुष्प प्रशाद मिला। प्रभु प्रशाद लेने के बाद मासी जी का अधरंग रोग ठीक होने लगा और कुछ दिनों में वह ठीक होकर श्री प्रभु जी के रविवार सत्संग में अपनी हाज़री लगवा कर दूसरे दिन अपने बड़े बेटे के पास देहली में जा कर रहने लगीं। यह कैसी कृपा है प्रभु की।

प्रभु कृपा से एक नये भजन की प्राप्ति :- 'रघुनन्दन' एक दिन अपने साईकल पर सैक्टर-22 वाले घर से जब क्रिकेट स्टेडियम के पास से होता हुआ कालेज जा रहा था तो अचानक उस के मन में एक भजन गुनगुनाने लगा :-

''जितना प्यार मिला मुझे प्रभु जी से। उतना प्यार कहीं भी मैं पा न सका।।''

'रघुनन्दन' उसे अपने कालेज के रजिस्टर पर वहीं लिखकर गुनगुनाता हुआ कालेज पहुँच गया। घर आकर जब वह लाईन मनोरमा को सुनाईं तो उस ने कहा कि इस भजन की और लाईन कहाँ हैं? मेरे बताने पर कि इन लाईन वाला भजन कभी भी कहीं से भी आज तक सुना नही है। यह लाईन कालेज जाते हुए दिमाग में घूम रहीं थी जो रजिस्टर के अन्दर नोट कर ली थी। अगले रविवार के सत्संग के बाद रात का खाना बनाते हुए मनोरमा ने मुझे रसोई घर से आवाज देकर अपने पास बुलाया और मुझे एक पेन और कागज़ उसे देने को कहा और बताया कि आज के सत्संग में भगवान श्री कृष्ण जी ने मुझे एक भजन गा कर सुनाया था जो अब उस के दिमाग में चक्कर लगा रहा है। वह भजन उसी लाईन से शुरु होकर अपने पूरे स्वरूप में आ गया जिसे भगवान श्री कृष्ण जी ने गा कर सुनाया था। मनोरमा ने वह सारे का सारा भजन उस कागज पर लिख दिया जो इस प्रकार से है:-

जितना प्यार मिला मुझ को प्रभु जी से, उतना प्यार कहीं भी मैं पा न सका।

दाता पा ना सका, सत्गुरु पा न सका।।

तेरे प्यार में सब कुछ भूल गया, दुनियां वाले मुझे दीवाना कहें।

इस दीवानगी का मेरे प्रभु, हरदम जाम मुझे तू पिलाता रहे।। जितना प्यार मिला............

तेरे प्यार से बढ़ कर कुछ भी नहीं, दुनियाँ वालों से मुझ को वास्ता क्या।

इस दुनियादारी से मुझ को प्रभु, हरदम दूर मुझे तू हटाता रहे।। जितना प्यार मिला..........

दुनियां मारे मुझे ताने देती रहे, नशा प्यार का दूर करना चाहे अगर।

ऐसी मस्ती में मुझ को रखना प्रभु, नशा प्यार का और भी चढ़ता रहे।। जितना प्यार..

इतना पागल बनूं सब की नजरों में, आखिर मुझ को मुझ पर छोड़ ही दें।

इतनी आरजू है मेरी मेरे प्रभु, हरदम चरणों में अपने रखना मुझे। जितना प्यार.....

मेरी दीवानगी देख मेरे प्रभु, कहीं तुम भी मुझ को छोड़ना ना।

मुझ को आसरा है केवल तेरा प्रभु, हरदम आसरा मुझ को देते रहो।। जितना प्यार.....

श्री प्रभुकृपा द्वारा बीमारी के संस्कार का निपटारा:- एक दिन 'रघुनन्दन' को तेज़ बुखार हो गया। दवाई लेने पर भी जब दो तीन दिन बुखार नही उतरा तो डा० ने मलेरीया टैस्ट करवाने को कहा। टैस्ट की रिपोर्ट में मलेरीया पोजटीव आया तो डाक्टर साहिब ने गोरमिंट डिस्पेन्सरी सैक्टर-21 चण्डीगढ़ से अपनी रिपोर्ट दिखा कर मलेरीया फीवर की दवाई लेने के लिए कहा। उन दिनों मलेरीया फीवर की दवाई केवल वहां से ही मिलती थी। जब वहाँ जाकर अपने खून की रिपोर्ट दिखाई तो उन्होंने मेरा नाम, पता, आयु आदि अपने रिकार्ड में दर्ज

करके मुझे दवाई दे दी। वह दवाई पाँच दिन खानी थी। उसी दिन से दवाई उन के कहने के अनुसार खानी आरम्भ कर दी। वह दवाई को केवल दो दिन खाने के बाद मेरी भूख, प्यास बिल्कुल समाप्त हो गई और बुखार को कोई फर्क नहीं पड़ा। मेरी कमज़ोरी हर रोज़ बढ़ रही थी। मुझे समझ में ही नही आ रहा था कि अब क्या किया जाए। मन में आया कि होशियारपुर श्री रघुवीर जी के पास जा कर उन को बता दूँ फिर जैसा भी वह कहें वैसा ही करूँ। शरीर की कमज़ोरी इतनी अधिक थी कि मनोरमा ने मेरा वहां जाना ठीक नही समझा। मनोरमा ने श्री हरबंस लाल मामा जी को बुलाकर उन्हें सारा समझा कर होशियारपुर श्री रघुवीर जी को मेरी हालत बताने और अगर हो सके तो उन को अपने साथ चण्डीगढ़ घर लाने की प्रार्थना करने को कहा। उन्होंने वहाँ जा कर श्री रघुवीर जी को मेरा सारा हाल बता दिया। श्री रघुवीर जी मामा जी के साथ होशियारपुर से बस में अभी रोपड़ ही पहुंचे होंगे तो मुझे इतने दिनों में पहली बार भूख लगी तो मनोरमा से दूध का गिलास लेकर पी लिया। जब श्री रघुवीर जी घर आये तो उन्होंने मुझे हाथ लगा कर देखा और मनोरमा से कहा कि ''सूद साहब को तो कोई बुखार ही नहीं है। इन का मुझे मिलने को दिल करता था इस लिए इन्होंने बुखार का बहाना बनाया है।'' इस के बाद मुझे श्री रघुवीर जी ने कहा कि ''सूद साहब ! चलो अभी सरदारनी जसवन्त कौर के घर जाना है और सब ने खाना भी वहीं खाना है। यह मेरा तखतपोश छोड़ दो यह मेरे लिए है और तैयार हो जाओ।'' मामा जी अपने घर चले गए। जब सब तैयार हो गए तो श्री रघुवीर जी ने कहा कि चलो सारे सैक्टर-23 वाली सरदारनी के घर पैदल ही चलेंगे। मनोरमा ने कहा कि प्रो० सूद इतने दिनों से बीमार हैं हम इन के लिए रिक्शा कर देते हैं। श्री रघुवीर जी ने कहा कि सूद साहब बिल्कुल ठीक हैं इन्हें कोई कमजोरी भी नहीं है यह हमारे साथ पैदल ही चलेंगे। 'रघुनन्दन' ने कहा कि वह रिक्शा से नहीं आप सब के साथ पैदल ही जाएगा।

जब हम सारे सरदारनी जसवन्त कौर के घर पहुँचे तो वह अपने बाहर के दरवाज़े पर ही हमें बैठे मिले। उन्होंने कहा कि ''आज सुबह ध्यान में उन्हें गुरु नानक देव जी के दर्शन हुए और गुरु नानक जी ने कहा था कि आज वह घर आ रहे हैं और आकर खाना खाएंगे। इस लिए वह आप सब का पहले से ही इंतजार कर रहीं थी।'' इस पर श्री रघुवीर जी ने जसवन्त कौर से पूछा कि ''आप ने खाने में बनाया क्या है?'' उन्होंने कहा कि राजमांह और आलू बड़ीयां बनाई हैं। मनोरमा ने कहा कि प्रो० सूद ने तो कई दिनों से रोटी भी नहीं खाई। इन के लिए तो यह राजमांह और आलू बड़ीयां भारी रहेंगी। सरदारणी जसवन्त कौर ने कहा कि घीया आदि अभी बनवा देती हूँ। श्री रघुवीर जी ने कहा कि ''सूद साहब बिल्कुल ठीक हैं यह हमारे साथ राजमांह, आलू बड़ी की सब्ज़ी परोंठों के साथ खायेंगे। सब ने राजमांह और आलू बड़ीयों के साथ परोंठे खाए। मुझे वहां इतनी भूख लगी कि 'रघुनन्दन' 6,7 परोंठे खा गया और ऐसा लगता था कि 'रघुनन्दन' कभी बीमार ही नही हुआ। फिर वहाँ से हम

सब घर वापिस आ गए। क्या करुणा कृपा लीला है प्रभु की।

श्री रघुवीर जी का आधी रात में बेटी अनुपम द्वारा सिगरेट सैक्टर-22 चौंक से मंगवानाः-

ई सन् 1973 में रात के 12 बजे श्री रघुवीर जी ने बेटी अनुपम को पैसे देकर कहा कि बेटी सैक्टर-22 मार्कीट के चौंक से उन के लिए सिगरेट की डिब्बी लेकर आओ। श्री प्रभु जी की बेटी अनुपम फुदकती और भागती हुई सैक्टर-22 के चौंक से श्री रघुवीर जी के लिए सिगरेट की डिब्बी लेकर घर आ गई। अनुपम के जाने के बाद मनोरमा ने मुझे कहा कि आप को इतनी भी समझ नहीं कि रात के समय बेटी को सैक्टर-22 के चौंक पर जहां शराबी बैठे रहते हैं वहाँ उसे जाने दिया। इस पर श्री रघुवीर जी ने जवाब दिया कि ''मनोरमा किसी की क्या मजाल जो श्री प्रभु जी की बेटी की ओर आंख उठा कर भी देख सके। तुम चिन्ता न करो।'' इतने में अनुपम ने आकर सिगरेट की डिब्बी अंकल जी को दे दी।

पंचकूला में मकान बनाने की आज्ञाः-

ई सन् 1973 के आरम्भ में श्री रघवीर जी ने घर चण्डीगढ़ में आकर कहा कि ''सूद साहब! पंचकूला में रिहायशी फ्लेट निकले हैं। आप हुडा आफिस में जाकर अपने मकान के लिए फार्म भर कर आओ। अगर आप न गए तो वह स्वयम् जा कर वहां फार्म भर आएंगे।'' उन की आज्ञा आधीन 'रघुनन्दन' ने हुडा के आफिस में जाकर 'दस मरला रिहायशी पलोट सैक्टर-17' के लिए फार्म भर दिया। पंचकूला के इसी वर्ष में निकले पहले लौट में ही पलोट नं० 281/17 'रघुनन्दन' के नाम पर निकल आया। उस समय मौके पर सारे खेत ही खेत थे फिर वहां पर डरेनेज तैयार हुईं और सड़कें बनी। पानी के लिए ट्यिूबैल लगा कर उस की नालियां डाली गई। ई सन् 1988 में सैक्टरों के पलोट काटे गए तब अगले साल हुडा द्वारा पलोटों का कब्जा दिया गया। तब श्री रघुवीर जी ने वहां मकान बनाने की आज्ञा दी तो ई सन् 1989 में नक्शा पास करवा कर मकान की छत तक का ढांचा तैयार हो गया। उस समय पंजाब में खालिस्तान की लहर चल रही थी तो उस समय वहाँ कोई भी जमीन खरीद नहीं रहा था। हमारे पास जो पैसे थे वह मकान की छत तक का ढाँचा बनाने में लग गए और 1988 में मेरी रिटायरमैंट भी हो चुकी थी। मकान का ढाँचा बनाने से पहले श्री रघुवीर जी ने भूमि पूजन करवा कर मकान को बनवाना आरम्भ किया था और हमारी वेन्ती पर इस मकान की छत डलवाने भी उन्होंने स्वयम् होशियारपुर से आना था। श्री रघुवीर जी के आने से पहले होशियारपुर से सूद प्रोपर्टी डीलर मुझे मिलने आए और उन्होंने होशियारपुर की जमीन के कुछ प्लाट लोगों को बेचकर 50,000/- रूपये अडवांस के रूप में मुझे दिए। ठेकेदार राम गोपाल ने अगले दिन से मकान की छत के लिए सरीये आदि डलवाने का काम आरम्भ करवा दिया। इस सूद परिवार के करता धरता श्री रघुवीर जी होशियारपुर से आए और उन्होंने अपने सामने इस मकान की छत को डलवाया। तब

श्री प्रभु जी की अपार कुरुणा कृपा से इस मकान को बनाने में जैसे जैसे पैसों की जरूरत पड़ती गई उस के अनुसार होशियारपुर में जमीन के प्लाट बिकते चले गए। फिर जैसे ही मकान पूरा बन कर तैयार हो गया तो वहाँ जमीन बिकनी भी बन्द हो गई। क्या लीला है प्रभु जी की।

श्री प्रभु जी द्वारा बेटी अनुपम की शंका का समाधान :-

ई सन् 1986 के रविवार सत्संग के बाद अनुपम बेटी ने कहा कि डैडी जी! उसके मन में एक शंका कई दिनों से चल रही है कि जब श्री प्रभु जी के गृहस्थी स्वरूप और उन के जटाधारी स्वरूप की शक्लें आपस में मिलती नही हैं तो हम दोनो को एक कैसे माने? 'रघुनन्दन' ने कहा कि मेरी अब की शक्ल और शादी से पहले की शक्ल क्या आपस में मिलती हैं। उस ने कहा कि डैडी जी कुछ न कुछ तो समानता अवश्य रहता है लेकिन श्री प्रभु जी की शक्लें तो बिल्कुल भिन्न हैं। अब इस शंका का निवारण श्री प्रभु जी के अतिरिक्त सम्भव ही नही था। तो श्री प्रभु जी महाराज ने अपनी कृपा से अपनी बेटी अनुपम को ध्यानस्थ कर दिया। 'रघुनन्दन' ने देखा कि अनुपम की भ्रसरिका बड़ी तेजी से चलने लगी। उस का त्राटक लगा हुआ था और आंखों से आंसुओं की धाराएं बह रही थीं। वह 'त्राटक समाधि' में श्री प्रभु जी की ओर मुख किए काफी देर तक बैठी रही। जब उस की समाधि खुली तो अनुपम बेटी ने बताया कि श्री प्रभु जी महाराज ने अपने गृहस्थी स्वरूप की गोद में उसे लिटा कर उसे बहुत प्यार किया। इस के बाद श्री प्रभु जी ने उसे अपने मुख पर देखने के लिए कहा। उस के देखते देखते श्री प्रभु जी ने अपने गृहस्थी स्वरूप को अपने जटाधारी स्वरूप में बदल दिया। ऐसे श्री प्रभु जी ने कई बार अपना स्वरूप बदला और अपनी बेटी अनुपम को अपनी गोद में लिए हुए पूछा कि कहो बेटी हमारा गृहस्थी रूप और जटाधारी स्वरूप एक हैं या इन दोनों में फर्क है? क्या हमारे दोनों स्वरूपों की शक्ल एक जैसी नही है? इस पर अनुपम बेटी ने कहा कि प्रभु जी आप के दोनों स्वरूपों की शक्ल एक जैसी है। आप के चहरे की शकल बिल्कुल भी भिन्न नही हैं। इस के बाद श्री प्रभु जी ने अनुपम को प्यार दे कर उस की शंका का सदा के लिए समाधान कर दिया। यह कैसी करुणा कृपा है श्री प्रभु जी की अपने बच्चों पर। धन्य हैं ऐसे कृपालु प्रभु।

रेल द्वारा भारत दर्शन यात्रा (21st मई 1987 से 20th जुलाई 1987):-

'रघुनन्दन' ने भारत दर्शन यात्रा का आरम्भ चण्डीगढ़ से करके कन्या कुमारी तक की भिन्न-भिन्न गाड़ियों द्वारा, जुदा-जुदा स्थानों पर तारीख अनुसार रुक कर और फिर वहां से चलने के प्रोग्राम के अनुसार बना कर रेल भवन नई देहली से इसे मंजूर करवा कर और फिर 4 seater cupa (1st class) के सर्कूलर टिकट की अग्रिम रिर्जेवशन के साथ अपनी फैमिली का रेलवे टिकट बनवा लिया।

21st मई 1987 को हम अपनी दोनो बेटियों के साथ इस कूपे द्वारा चण्डीगढ़ से सहारनपुर, लखनऊ,

जलगायों (अजन्ता अलोरा केवज़), बोम्बे (बीच), पूना (Vaswani Ashram), हैदराबाद (Musiums & Kings Palaces), तिरूपतीवाला जी (मंदिर), Bangalore (Best City & climate), Mysore (gardens), सेलम (Steel utensils), कोयम्बेटूर (Ships), ट्रिवेन्डरम् (Joined with Dr. Singal's family of Chandigarh), कन्याकुमारी (Vivekanand Rock Memorial & Sun set), मदुराई (Bigest Hindu Temple), रामेश्वरम् (Lord Shiva's temple, moving of train on suspension bridge in sea water), मद्रास (Beautiful city), पुरी (जगननाथ रथ यात्रा fair), कलकत्ता (good sightseeing), वाराणसी (Vishwanath temple), आगरा (Fort & Fathepur Sikri, Taj Mahal), जयपुर (King's Palaces, Musliums), दिल्ली (Mrs. Parents) से चंडगीढ़ तक के भारत यात्रा के इन सब स्थानों पर प्रोग्राम अनुसार ठहर कर उसे लोकल बस अथवा टैक्सी द्वारा देखते हुए वापिस 20th जुलाई को राज़ी खुशी अपने घर आ गए।

भारत दर्शन यात्रा में श्री प्रभु जी की करुणा कृपा लीलाएँ :-

यह यात्रा भी जीवन की यादगार बने इस में भी कृपालु श्री प्रभु जी की लीलायें देखने को मिलीं।

1. पुरी से कलकत्ते जाने वाली गाड़ी में मनोरमा की रक्षा :- हम लोग 4th July, 87 की सुबह मदरास की गाड़ी द्वारा पुरी के रेलवे स्टेशन पर पहुंचे। उस दिन पुरी में बड़ा भारी मेला लगा हुआ था और वहां के सारे होटल बुक हो चुके थे। इस लिए हम लोग सामान को स्टेशन के पहली कलास बेटीग रूम में रख कर, तैयार होकर और नाश्ता करके पुरी नगर को देखने निकल पड़े। पुरी नगर में लगी मेले की दुकानों को देखते हुए इस मेले की रौनक को शाम तक देखा, खाना खाया और बेटीग रूम के अथिति गृह में दो दिन रुके। अगले दिन वहाँ पर श्री जगननाथ जी की रथ यात्रा थी। इन रथों के ऊपर भगवान कृष्ण व बलराम जी आदि के मंदिर बने हुए थे। इन लकड़ी के रथों को बड़े बड़े रससों द्वारा वहाँ के लोग बड़ी श्रद्धा और प्रेम से भजन गाते हुए खींच रहे थे। रथ यात्रा देखने के बाद हम सब अथिति गृह में आकर सो गए। अगले दिन 6th July, 87 को अपनी कलकत्ते जाने वाली गाड़ी के रिजर्व कूपे के बाहर कोरीडोर में बड़ी मुश्किल से पहुंचे तो देखा कि कूपा लोगों से भरा पड़ा था। हमें कोरीडोर में सामान रखकर वहाँ केवल खड़े होने की जगह मिली। मेले के कारण लोग गाड़ी की छत पर भी बैठे थे। मनोरमा के बाजू में सोने की चूड़ियां थी। जब गाड़ी चल पड़ी और यह अभी बाहरी सिगनल के पास थी तो इस तेज चलती हुई गाड़ी के बाहर खड़े किसी चोर ने मनोरमा के खिड़की से बाहर निकले चूड़ियों वाले हाथ को काटने की कोशिश की। जैसे ही उस ने अपने तेज़ औज़ार से प्रहार करने के लिए अपना सिर पीछे को झुकाया तो उस का सिर बाहरी सिगनल के पोल से टकरा गया और वह चोर चलती गाड़ी से नीचे गिर गया। गाड़ी के बाहर बिना टिकट के लटके हुए लोगों ने उस चोर को गिरते हुए देखा मगर वह चुप रहे। सारे लोग बातें कर रहे थे कि

वह मर गया। श्री प्रभु कृपा से मनोरमा बाल बाल बची और यह ग्रह टल गया नहीं तो उस चोर के पुलिस केस में हमें पुरी के चक्कर काटने पड़ते।

2. वाराणसी से आगरा जाने वाली गाड़ी की घटना :- जब हमारी गाड़ी वाराणसी स्टेशन से चलने लगी तो एक मुस्लमान ने आकर प्रार्थना की कि उस की बेटी ने कई दिनों से कुछ नही खाया सो इस की तबीयत ठीक नही है। वह इस का ईलाज करवाने आगरे के पागलों के अस्पताल में डाक्टर को दिखाना चाहता है। मगर लोगों की भीड़ के कारण उसे कहीं भी इस गाड़ी में जगह नहीं मिली। अगर आप उन्हें यहां अपने पास बैठने की इज़ाजत देदें तो वह आगरे होसपिटल में इसे दिखा सकेगा। हमने उन्हें अपने साथ बैठा लिया। गाड़ी के चलने के बाद जब श्री प्रभु जी की आरती की तो मनोरमा जी वहाँ ध्यानस्थ हो गई। मनोरमा जी ने ध्यान में एक मुस्लमान के सूक्ष्म शरीर को गाड़ी से बाहर इस के गेट के हैन्डल को पकड़े हुए और मुँह में पान चबाते हुए खड़े देखा। फिर उसे यह कहते हुए सुना कि उसे गाड़ी के इस डिब्बे में अन्दर जाने की इजाज़त नही है इस लिए लड़की के बाहर आने का इंतजार कर रहा हूँ। मनोरमा जी का ध्यान खुलने के बाद सब को प्रभु प्रसाद मिला। उस लड़की ने प्रसाद खाया तो उस का बाप बड़ा खुश हुआ कि इतने दिनों के बाद लड़की ने कुछ खाकर उस से बात की। मनोरमा ने फिर लड़की को खाना खिलाया। लड़की ने अपनी मम्मी जान का हाल पूछा। मनोरमा ने उस के बाप को बताया कि इस लड़की को भूत व्याधा है इस लिए इस को पागलों के अस्पताल न लेकर जाएं। हो सके तो संवाई आश्रम में या किसी अच्छे भूत निकालने वाले मौलवी के पास ले जायें तो यह बिल्कुल ठीक हो जाएगी। यह कैसी कृपा है प्रभु की।

श्री प्रभु जी की बेटी अनुपम का शगुन संस्कार :- ई सन् 1987 के अक्टूबर मास में हम दोनों, दोनों बेटियों के साथ होशियारपुर श्री कशमीरी लाल जी के घर गये। दूसरे दिन श्री रघुवीर जी को मिलने उन के घर चौंक सराजां गये तो उन्होंने अपनी बेटी अनुपम को गोरमिंट कालेज में प्रोफैसर लगने पर बधाई दी। फिर उन्होंने मुझे आज्ञा दी कि ''सूद साहब! अब आप धीरेन्द्र बेटे की खतोखितावत बन्द करके हमारी बेटी हनी के लिए पेपर में मेटरीमोनीयल देकर उसे परस्यू करो।'' वहाँ से जब हम चण्डीगढ़ आए तो श्री रघुवीर जी की आज्ञा अनुसार अनुपम (हनी) बेटी का मेटरीमोनीयल हिन्दोस्तान टाइम्ज़ में दे दिया। इन के दस जवाब आये। इन दस नामों की लिस्ट बना कर तथा सारी लिखत-पढ़त लेकर 'रघुनन्दन' श्री रघुवीर जी के पास उन की दुकान मॉडल टाऊन होशियारपुर गया। उन्होंने एक नज़र नामों की लिस्ट पर मार कर अपने पैन से अनिल चौधरी के नाम पर निशान लगा कर मुझे कहा कि ''सूद साहब! हमारी बेटी अनुपम (हनी) कि शादी अनिल चौधरी के साथ होगी। अब आप चण्डीगढ़ जा कर, देहली में चौधरी साहिब को उन के पत्र का जवाब दे दें।'' 'रघुनन्दन' ने

चन्ड़ीगढ आकर चौधरी साहिब को उन के पत्र का जवाब भेज दिया। बाद में उन्होंने अपने रिश्तेदार नासा साहिब को मुझे 401 सैक्टर-22 में मिलने को कहा। जब नासा साहिब घर में आये तो 'रघुनन्दन' कालेज में था इस लिए वह अनुपम बेटी को मिल कर चले गए और कह गए कि वह फिर कभी प्रो० सूद को मिल लेंगे। बात आगे बढ़ी। जब देहली से चौधरी साहिब अपनी फैमिली के साथ चण्डीगढ़ अनुपम को देखने आए तो श्री रघुवीर जी के साथ बातचीत होने के बाद शगुन देने का दिन निश्चित हो गया। चौधरी साहिब ने अपने बेटे अनिल की शादी की दो शर्तें रखीं थी- एक यह कि अनुपम गोरमिंट कालेज की प्रोफैसरशिप से इस्तीफा दे दे और दूसरी कि हम दहेज में कुछ नहीं लेंगे क्योंकि ईश्वर का दिया हुआ सब कुछ हमारे पास है। इस पर श्री रघुवीर जी ने चौधरी साहिब को अश्वासन दिया और हमें शगुन के बारे में सारा समझा कर अपने जरूरी काम के लिए होशियारपुर चले गए। 5 जनरवरी ई सन् 1988 के निश्चित समय पर 401/22 सैक्टर चण्डीगढ़ में विराजमान श्री प्रभु चरणों में बेटी अनुपम का शगुन संस्कार बड़े प्यार से सम्पन्न हुआ।

श्री प्रभु जी की बेटी अनुपम का शुभ विवाह :-

चौधरी श्री कृष्णदेव जी के इकलौते बेटे अनिल चौधरी IRSE अपनी ट्रेनिंग के बाद देहली रेलवे हाऊस में काम करते थे और अपने माता-पिता जी के साथ सफदरजंग एन्कलेव में रहते थे। बेटी अनुपम की अगूँठी सैरेमनी होने के बाद मुझे चौधरी साहिब ने शादी का प्रोग्राम निश्चित करने के लिए एक दो बार नासा साहिब के द्वारा देहली बुलाया। 'रघुनन्दन' ने नासा साहिब को जवाब दिया कि ''हमारी ओर से श्री रघुवीर जी इस सूद परिवार के करता धरता हैं वह ही शादी का सारा प्रोग्राम चौधरी साहिब के घर देहली जा कर उन की इच्छा अनुसार निश्चित करेंगे। आप चिंता न करें।'' फिर श्री रघुवीर जी को सारी बात फोन पर बता दी तो उन्होंने कहा कि ''सूद साहब! उन्हें जब श्री प्रभु जी आज्ञा देंगे तभी वे चौधरी साहिब के घर देहली जाएंगे।''

चौधरी साहिब ने बेटे अनिल का विवाह जल्दी करने का मन बना रखा था इस कारण उन को लग रहा था कि अगर देहली के सारे अच्छे होटल लोगों ने विवाह आदि करने के लिए बुक करवा लिए तो यह शादी कैसे होगी? इसी चिंता के कारण उन्होंने नासा साहिब के द्वारा फिर कहलवा कर भेजा कि ''प्रो० सूद ! अगर आप का विचार यहां शादी करने का नहीं है तो आप एक दो दिन के अन्दर अवश्य उन्हें बता दें ताकि वह इस शादी के बारे में फिर चिन्ता न करें।'' 'रघुनन्दन' ने नासा साहिब से कहा कि ''श्री रघुवीर जी से मेरी बात हो चुकी है वह ठीक समय पर देहली जा कर विवाह का सारा प्रोग्राम चौधरी साहिब के घर उन की इच्छा अनुसार निश्चित कर देंगे। आप ने आज ही फोन करके यह बता देना और चौधरी साहिब को हमारी ओर से नमस्ते कहना। वह बिल्कुल चिंता न करें प्रभु कृपा से सब कार्य ठीक हो जाएगा। कैसी कृपा लीला है श्री प्रभु जी की कि उसी रात श्री

रघुवीर जी चण्डीगढ़ घर आ गए।

अनुपम बेटी ने पहले ही अपनी रिंग सैरेमनी के बाद जब कालेज के प्रिंसिपल और स्टाफ को पार्टी दी थी तो वहाँ सब ने उसे बधाई देने के बाद सलाह दी कि वह कालेज से छुट्टी ले ले। मगर कालेज की इस गोरमिंट नैकरी से इस्तीफा न दे। उस के मित्रों और रिश्तेदारों ने भी ऐसा ही कहा था मगर श्री प्रभु जी की बेटी ने अपनी आत्मा की आवाज़ के अनुसार अपनी पक्की गोरमिंट नौकरी से अगले दिन ही कालेज में जाकर अपने प्रिंसिपल को अपना इस्तीफा दे दिया था।

फिर श्री रघुवीर जी को घर आकर जब उन की बेटी के कालेज सर्विस से इस्तीफा देने का पता चला तो वह बहुत खुश हुए क्योंकि उन्होंने ही चौधरी साहिब को उन की इस शर्त का आश्वासन दिया था। उन्होंने अपने बेटे धीरेन्द्र और बेटी अनुपम को अपने साथ देहली जाने के लिए जल्दी तैयार होने को कहा। श्री रघुवीर जी ने खाना खाया और अपने दोनों बच्चों को अपने साथ रात की बस से देहली ले गए।

अगले दिन सुबह देहली में अपनी बेटी अनुपम को उस के नाना जी के घर छोड़ कर, अपने बेटे धीरेन्द्र के साथ चौधरी साहिब के घर में उन को मिल कर, वहाँ शादी की तारीख 13 फरवरी, 1988 निश्चित करके, होटल समराट (फाईव स्टार अशोक होटल की ब्रांच) को शादी के लिए बुक कर दिया। फिर चौधरी साहिब के साथ उन के घर आकर शादी का शेष सारा प्रोग्राम निश्चित कर लिया। श्री रघुवीर जी को खाना खिलाने के लिए चौधरी साहिब ने बड़ा जोर लगाया मगर उन्होंने अपनी बेटी के ससुराल से खाना खाने को मना कर दिया तो चौधरी साहिब ने उनका खाना बाहर से उन की आज्ञानुसार मंगवा कर खिला दिया। उस की जब पेमंटे श्री रघुवीर जी ने की तो चौधरी साहिब ने पूछा कि क्या प्रो० सूद भी हमारे घर खाना नहीं खाएंगे तो श्री रघुवीर जी ने कहा कि वह यहां खाना खा सकते हैं उन को कोई मनाही नहीं।

इस के बाद श्री रघुवीर जी धीरन्द्र बेटे के साथ अपनी बेटी अनुपम को लेने करोल बाग चले गए। देहली वाले पिता जी ने श्री रघुवीर जी का अपने घर में स्वागत किया और उन को बेटी अनुपम की शादी देहली में करने के लिए बधाई दी और यह शुभ कार्य उस के ही ननिहाल से सम्पन्न करने की प्रार्थना की। श्री रघुवीर जी ने कहा कि अनुपम बेटी की शादी के लिए 5 सितारा होटल समराट (अशोक होटल की ब्रांच) बुक हो चुका है। इस के विवाह से पहले की सारी रस्में आप की इच्छा अनुसार वह यहीं आकर करेंगे। फिर अपनी बेटी और बेटे धीरेन्द्र को लेकर अनुपम के कपड़ों के नाप आदि दिलवाने के लिए श्रीमती और श्री चौधरी साहिब के पास बाजार में मिलने के पते पर चले गए। वहाँ पर मिलने के बाद चौधरी साहिब ने अनुपम बेटी से पूछा कि ''बेटी! क्या आप ने गोरमिंट सर्विस से रिजाइन कर दिया?'' इस पर जब अनुपम ने जवाब दिया कि उस ने तो रिंग सैरेमनी के अगले

दिन ही सर्विस से रिजाइन कर दिया था तो चौधरी साहिब ने अनुपम बेटी को बहुत प्यार किया और अपना हार्दिक आशीर्वाद दिया। बाज़ार का सारा काम समाप्त करके उसी दिन श्री रघुवीर जी चौधरी साहिब से अलविदा लेकर अपने दोनों बच्चों के साथ चण्डीगढ़ रात की बस द्वारा पहुंच गये। श्री रघुवीर जी रात चण्डीगढ़ रहे और अगले दिन सुबह होशियारपुर चले गए।

अपनी अनुपम बेटी के विवाह से तीन दिन पहले श्री रघुवीर जी चण्डीगढ़ आ गए। देहली जाने से पहले वहाँ घर में श्री प्रभु चरणों में सत्संग हुआ और श्री रघुवीर जी की आज्ञानुसार श्री प्रभु जी के गृहस्थी स्वरूप को उन की बेटी अनुपम को दे दिया गया। फिर श्री रघुवीर जी देहली वाले पिता जी की इच्छा अनुसार हम सब को साथ लेकर करोलबाग घर देहली में ठहरे। वहां अनुपम बेटी के विवाह से पहले की सारी रस्में श्री रघुवीर जी की देखरेख में बड़ी हंसी खुशी में सम्पन्न हुईं। चण्डीगढ़ कालेज से प्रो० प्रह्लाद और उन की धर्मपत्नी शशी अग्रवाल भी हमारे साथ वहां रहे।

वहाँ बारात की रिसैंपशन से पहले श्री रघुवीर जी मनोरमा के पिता जी, भाईयों, भाभियों तथा अन्य रिश्तेदारों व मित्रों को साथ लेकर करोलबाग के घर से होटल समराट में आ गए।

श्री रघुवीर जी ने अपनी बेटी की शादी पर इस सूद परिवार के सर्वेसर्वा होने के नाते अपने सिर पर पहली बार पगड़ी धारण की और उन की पहली मिलनी चौधरी परिवार के मुखिया के साथ हुई। फिर बाद में वहाँ केवल हारों के आदान प्रदान के साथ, कई मिलनियां हुई। वादवाजों और हंसी खुशी के वातावरण में दोनों परिवारों का मिलनी और जयमाला के बाद बारात का खाना हुआ और रात को फेरे हुए। अगले दिन अनुपम बेटी का फेरा और शेष रस्में करोलबाग घर में हुई और वहां से फिर हम सब चण्डीगढ़ वापिस घर आ गए। श्री रघुवीर जी अपनी बेटी अनुपम के विवाह का सारा कार्य स्वयम् अपने हाथों से सम्पन्न करके होशियारपुर चले गए। यह सारा विवाह कार्य श्री प्रभु जी ने अपनी करुणा कृपा द्वारा सम्पन्न करवाया। आप की जय हो मेरे प्रभु।

मिस जोंजीत किमजींग का थाईलैंड से भारत आकर पंजाब यूनिवर्सिटी चण्डीगढ़ में हायर स्टडिज करना :-

मिस जोंजीत किमजींग सुपुत्री श्री हींग किमजींग अपनी ऊँच शिक्षा प्राप्त करने के लिए थाईलैंड से पंजाब यूनिवर्सिटी सैक्टर-14 चण्डीगढ़ में पहले एम. ए., फिर एम. एड करने के बाद वह यहां पर पी.एच.डी कर रहीं थी। वह पंजाब यूनिवर्सिटी की थाई स्टूडैन्टस एसोसिएशन की जनरल सैक्टरी भी थी और सैक्टर-11 के चण्डीगढ़ घर में रहती थीं।

प्रारब्ध का खेल :- ई सन् 1986 में श्री रघुवीर जी ने 'रघुनन्दन' को अपने बेटे धीरेन्द्र की शादी अमरीका,

कैनेडा अथवा आस्ट्रेलिया के किसी अच्छे सभ्य परिवार की संस्कारी, सुन्दर और अच्छी पढ़ी लिखी लड़की के साथ करने के लिए पेपर में मैटरीमोरियल द्वारा खतो खिताबत करने की आज्ञा प्रदान की तो उन की आज्ञानुसार कार्य आरम्भ हो गया और जो जवाब आते रहे उन की चर्चा श्री रघुवीर जी से होती रही।

अगले वर्ष प्रारब्ध अनुसार एक घटना घटी। बेटा धीरेन्द्र देहली से चण्डीगढ़ ए. सी. बस में आ रहा था। इसी बस में उस के साथ वाली सीट पर थाईलैंड के एक प्रोफैसर भी चण्डीगढ़ आ रहे थे। उन्होंने कुछ दिनों के लिए पंजाब यूनिवर्सिटी सैक्टर-14 में लैक्चर देने थे। वह बैंकाक से पहली बार भारत आये थे। इन दोनों की बातचीत बस में होती रही फिर धीरेन्द्र उस प्रोफैसर को अपने साथ 401/22 सैक्टर घर में ले आया। वह 10/12 दिन हमारे साथ उस घर में रहे। 'थाईलैंड स्टूडैंटस एसोसिएशन' ने उन्हें स्वागत पार्टी यूनिर्वसटी के हाल में दी। इस चाय पार्टी में वह प्रोफैसर अपने साथ धीरेन्द्र बेटे को भी ले गए। मिस जोंजीत किमजींग ने इस मीटिंगको कंडक्ट किया और बाद में थाई प्रोफैसर और धीरेन्द्र बेटे को तोहफे भी दिए। उस थाई प्रोफैसर ने HMT के इंजीनियर धीरेन्द्र बेटे को मिस जोंजीत से परिचय करवाया और मिस जोंजीत ने इन दोनों को अपने घर सैक्टर-11 में चाय पर बुलाया। थाई प्रोफैसर 10/12 दिनों के बाद बैंकाक वापिस चले गए। प्रारब्ध रूपी संस्कारों के कारण थाई प्रोफैसर के चले जाने के बादे, बेटे धीरेन्द्र और मिस जोंजीत की बातचीत आगे बढ़ी। ई सन् 1987 में गर्मियों की छुट्टियों के बाद श्री रघुवीर जी ने मुझे धीरेन्द्र बेटे की मैटरीमोरियल कौरसपोडंस बंद करके उनकी बेटी अनूपम के लिए मैटरीमोरियल कौरसपोडंस आरम्भ करने की आज्ञा प्रदान की। अगले साल ई-सन् 1988 में उन दोनों का मिलना प्यार में बदलने लगा तो धीरेन्द्र बेटे ने AIT (Bangkok) से MBA (Technology) में अडमीशन मिलने के बाद एच एम टी की अपनी नौकरी छोड़ने का मन बना लिया।

श्री प्रभु जी के बेटे धीरेन्द्र को आशीर्वाद :-

ई सन् 1989 में बेटे धीरेन्द्र ने एच.एम.टी. की नौकरी छोड़ दी और बैंकाक के AIT Institute में उसे दो साल के अपने MBA (Technology) कोर्स में दाखिला मिल गया। थाईलैंड जाने से पहले धीरेन्द्र होशियारपुर में श्री रघुवीर जी से आशीर्वाद लेने गया। श्री रघुवीर जी अपने बेटे को अपने पास आया देख बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने धीरेन्द्र को कहा कि ''बेटे! तुम खुशी खुशी बैंकाक जाओ। तुम्हें वहां पर कभी भी धन की कमी नहीं होगी। यह हमारा आशीर्वाद है।'' होशियारपुर से आकर धीरेन्द्र बेटा बैंकाक चला गया।

श्री प्रभु करुणा कृपा अवलम्वित संतुष्ट जीवन

श्री रघुवीर जी द्वारा बेटी जोंजीत किमजींग सुपुत्री श्री हींग किमजींग को प्रेम भरा आशीर्वाद :-

ई सन् 1989 में धीरेन्द्र बेटा अपने MBA (Tech) के Ist Semester के पेपर देकर बैंकाक के AIT Institute की छुट्टियों में कुछ दिनों के लिए चण्डीगढ़ आया। फिर वह श्री रघुवीर जी को मिलने होशियारपुर चला गया। श्री रघुवीर जी अपने बेटे धीरेन्द्र के साथ ही चण्डीगढ़ आ गए। अगले दिन वह 'रघुनन्दन' को लेकर अपने बेटे धीरेन्द्र के साथ मिस जोंजीत किमजींग के कमरे (सैक्टर-11 चण्डीगढ़) में गए। वहाँ श्री रघुवीर जी ने मुझे उन के सवालों का इंगलिश में ट्रांसलेट करके मिस जोंजीत किमजींग और बेटे धीरेन्द्र से पूछने की आज्ञा दी। इन दोनों के जवाब सुन कर श्री रघुवीर जी ने अपनी जेब से कुछ रुपये निकाल कर मिस जोंजीत किमजींग को शगुन के रूप में अपने आशीर्वाद सहित दिए और उसे अपनी पुत्र-वधु स्वीकार कर लिया। वहां थोड़ी देर रहने के बाद श्री रघुवीर जी 401/22 सैक्टर घर चले आए। घर आकर उन्होंने सब का मुंह मीठा करवा कर, खाना खाकर और यह शुभ समाचार घर में सब को सुना कर होशियारपुर वापिस चले गए। उन के जाने के बाद बेटे धीरेन्द्र ने अपनी प्यारी मम्मी मनोरमा तथा बहनों को भी मिस जोंजीत किमजींग से मिला दिया और आप बैंकाक चला गया। मनोरमा ने अपने इकलौते बेटे धीरेन्द्र के लिए अपनी पुत्र-वधु की अपने मन में जो तस्बीर बना रखी थी उस पर जब चोट लगी तो उस का मन डिप्रेशन में चला गया और मेरे लिए काफी मुश्किल बनाये रखी। फिर जब 'रघुनन्दन' ने होशियारपुर जा कर श्री रघुवीर जी को बताया तो उन्होंने कहा कि धीरेन्द्र बेटे को लिख दो कि ''वह अपनी शादी बैंकाक में रजिस्टर करवा ले और वक्त आने पर फिर पंचकूले के मकान में तुम दोनों की शादी की पार्टी और मकान का मुहूर्त एक साथ कर देंगे''। उनकी आज्ञानुसार धीरेन्द्र बेटे को पत्र लिख दिया और मकान की तैयारी आरम्भ करवा दी।

थाईलैंड में धीरेन्द्र बेटे के साथ हुई एक अनोखी घटना :- थाईलैंड में रहते हुए एक बार धीरेन्द्र बेटे को धन की तंगी महसूस होने लगी। तब उस ने देखा कि एक अपरिचित अंगरेज़ उस के पास आया और थाईलैंड से रेडिमेड सूती कपड़े उस के द्वारा खरीद कर अपने देश में इम्पोर्ट करने के बारे में बताने लगा। धीरेन्द्र बेटा उस अंगरेज़ को थाईलैंड की एक मशहूर रेडीमेड गारमैंटस की फैक्टरी में ले गया। उस ने वहाँ घूम कर गारमैंटस को अच्छी प्रकार देख कर धीरन्द्र को अपने देश में माल भेजने को कहा। तब धीरेन्द्र ने उस अंगरेज़ को कम्पनी की

रेटलिस्ट से दूने दाम बताए। उस के गारमेंटस के माल का आर्डर काफी अधिक था और धीरेन्द्र के पास गारमैंटस की कम्पनी को 50% अडवांस देने के पैसे भी नही थे। उस अंगरेज़ ने सारे माल की कीमत के 50% पैसे अडवांस के रूप में धीरेन्द्र को दे दिए और अपना पता लिखवा कर अपने देश चला गया। धीरेन्द्र बेटे ने उस माल की सारी अडवांस राशि कम्पनी को देकर और माल खरीद कर उसे अंगरेज़ के पते पर भेज दिया। जब उस अंगरेज़ को वहां सारा माल मिल गया तो उस ने बाकी पैसों का ड्राफट बनवा कर धीरेन्द्र बेटे को भेज दिया। इस तरह से धीरेन्द्र बेटे को आई पैसों की तंगी श्री प्रभु जी की कृपा से दूर हो गई।

पंचकूले के 281/17 मकान का उद्‌घाटन, और धीरेन्द्र बेटे की शादी की रिसैपशन :-

श्री रघुवीर जी की देख रेख में जब पंचकूले का मकान नं० 281 सैक्टर-17 बन कर तैयार हो गया तो उन्होंने मकान का उद्‌घाटन सत्संग और अपने बेटे धीरेन्द्र की शादी थाईलैंड की जोंजीत किमजींग सुपुत्री श्री हींग किमजींग बैंकाक वालों से 11 फरवरी ई सन् 1990 को करने का निश्चय किया। उस मकान का उद्‌घाटन सुबह के समय श्री प्रभु चरणों की आरती व सत्संग द्वारा आरम्भ होकर फिर शादी की रस्में थाईलैंड के सात मोंकस द्वारा बुद्धधर्म के नियमों के अनुसार बड़ी धूम धाम से सम्पन्न हुईं। शादी के बाद रिसेपशन पार्टी हुई। सब लोग हंसी खुशी के इस वातावरण के बाद दम्पत्ति जोड़े को अपना अपना आशीर्वाद देकर प्रसन्नचित्त अपने अपने घरों को चले गए। आज भी थाईलैंड में धीरेन्द्र बेटे और बेटी जोंजीत किमजींग की अपनी कम्पनी "श्री रामा एसोशियेटस्" का काम दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की कर रहा है और बेटा श्री प्रभु कृप्या से जानता है कि:-

"ALL THE GIFTS AND ACQUISITIONS ARE THE PROPERTY OF GOD AND WE ARE GOD'S "OPERATING SYSTEM" AS HIS MERE TRUSTEES".

देहली वाले चौधरी साहिब के घर में पुत्ररत्न की प्राप्ति पर अनोखी प्रभु घटना :-

अनिल बेटे की शादी बेटी अनुपम से (ई सन् 1988) देहली में होने के बाद उन की पोसटिग इटावा (U.P.) में और वहां कुछ देर काम करने के बाद फिर उन की बदली अम्बाला कैन्ट की हो गई।

एक दिन जब 'रघुनन्दन' और योगिनी बेटी होशियारपुर गए हुए थे तो श्री रघुवीर जी ने मुझे एक फूल दिया और आज्ञा दी कि आप दोनों इस फूल को लेकर सीधे अम्बाला कैन्ट जाओ और जब हमारी बेटी अनुपम अपने घर से होसपिटल जाए तो रास्ते में उसे यह पुष्प प्रशाद दे देना। हम दोनों जब अम्बाला कैन्ट पहुंचे तो स्टेशन से हम ने अनुपम बेटी को फोन किया। फोन को अनिल बेटे ने उठाया और कहा कि वह अनुपम को लेकर होसपिटल जा रहे हैं। आप रेलवे स्टेशन के पास वाले गेस्ट हाऊस के गेट पर रहें वह वहां से हम दोनों को बहुत जल्दी अपनी कार में ले लेंगे। वह लोग पाँच मिन्ट के अन्दर वहाँ आ गए। 'रघुनन्दन' ने कार में बैठते ही श्री रघुवीर जी का दिया हुआ पुष्प प्रशाद श्री प्रभु जी की बेटी अनुपम को सेवन करने के लिए दे दिया। श्री प्रभु जी के

पुष्प प्रशाद को ठीक समय पर मिला जान अनुपम बेटी का मन भर आया और उसने श्री रघुवीर जी का प्रेम भरे आंसुओं से धन्यवाद किया व प्रशाद का सेवन कर लिया। होसपिटल के डाक्टर अनुपम बेटी के लिए काफी कोशिश करते रहे कि किसी प्रकार बच्चे की डिलिवरी हो जाए। मगर ऐसा न होने पर आखिर में उन्होंने चौधरी साहिब को कहा कि अनुपम की सरजीकल डिलिवरी होगी। इस पर चौधरी साहिब ने मुझे बुला कर कहा कि डाक्टर कहते हैं कि अनुपम की सरजीकल डिलिवरी होगी। 'रघुनन्दन' ने उन को जवाब दिया कि आप चिंता न करें अनुपम की डिलिवरी बिल्कुल नोरमल होगी। वहाँ होसपिटल के डाक्टरों ने अपने सर्जन डाक्टर को उन के घर पर फोन करके बुला लिया। जब डाक्टर सर्जन होसपिटल पहुँचे तो बच्चे की डिलिवरी हो चुकी थी। यह बिल्कुल नोरमल डिलिवरी थी। चौधरी साहिब पुत्ररत्न के जन्म का सुन कर बड़े प्रसन्न हुए। हम दोनों अनुपम बेटी और चौधरी साहिब को बधाई देकर चण्डीगढ़ घर आ गये। वहाँ से फोन पर श्री रघुवीर जी को उन के बड़े नानु के बनने पर बधाई दी और होसपिटल का सारा हाल अम्बाला केन्ट से लेकर बालक के जन्म तक का उन्हें बता दिया। इस के बाद जल्दी ही बालक के नामकरण संस्कार पर हम सब बधाई देने अम्बाले आये और वहाँ के उत्सव समारोह में सब को 'आनन्द' में मग्न पाया। कैसी है यह प्रभु कृपा।

प्रभु कृपा से योगिनी बेटी का डाक्टर बनना :-

श्री प्रभु जी की अपनी प्यारी बेटी योगिनी के डाक्टर बनने की भविष्यवाणी तो श्री रघुवीर जी द्वारा ई सन् 1976 में जब वह अभी स्कूल की नरसरी क्लास में खेलती थी तब ही कर दी थी। जब योगिनी बेटी ने अपनी मैट्रिक की परीक्षा ई सन् 1987 में पास की तो श्री रघुवीर जी अपने साथ होशियारपुर से मिठाई लेकर अपनी बेटी को बधाई देने चण्डीगढ़ आए।

योगिनी बेटी ने फिर जी. सी. जी. कालेज सैक्टर-16 चण्डीगढ़ में मैडिकल कोर्स लेकर ई सन् 1989 में परी-मैडीकल की परीक्षा मैरिट पर पास करके श्री रघुवीर जी के कहने पर होमियोपैथिक मैडिकल कालेज चण्डीगढ़ में दाखिला लिया। जब पंजाब होमियोपैथिक बोर्ड चण्डीगढ़ ने सारे पंजाब के होमियोपैथिक कालेजों के पहले साल की परीक्षा समय पर नही ली और इस पहले साल की परीक्षा लेने में यदि समय अधिक लगेगा तो DHMS की सारी परीक्षाएं कब होगीं? यह सवाल चण्डीगढ़ के DHMS कर रहे सब छात्रों और उन के घर वालों के मन में था, पर उन को इस का कोई हल नज़र नहीं आता था। इन्हीं दिनों श्री रघुवीर जी चण्डीगढ़ घर आए तो उन की बेटी योगिनी ने रोते हुए यह सारी बात उन को बताई। उन्होंने 'रघुनन्दन' को बुलाकर पूछा तो उस ने जवाब दिया कि आप की बेटी बिल्कुल सत्य कह रही है। इस पर श्री रघुवीर जी ने आज्ञा दी कि ''सूद साहब! अब आप इस समस्या का स्थाई हल निकाल कर पंजाब होमियोपैथिक मैडिकल कौंसल चण्डीगढ़ और इस से जुड़े हुए चण्डीगढ़ और पंजाब के होमियोपैथिक मैडिकल कालेजों के बिगडे हुए सिस्टम को ठीक कर दें।'' उन की आज्ञानुसार 'रघुनन्दन' ने चण्डीगढ़ में ''होमियोपैथिक मैडिकल कालेज स्टूडैंटस पैरैन्टस एसोसीऐशन''

बना कर, उस की जनरलबोडी की सभा में इस का 'कौनस्टिचियशन' मंजूर करवा कर, फिर इलैकशन द्वारा दो वर्ष के लिए चुने गए इन सदस्यों की रजिस्टरड कार्यकारिणी के जनरल सैक्टरी के रूप में इन कालेजों के प्रिंसिपल, स्टाफ, पंजाब मैडिकल कौंसल के रजिस्ट्रार और पंजाब तथा सैटर गोरमिंट के ऐयुकेशन सैक्टरी की सभा बुला कर, होमियोपैथिक मैडिकल कालेजों के DHMS कोर्सों की परीक्षाओं को समय सीमा के अन्दर करवाने का फैसला लिया गया और इस की नोटिफिकेशन गवर्नमैण्ट गजट में हुई। तो फिर सारे पंजाब के होमियोपैथिक मैडिकल कालेजों की परीक्षायें हर वर्ष समय सीमा के अन्दर होनी आरम्भ हो गईं। श्री प्रभु जी की अपार कृपा से यह सारा बिगड़ा हुआ सिस्टम तथा इन कालेजों में स्टाफ और मैडिकल इक्युप्मैंट की कमी दो वर्ष के कार्यकारिणी के काल के अन्दर ही ठीक हो गई।

श्री प्रभु जी की बेटी योगिनी अपने हर साल की DHMS की परीक्षा में अच्छे नम्बरों से सदा फर्स्ट अटैम्पट में पास होती हुई सन् 1994 की फाईनल परीक्षा में सारे पंजाब और चण्डीगढ़ में दूसरे स्थान पर रही। इस की परैक्टीकल ट्रेनिंग गोरमिंट होसपिटल सैक्टर-16 चण्डीगढ़ और गोरमिंट होमियोपैथिक डिस्पेंसरी सिविल सैक्ट्रीऐट चण्डीगढ़ में हुई। श्री रघुवीर जी द्वारा योगिनी बेटी को भरपूर प्यार मिला। चण्डीगढ़ में दो साल अपनी परैक्टिस करने के बाद उसे ई सन् 1996 में द ब्रिटिश इन्स्टीच्युट आफ होम्योपैथी, लन्दन (इंगलैड)में एच एम डी में एडमिशन मिल गई। ई सन् 1998 में उस ने 80% नम्बर लेकर HMD लंदन (England) की अपनी परीक्षा पास कर ली तो सूद परिवार के सर्वेसर्वा श्री रघुवीर जी ने खुश होकर उसे हारर्दिक बधाई दी।

श्री प्रभु जी की प्यारी बेटी आराधना का जन्म :-

नई दहली में 3 जून ई सन् 1993 को श्री प्रभु जी की प्यारी बेटी आराधना का चौधरी परिवार में जन्म हुआ। आनन्द को राखी बांधने वाली सुन्दर बहन मिली तो सारे परिवार में खुशियां छा गई। श्री रघुवीर जी ने चौधरी परिवार को बहुत बहुत बधाईयां दी। आराधना के जन्म का समाचार सुन कर मनोरमा उसी समय सब को बधाई देने बेटी के पास दहली चली गईं और एक माह वहीं रहीं। उस के नानु और मासी भी बाद में पंचकूला से उस के नामकरण संस्कार पर बधाई देने दहली गए।

डाक्टर बेटी योगिनी के पंचकूला क्लीनिक का उद्‌घाटन :-

ई सन् 1999 में श्री रघुवीर जी ने जोति-जोत समाने से पहले स्वयम् बीमार बन कर अपनी डाक्टर बेटी योगिनी के पंचकूला क्लीनिक का उद्‌घाटन करते हुए उसे बड़े प्यार से कई आशीर्वाद दिए। "परदे में रहने दो, परदा न उठाओ। परदा जो उठ गया तो भेद खुल जाएगा।" श्री रघुवीर जी कुछ दिन पंचकूला घर में रहे। फिर वह परिवार सहित होशियारपुर चले गए।

इस के बाद अगले माह (अगस्त) में 'रघुनन्दन' को होशियारपुर के होसपिटल में बुलाकर उन की प्यारी डाक्टर बेटी का विवाह किसी अच्छे संस्कारी प्रोफैशनल व्यक्ति के साथ करने व रघुनन्दन को लोक कल्याणार्थ अगले कुछ वर्षो तक यहां संसार में रहने की आज्ञा प्रदान करके उसके चण्डीगढ़ लौटने के दो दिन के बाद वहां पर श्री रघुवीर जी जोति-जोत समा गए।

श्री प्रभु जी की बेटी योगिनी की शादीः– श्री रघुवीर जी की आज्ञानुसार दो वर्ष के बाद डाक्टर योगिनी को बड़ी मुश्किल से समझा कर शादी के लिए तैयार किया। उन दो सालों में वह पंचकूले क्लीनिक के साथ नई देहली में भी एक क्लीनिक चला रही थी। उस के मेट्रिमोनियल को पेपर में देकर खतोखताबत करनी आरम्भ कर दी। 28 नवम्बर ई सन् 2003 को डा० बेटी की शादी प्रो० राजीव कुमार पाठक सुपुत्र श्री जनक कुमार पाठक रंजीत एवीनियू अमृतसर वालों के साथ चण्डीगढ़ में बड़ी धूम–धाम से की गई। इस शादी में हमारे रिश्तेदारों और मित्र परिवारों के अतिरिक्त चण्डीगढ़ और पंचकूला के कई डाक्टर भी शामिल हुए। बाद में डाक्टर योगिनी बेटी के घर दो कन्याओं का जन्म हुआ जिन्हें वह अच्छे संस्कार देकर पाल रहे हैं। श्री प्रभु जी की सारे परिवार पर असीम कृपा है।

श्री प्रभु जी का 'रघुनन्दन' को बन्धन–मुक्त करनाः– श्री रघुवीर जी ने सूद परिवार के सर्वेसर्वा होने के नाते हम सब को अपना भरपूर प्यार दिया और प्रभु भक्ति के संस्कार इन तीनों बच्चों को भी प्रदान किये। इन की हर मुश्किल को आसान बना कर इन्हें अपने घर अपनी अपनी फैमिली के साथ धीरेन्द्र बेटे को बैंकाक में, अनुपम बेटी को देहली में और योगिनी बेटी को नोयडा में राजी खुशी रख कर बड़ा उपकार किया। श्री रघुवीर जी ने 'रघुनन्दन' के तीन बड़े सस्कारों को अपने सामने भुकत्वा कर उस को बन्धन मुक्त करने की भी अपार करुणा कृपा की। तथा मनोरमा के संकटों को भी अपनी करुणा कृपा से दूर किया। यह कैसी कृपा लीला है श्री प्रभु जी की। श्री प्रभु जी आप की जय हो।

श्री प्रभु जी की कृपा द्वारा 'मनोरमा' के संस्कारों का भुगतानः– ई०सन् 2009 से 'मनोरमा' के पेट में काफी दर्द रहने लगा जिस के कारण उसे कई बार रातों को पंचकूले के सरकारी होसपिटल की एमरजेन्सी में ले जाना पड़ता था। जब पंचकूले व चन्डीगढ़ के डाक्टरों द्वारा काफी इलाज करवाने पर भी 'मनोरमा' के पेट दर्द में कोई फरक नहीं पड़ा तो बेटे अनिल और बेटी अनुपम ने सलाह करके अपनी ममी जी का देहली के किसी अच्छे होसपिटल द्वारा इन्वस्टिगेशन और इलाज करवाने का विचार कर वह अपनी कार में हम दोनों को अपने साथ पंचकूले से देहली ले गए।

कुछ दिनों के बाद 'मनोरमा' के पेट दर्द होने पर उन्होंने सफदर जंग एनक्लेव नई देहली के एक अच्छे प्राइवेट होसपिटल में इन्वस्टिगेशन व इलाज के लिए अपनी ममी जी को दाखिल करवा दिया। वहाँ इलाज चलता रहा मगर डाक्टरों को 'मनोरमा' के पेट दर्द के कारण का पता न चल सका। तो फिर डा० बेटी योगिनी ने अपनी ममी जी को 'नोयड़ा' के मशहूर ''कैलाश इन्टरनेशनल होसपिटल'' में दाखिल करवा कर मेडिकल इन्वस्टिगेशन और इलाज करवाया मगर वहाँ के डाक्टरों को भी 'मनोरमा' के पेट दर्द के कारण का पता न चल सका।

ई०सन् – 2011 के जून मास में धीरेन्द्र बेटे ने अपनी ममी जी के पेट दर्द की इन्वस्टिगेशन व इलाज करवाने के लिए हमें अपने पास बेंकाक बुला लिया। भारत से बेंकाक आने के दूसरे दिन 'मनोरमा' के पेट में जब दर्द उठा तो बेटे धीरेन्द्र ने उसी समय अपनी कार में हमें वहाँ के सब से बड़े और सारी दुनियां में नम्बर तीन पर मशहूर होसपिटल की एमरजेन्सी में ले जा कर अपनी ममी जी को वहाँ दाखिल करवा दिया। रिसैप्शन पर खड़े

डाक्टरों ने 'मनोरमा' की सारी Case History तथा भारत के सभी होसपिटलों की medical reports को अपने computer पर enter कर लिया और उधर इमरजेन्सी department के अन्दर मनोरमा की पूरी इन्वस्टिगेशन डाक्टरों की पूरी team आधुनिक मशीनों द्वारा कर रही थी। यह सारी Informations वहाँ के Master Computer में store हो रही थीं। फिर वहां के Incharge Doctor Surgen ने बेटे धीरेन्द्र को आधे घन्टे के अन्दर बताया कि ई०सन् 2000 में जब 'मनोरमा' के Gallbladder का PGI चन्ड़ीगढ़ में operation हुआ था तो वहाँ के डाक्टर की कैंची 'मनोरमा' की Intestines को touch करने से वहाँ पर निशान पड़ गया था मगर Intestine को कोई cut नहीं लगा था। फिर समय के साथ-साथ उस पर fat जमा होता चला गया। इस समय लगभग 6" intestines पूरी तरह से infected है जिसे काट कर join करना होगा। बेटे धीरेन्द्र द्वारा ओपरेशन फार्म भरने पर उस की ममी जी का ओपरेशन आरम्भ हो गया। यह 3 घन्टे चला। बाद में 'मनोरमा' को उन के वार्ड रूम में भेज दिया गया। 'मनोरमा' के होसपिटल दाखिल होने पर देहली से अनुपम बेटी अपनी ममी जी की देखभाल करने पूरे 3 माह बेंकाक रहीं। 'मनोरमा' के वार्डरूम में हर रोज़ 8 डाक्टर सुभा और फिर शाम को चक्कर लगा कर मरीज की progress को check करते और अपनी अपनी findings और दवाई आदि हर visit के बाद वार्ड़ के computer पर enter कर देते तो बाद में वार्ड Nurses डाक्टरों की Instructions के अनुसार follow up करके computer पर enter कर देती थीं। हम लोग एक माह होसपिटल रहे और फिर अगले तीन माह हर रोज़ घर से अपने डाक्टर द्वारा 'मनोरमा' के open wound की सफाई करवाने होसपिटल जाते रहे। जब यह open wound अपने आप लगभग जुड़ गया तो डाक्टर ने check करके बाहिर पेट पर कुछ टांके लगा दिये और हमें पूरी छुट्टी दे दी। हम सब ने श्री प्रभु जी का धन्यवाद किया जिन की अपार करुणा कृपा ने 'मनोरमा' के संस्कारों का भुगतान करवा कर उसे नया जीवन प्रदान किया। श्री प्रभु जी केवल भाव के भुखे है जैसे:-

भाव के भूखे हैं भगवन, भाव ही बस सार है।
भाव से इन को भजें तो, भव से बेड़ा पार है।। भाव के भूखे......................
अन्न, धन और वस्त्र, भूषण, कुछ न इनको चाहिए।
तू बने इन का यही, पूर्ण इन्हें सत्कार है।। भाव के भूखे......................
भाव बिन सब कुछ भी दे डाले तो ये लेते नहीं।
भाव से इक फूल भी दें, तो इन्हें स्वीकार है।। भाव के भूखे......................
भाव बिन सूनी पुकारे, ये कभी सुनते नहीं।
भाव पूर्ण टेर ही, करती इन्हें लाचार है।। भाव के भूखे......................
भाव जिस जन में नहीं, उस की इन्हें चिंता नही।
भाव वाले भक्त का, भरपूर इन पर भार है।। भाव के भूखे......................
जो प्रभु में भाव रख कर, और लेते हैं शरण।
उन के और प्रभु के ह्रदय में, एक रहता तार है।। भाव के भूखे......................
बांध लेते हैं भक्त, इन को कड़ी जंजीर से।
इस लिए इस भूमि पर, लेते प्रभु अवतार हैं।। भाव के भूखे......................

योगेश्वर प्रभु श्री रामलाल जी महाराज की अद्‌भुत दिव्य-जीवन गाथा

प्राक्कथनः- श्री प्रभु जी की प्रेरणा से 'रघुनन्दन' ने यह प्रभु कार्य उन की अपार करूणा कृपा से द्रविभूत होकार लोक कल्याणार्थ सम्पन्न करके इसे प्रभु श्री राम लाल जी महाराज के अमृतसर जन्म स्थान को ई०सन् 2008 में श्री रामनवमी की पवित्र वेला पर e-book के रूप में समर्प्ति किया था। इस का प्रचार प्रसार संसार के सब भक्त समाज में Free Website : wwwsriramalenze.com द्वारा हुआ। भक्तों के हितार्थ इस का मनोरमा जी द्वारा प्राक्कथन इस प्रकार से है। श्रीमद्‌भगवद् गीता में योगेश्वर भगवान श्री कृष्णचन्द्र जी महाराज ने स्वयं श्री मुख से उद्‌घोष किया है कि- हे अर्जुन :-

''यदा यदा ही धर्मस्य, ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य,तदात्मानं सृजाम्यहम''।।

अर्थात् :- जब-जब (लोगों की) धर्म में अरुचि और अधर्म में रुचि बढ़ जाती है, तब-तब मैं स्वयं अपने (प्रकृति) रूप की रचना करता हूँ।

भारत देश की ऋषि सन्तानों को नास्तिकता और भोग विलास आदि अधर्माचारण में फँसी देख, उन के कल्याणार्थ व प्रभु दर्शन अभिलाषी संस्कारी आत्माओं को अपनी दिव्य और चमत्कारिक लीलाओं द्वारा परमानन्द प्रदान करने हेतु, अनादि सिद्ध परब्रह्म परमात्मा स्वयं योग योगेश्वर श्री सद्‌गुरुदेव पं० रामलाल जी महाराज के रूप में ई० सन् 1888 में अमृतसर नगर (पंजाब) में पूज्य पाद ज्योतिविंद पंडित गंडा राम जी के घर में माता भागवन्ती जी के गर्भ से प्रकट हुए। इन में जन्म-जात सिद्धियों का वास था। जब यह तीन वर्ष के ही थे तो इनके दर्शन मात्र से एक मरणासन्न वृद्धा स्त्री मृत्युशय्या से उठ बैठी और उस ने पूर्ण स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया। आठ वर्ष की आयु थी तो एक सिद्ध महात्मा ने इन के नन्हें रूप में ईश्वरीय दर्शनों का लाभ प्राप्त किया। इन्होंने सम्पूर्ण शास्त्रों का ज्ञानार्जन 14 वर्ष की अल्प आयु में ही प्राप्त कर लिया था।

श्री प्रभु रामलालजी महाराज छोटी अवस्था से ही पूर्ण सद्‌गुरु की खोज में लग गये और वे हरिद्वार, ऋषिकेश आदि स्थलों में इसी उद्‌देश्य से पधारे। घर लौटने पर इन के माता पिता ने इन के विरक्त भाव को देख कर इन का विवाह पंद्रह वर्ष की आयु में ही कर दिया, परन्तु श्री प्रभु जी को यह बन्धन प्रभावित न कर सका।

ई० सन् 1907 में पं० श्री गंडाराम जी के देहावसान के बाद, श्री प्रभु जी पूर्ण सद्‌गुरु की खोज का दृढ़ संकल्प धारण कर घर छोड़ कर चले गये। सर्वप्रथम इन्होंने ऋषिकेश, ब्रह्मपुरी, हरिद्वार, काठगोदाम, मुरादाबाद,

वनतीर्थवन, जसपुर, अयोध्या, मथुरा, संवाई, काशी, गया, बलिया आदि स्थानों में पदार्पण किया। जसपुर ग्राम में एक कुम्हार बालक को खेचरी की सिद्धि प्रदान की। अयोध्या में दुखिया अवधूतानी शलमा को दिव्य समाधि का दान दिया तथा काशी में भगवान् शंकर की पूजा करने जा रही एक संस्कारी देवी पर दिव्य कृपा की। गया जी में वाममार्गियों को योग मार्ग में लगाया।

फिर श्री प्रभु रामलाल जी महाराज 'गया जी' से दक्षिण दिशा में बलिया गये और वहाँ से नर्मदा नदी के साथ-साथ पश्चिम की ओर चले। उस समय इन के साथ शिष्य रूप में एक बड़ी साधु मण्डली भी थी। जनपद ग्राम (बलिया) के एक ब्राह्मण बालक हरिराम (हरिहरानन्द) की भक्ति, दानशीलता और शूरवीरता पर प्रसन्न हो, उसे योग की उच्च स्थिति तथा योग सिद्धियों का दान प्रदान कर साधु मण्डली का प्रधान बना दिया। इस यात्रा पर श्री प्रभु जी ने अपनी अलौकिक शक्ति से कई भूतग्रस्त स्थानों की शुद्धि द्वारा लोक कल्याण किया। बहुत से तपोनिष्ठ महात्माओं को दर्शन दिये। इसी प्रसिद्ध यात्रा के मध्य दूसरे दिव्य योग शरीर की रचना कर, नासिक नगरी में योग शरीर द्वारा योग प्रचार और संस्कारी भक्तो को शरण प्रदान कर फिर इस योग शरीर को नासिक में त्याग कर दूसरे शरीर से उत्तर की ओर शिष्यमण्डली सहित चल कर पुष्करराज महातीर्थ में पहुंचे।

वहाँ से फिर संस्करी जीवों के कल्याणार्थ पूर्व दिशा की लंबी यात्रा के द्वारा पटना पधारे। वहाँ पर श्याम नारायण वकील को शरण प्रदान कर, एक निर्दोष ब्राह्मण बालक को फांसी के दण्ड से मुक्त करवाया। फिर हरिहरराय जज पर कृपा कर और हरनाम दास तपस्वी को सिपाहियों के चंगुल से छुड़ा कर योग समाधि का दान दिया। पटना से श्री प्रभु जी मण्डली के साथ बंग-बिहार सीमा जमुनियाँ घाट के समीप चम्पारण पधारे। वहाँ पर इन्होंने एक कुसंग-ग्रस्ता लड़की रामरती को सन्मार्ग पर लगाया और योग समाधि का दान प्रदान कर उसे जगत्पूज्या बना दिया। तत्पश्चात् बंगाल देश पधारे।

बंग देश में आशुतोष चटर्जी नामक जज और उस की धर्मपत्नी रामा की सेवा पर प्रसन्न होकर उन्हें शरण प्रदान कर, रामा को योग की उच्चस्थिति का दान प्रदान किया। बंग देश से श्री प्रभु जी गोहाटी (वर्त्तमान गोवाहाटी) पधारे। गोहाटी की अवधूतानी पर कृपा कर सारी साधु मण्डली को गोहाटी में छोड़ कर मुखराम और कृष्णानन्द को साथ लेकर आसाम देश के भयंकर वनों, जंगली हाथियों, नर संहारी मनुष्यों और भयंकर वन पशुओं से संकीर्ण स्थलों में से होते हुए ब्रह्मपुत्र नदी को पार कर ''मय'' नामक ग्राम में राजा रणसिंह को शरण प्रदान कर वहां के सिद्ध योगीगुरु से मिले।

वहाँ से गोहाटी वापिस आकर, सारी साधु मण्डली के साथ श्री प्रभु जी ने नेपाल की यात्रा की। नेपाल के राजपरिवार पर अनुग्रह कर तथा मण्डली को त्याग कर व हरिहरानन्द को समाधिस्थ कर, अकेले ही दूर उत्तर की ओर चल पड़े और महाप्रभु भगवान सदाशिव महाराज जी के श्री चरणों में, प्रभु श्री रामलाल जी ने

आत्मनिवेदन किया और पास की झाड़ी के नीचे जाकर सो गए।

महाप्रभु भगवान सदाशिव स्वयं प्रभु श्री रामलाल जी को लेने के लिए सुमेरु पर्वत से वहाँ पधारे और श्री प्रभु जी को वे अपने साथ आकाश मार्ग से अपनी परमपावनी अगम्य गुफा में ले गये। वहाँ पर श्री प्रभु रामलाल जी ने श्री महाप्रभु जी से कुछ वर्षों तक योग की पूर्ण शिक्षा मर्यादा रूप से प्राप्त कर और उन की आज्ञा को शिरोधार्य कर सुमेरू पर्वत से ई० सन् 1911 में आकाश-मार्ग द्वारा बस्तियों में पदार्पण किया।

लगभग दो साल बाद, जब श्री प्रभु जी हिमालय से लौट कर किसी गाड़ी में जमुनियाँ घाट की तरफ से निकल रहे थे, तो यह सब रामरती पहले ही ध्यान में देख कर समाधिस्थ अवस्था में बोल उठी और अपने पास वाले लोगों से उस ने कहा- ''अरे! जाओ स्टेशन भाग जाओ, इस गाड़ी में परम कृपासागर मेरे गुरुदेव श्री प्रभु जी आ रहे हैं। उन को जल्दी से लिवालाओ, ताकि मैं आँखें खोल कर उन के दर्शन कर अपने जीवन को सफल बना लूँ।'' वहाँ कुछ दिन रहने के पश्चात् श्री प्रभु जी संवाई (आगरा) पधारे।

संवाई के इस द्वितीय पदार्पण पर श्री प्रभु जी ने स्वरचित '**जीवन तत्व साधन**' नामक क्रियाओं द्वारा वहाँ के लोगों के दुखों को दूर कर, संवाई के अधिकारी वर्ग को शरण प्रदान कर, दिव्य ध्यान समाधि के दान का प्रवाह प्रवाहित कर, वहां अनन्त दिव्य लीलायें की। फिर ई० सन् 1913 में सिद्धगुफा संवाई (आगरा) से आकाश गमन कर हरिद्वार, ऋषिकेश आदि स्थानों पर पदार्पण कर योग प्रचार करने लगे।

ई० सन् 1915 के हरिद्वार कुम्भ पर इन के परिवार वालों ने इन्हें पहचान लिया और अपने साथ अमृतसर ले लाये। वहां सभी को आठ वर्ष बाद इन के मिलाप पर परम आनन्द प्राप्त हुआ। अब श्री प्रभु जी वनखण्डी रूप (जटाधारी) को छोड़कर विप्रवेश में रहने लगे। योग योगेश्वर प्रभु ने एक साधारण गृहस्थी के रूप में अमृतसर रहते हुए लोक कल्याण के तीन महान कार्य किये जो समाज के पूर्ण स्वास्थ्य लाभ तथा आत्मोत्थान के लिये थे। सर्वप्रथम इन्होंने रोगों की निवृत्ति के लिये 'जीवन तत्व साधन' का समाज में प्रचार किया। दूसरे, योग की क्रियाओं को नि:शुल्क जन सामान्य तक पहुंचाने के लिए 'योग साधन आश्रमों' की स्थापना की। तीसरा अनुपम कार्य श्री आनन्दकन्द प्रभु जी ने, तीव्र शक्तिपात द्वारा कुण्डलिनी जागरण और शरण में आने वाले श्री हरिहरानन्द, रामरत्ती, रामा चटर्जी, अवधूतानि गोहाटी, राजा रण सिंह, ब्रह्मचारी गोपालानन्द जी, महन्त बालकृष्ण जी, महात्मा ऋषिदेवी, अबोध बालक घुग्घू, श्री मुलखराज जी, बहन द्रौपदी देवी, मैडुं मल्लाह, श्री चन्द्रमोहन जी, श्री नरसिंह मूर्ति जी, भक्त नारायण दास जी, श्री कृष्णानन्द जी, भक्त अमरनाथ जी, श्री बिहारी लाल जी, श्री माधोराम जी, श्री श्याम लाल खन्ना, श्री नन्दलाल जी आदि अनेक संस्कारी जीवों को दिव्य समाधि का दान प्रदान कर उनके अलौकिक अनुभवों द्वारा सिद्धयोग की परम्परा को स्थापित किया।

श्री मुलखराज जी का जीवन सद्गुरुदेव योग योगेश्वर प्रभु श्री रामलाल जी महाराज की चरण-शरण

(ई० सन् 1921) में आने के बाद एकदम अलौकिक बन गया और वे 10 वर्षों तक लगातार तुरीय स्थिति में रहे। श्री आनन्दकन्द प्रभु जी ने उन्हें अपना स्वरूप बना कर ई० सन् 1938 में अपने स्थान पर प्रतिष्ठित कर दिया। श्री प्रभु रामलाल जी महाराज ने स्वयं श्री महाप्रभु भगवान सदा शिव जी के आदेश अनुसार सुमेरु पर्वत पर पुन: 51 वर्ष की आयु में जाते समय श्री मुलखराज जी को 12 जुलाई ई० सन् 1938 (मंगलवार) व्यासपूजा के अवसर पर एक दिव्य संदेश दिया और अपने प्राकृत शरीर में 20 दिन के लिये अपने प्राण-कोश छोड़ कर दूसरे योग दिव्य शरीर से हिमालय प्रस्थान कर गये। बीसवें दिन (31 जुलाई ई० सन् 1938) को योगेश्वर प्रभु रामलाल जी महाराज ने अपने प्राकृत शरीर से अपने प्राण कोश को खींच कर इसे भी छोड़ दिया। रात दो-बजे के बाद श्री प्रभु जी ने अपना भौतिक शरीर छोड़ा, उस समय इन के तीन शिष्य-श्री मुलखराज जी, श्री चन्द्रमोहन जी तथा द्रौपदी बहन जी इन के पास थे। श्री प्रभु जी ने उन्हें कहा - ''मांगो, जिस को जो मांगना हो'' सभी ने कृपा की याचना की। श्री प्रभु जी ने सभी के सिर पर हाथ रख कर उन्हें आशीर्वाद दिया और लगभग रात दो बजे सो जाने की आज्ञा दी। प्रात: चार बजे जब भक्त शिष्य उठे तो उन्होंने देखा कि श्री प्रभु जी महाराज अपना प्राणकोश वाला भौतिक शरीर छोड़ चुके थे। सभी भक्तों को यथासंभव सूचना दी गई। वहाँ अगले दिन दोपहर तक लगातार संकीर्तन चलता रहा। उस समय सब भक्तों ने वहाँ तीन अलौकिक व अद्‌भुत घटनायें सुनी, फिर श्री प्रभु जी के दिव्य शरीर को विशाल विमान पर विराजमान करवाकर सारे अमृतसर में संकीर्तन करते हुए विशाल यात्रा निकाली गई और उन के भौतिक शरीर का अन्तिम संस्कार किया गया।

आनन्दकन्द योगयोगेश्वर प्रभु श्री रामलाल जी महाराज आज भी अपने मूल योगमय शरीर से हिमालय में विराजमान हैं और भक्तों को संकटों से बचाते रहते हैं। आशा है कि श्रद्धालु भक्त समाज करुणावतार श्री प्रभु जी की इस ''अद्‌भुत दिव्य गाथा'' में वर्णित उन की अपार कृपा लीलाओं के पठन, पाठन, श्रवण व मनन द्वारा सदैव लभान्वित होते रहेंगे और श्री प्रभु जी का श्रद्धापूर्वक स्मरण करने से उन पर करुणासागर श्री प्रभु जी की कृपा सदा बनी रहेगी।

अद्‌भुत दिव्य-जीवन गाथा (श्रीमद्‌भगवद् गीता सहित) अडीशन-2 :-योग योगेश्वर प्रभु श्री रामलाल जी महाराज का अद्‌भूत दिव्य-जीवन तथा उन के शरणागत भक्तों का जीवन व उनके आध्यात्मिक अनुभवों पर आधारित ''अद्‌भुत दिव्य जीवन गाथा पहली वार ई०सन् 2008 में श्री रामनवमी पर्व पर श्री प्रभु राम लाल जी महाराज के जन्मस्थान 764/x-4 कटरा व कूचा भाई संत सिंह समीप हिन्दु कालेज, अमृतसर (पंजाब) [Ph. 0183-2532058] से प्रकाशित हुआ था। उस के गत पाँच वर्षों में कई प्रभु प्रेमी भाई बहनों ने इस को बड़े प्यार से पढ़ा और अपने सुझाव फोन द्वारा दिये जिन के अन्तर्गत ''अद्‌भुत दिव्य-जीवन गाथा

श्रीमद्भगवद् गीता (हिन्दी) सहित संस्करण-2 श्री प्रभु रामलाल जी महाराज जी के 125 अवतार दिवस श्री रामनवमी पर्व दिनांक 20.4.2013 पर श्री प्रभु जी के जन्म स्थान अमृतसर से e-book के रूप में प्रकाशित हुआ जो Website- www.slideshare.net/raghunandanlalsood/book-divya-jivan-gatha-edition-2 अथवा website: www. sriramalenze.com अथवा www. divyaleela.com पर उपलब्ध है। आप इस website को अपने Internet वाले computer अथवा मोबाईल फोन पर खोल कर और photo पर click करके पढ़ या free download भी कर सकते हैं। शेष प्रभु कृपा।

भगवान् का साक्षात्कार कैसे हो ?

भगवान् का साक्षात्कार केवल उन की करुणा कृपा द्वारा ही सम्भव है। उन की कृपा प्राप्त करने के लिए विकट व्याकुलता, हृदय में पूर्ण श्रद्धा और विश्वास तथा मन के सरल और निश्छल भावों द्वारा किसी क्षोत्रीय ब्रह्मनिष्ठ की शरणागती हो तो श्री प्रभु जी स्वतः ही प्रकट हो कर अपने दर्शनों से कृतार्थ कर देंगे।

एक बार भक्त राम देव जी गंगा तट पर घूम रहे थे कि एक भक्त उन के पास आया और उन से पूछा कि उसे भगवत्प्राप्ति कैसे हो सकती है? भक्त जी उसे तुरंत गंगा जी के जल के अन्दर ले गए और उन्होंने उसे थोड़े समय के लिए जल में डुबोय रखा। इस से जब वह छटपटाने लगा तो बाहर निकाला और उस से पूछा, ''जल के अंदर तुम्हें कैसा लग रहा था? भक्त बोला, महाराज जी मुझे ऐसा लग रहा था, मानों मेरा अंतिम समय आ गया है।'' इस पर राम देव जी बोले, ''बस जिस क्षण तुम अपने हृदय में पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ इस संसार रूपी जल से बाहर निकल कर अपने प्रियतम श्री प्रभु जी से मिलने के लिए इसी प्रकार सच्चे मन से व्याकुल हो उठोगे तो तुम्हें भगवत्प्राप्ति हो जाएगी।''

भगवान श्री राम, भक्तों की निशानी बताते हुए कहते हैं कि-

''निश्छल मन जेहि सो मोहि पावा। मोहि कपट छल छिद्र न भावा।।''

''जिस का मन सरल है, निश्छल है छोटे बच्चे की तरह उसे मैं प्राप्त हो जाता हूँ। मुझे छल-कपट नहीं चाहिए। मुझे सोना-चांदी नही चाहिए। बस, तुम श्रद्धा और विश्वास के चंद पुष्प ही अगर प्रेम से अर्पण कर दो तो मेरे लिए वही बहुत है।'' जिस ईश्वर ने इस सृष्टि का निर्माण किया हो उस के पास भला किस चीज की कमी हो सकती है। उसे तो भेंट या चढ़ावा नहीं, उस के पीछे छिपी भावना से सरोकार है। उसे तो केवल प्रेम की प्यास है और भाव की भूख है।

जिस ने किसी क्षोत्रीय ब्रह्मनिष्ठ गुरूदेव की शरणागती के द्वारा यह रहस्य जान लिया वह श्री प्रभु जी के चरणों के निकट होता चला जाता है। उस की रक्षा का भार फिर स्वयम् श्री प्रभु जी अपनी करुणा कृपा से उठाते हैं। जिस का रखवाला स्वयं परम् समर्थवान परमात्मा है, उस को फिर कौन सा डर? श्री प्रभु जी उसे मीरा व प्रहलाद की तरह अपनी भक्ति रूपी प्रेम के रस में सराबोर कर उस के जीवन में आनंद ही आनंद भर देते हैं।

भजनः-

अगर प्रीतम को पाना है, तो मन मन्दिर सजा पहले।
खुदा खुद आएगा चलकर, खुदी को तो मिटा पहले।।
बहुत पूजा हवन कीते, बहुत की बंदगी तूने।
मगर उस के ही बन्दों से, सदा नफरत जो की तूने।।
तू अपने आप को बन्दे, जरा बन्दा बना पहले।।।
अगर प्रीतम को पाना है........
न धन्ने, भीलनी, सदने, की कोई जात ऊंची थी।
प्रभु पाने की मन में तड़फ, और वह चाह सच्ची थी।।
अगर उस को बुलानां है, लगन सच्ची लगा पहले।।।
अगर प्रीतम को पाना है........
कसर है तेरी आंखों में, न दिखने में उसे कोई।
वो दिखता है अगर ऐसी, निगाह पैदा करे कोई।।
तू खुद को **योग साधन** से, इसे काबिल बना पहले।।।
अगर प्रीतम को पाना है........